3 राजधानी
मालीवाल प्रकरण पर माफी मांगें केजरीवाल-सीतारमण

6 अभिमत
राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सोने की भूमिका

10 राष्ट्रीय
आतंकवाद उन्हें ही निगल रहा जो इसका सहारा लेते हैं:जयशंकर

11 विदेश
नरसंहार के आरोपों का जवाब देगा इजराइल

RNI NO.DELHIN/2012/48369
वर्ष 12 अंक 189
नई दिल्ली, शनिवार, 18 मई, 2024
पृष्ठ 12 मूल्य ₹ 3
नगर संस्करण

नई दिल्ली, लखनऊ और रायपुर से प्रकाशित

पायनियर

www.dailypioneer.com

मनु का ओलंपिक ट्रायल में दबदबा बरकरार

स्पोर्ट्स-12

मालीवाल ने बयां की आपबीती

एफआईआर के मुताबिक मारपीट, दुर्व्यवहार, धमकी दी गई

सौम्या शुक्ला। नई दिल्ली

नई दिल्ली में आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सांसद सिविल लाइंस स्थित दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास से निकलते हुए।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सचिव बिभव कुमार के खिलाफ आप नेता और राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल द्वारा दर्ज की गई प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) में हमले का चौंकाने वाला विवरण सामने आया है। मालीवाल ने आरोप लगाया कि केजरीवाल के सहयोगी बिभव कुमार ने उन्हें कम से कम सात से आठ बार थप्पड़ मारा, जबकि वह चिल्लाती रहीं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि उन्हें बेरहमी से घसीटा, छाती, पेट और श्रोणि क्षेत्र पर लातें मारीं और गंभीर परिणाम की धमकी दी। जब मैंने हमले के बाद 112 (आपातकालीन नंबर) पर कॉल किया तो विभव ने कहा कि तुम्हें जो करना है वह करो। तुम हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। एफआईआर में मालीवाल ने कहा है कि उन्हें ऐसी जगह दफनाने की धमकी दी गई, जहां उन्हें कोई खोज नहीं पाएगा।

संबंधित घटनाक्रम में मालीवाल अपने ऊपर हुए कथित हमले के बारे में मजिस्ट्रेट के सामने अपना बयान दर्ज कराने के लिए शुक्रवार को तीस हजारी अदालत गई थीं। मेट्रोपॉलिटन मजिस्ट्रेट कात्यायिनी शर्मा कंडवाल ने अपने कक्ष में मालीवाल का बयान दर्ज किया। सीआरपीसी की धारा 164 के तहत, एक न्यायिक मजिस्ट्रेट को जांच के दौरान उसके सामने दिए गए किसी भी बयान या कबूलनामे को रिकॉर्ड करने का अधिकार है।

मेडिको-लीगल केस रिपोर्ट में यह भी पुष्टि हुई कि उनके चेहरे पर अंदरुनी चोटें आई हैं। मालीवाल की शुक्रवार तड़के एम्स दिल्ली में चार घंटे तक चिकित्सा जांच की गई। दिल्ली पुलिस की एक टीम रात करीब 11 बजे आप सांसद को लेकर एम्स पहुंची और करीब 03.15 बजे वहां से निकली। दिल्ली महिला आयोग (एनसीडब्ल्यू) की सदस्य वंदना सिंह भी स्वाति मालीवाल के साथ थीं। इस मेडिकल जांच के दौरान एक्स-रे और सीटी स्कैन किया गया।

एफआईआर के मुताबिक, 13 मई को मालीवाल केजरीवाल के सिविल लाइंस स्थित आवास पर उनके कैंप कार्यालय गईं, जहां उन्होंने कुमार को फोन किया और मैसेज किया, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका। वह ड्राइंग रूम में सीएम का इंतजार कर रही थी, कुमार अचानक अंदर घुस आए, बिना उकसावे के उस पर चिल्लाए और उनके साथ दुर्व्यवहार किया। घटना के तीन दिन बाद गुरुवार को दर्ज की गई मालीवाल की शिकायत पर आधारित एफआईआर में कहा गया है कि चूंकि कुमार सीएम के घर पर मौजूद नहीं थे, इसलिए वह मुख्य दरवाजे से आवासीय क्षेत्र के अंदर चली गईं, जैसा कि वह पिछले साल हमेशा करती रही हैं और सीएम के स्टाफ को बताया कि वह उनसे मिलने के लिए वहां आई थीं। एफआईआर में लिखा है, मैं कैंप ऑफिस के अंदर गई और सीएम के पीएस बिभव कुमार को फोन किया, लेकिन मैं अंदर नहीं जा सकी। फिर मैंने उनके मोबाइल नंबर पर (व्हाट्सएप के माध्यम से) एक संदेश भेजा। हालाँकि, कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

उन्होंने कहा कि एक स्टाफ सदस्य ने मुझे बताया कि सीएम कुछ ही देर में मुझसे (शेष पेज 9)

ईडी ने केजरीवाल के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया, आप भी नामजद

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

प्रवर्तन निदेशालय ने कथित आबाकारी नीति घोटाले से जुड़े धन शोधन मामले में शुक्रवार को दिल्ली मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के खिलाफ आरोप पत्र दायर किया है। साथ ही आम आदमी पार्टी को भी नामजद किया है। यह पहली बार है जब पदस्थ मुख्यमंत्री और सत्तारूढ़ पार्टी को धनशोधन के मामले में नामजद किया गया है।

सूत्रों ने बताया कि यहां एक विशेष अदालत के समक्ष एक विस्तृत अभियोजन शिकायत दाखिल की गई। विशेष न्यायाधीश कावेरी बावेजा आने वाले दिनों में अनुलग्नक के अलावा 200 पृष्ठों के आरोप पत्र पर संज्ञान ले सकती हैं। उन्होंने बताया कि यहां कि एजेंसी ने विशेष अदालत में अभियोजन शिकायत (आरोप पत्र) दाखिल की और आरोपी के खिलाफ धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत आरोप तय करने का अनुरोध किया। संघीय एजेंसी ने आप के राष्ट्रीय संयोजक 55 वर्षीय केजरीवाल को 21 मार्च को उनके आवास से गिरफ्तार किया था और इस समय वह अंतरिम जमानत पर जेल से बाहर हैं। इस मामले में ईडी द्वारा दाखिल यह आठवां आरोप पत्र है और वह अबतक 18 लोगों को गिरफ्तार कर (शेष पेज 9)

कांग्रेस आई तो राममंदिर पर चलवा देगी बुलडोजर: मोदी

बोले मोदी, कहां चलाना है बुलडोजर, योगी से ट्यूशन ले कांग्रेस-सपा

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ बाराबंकी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस और इंडी गठबंधन पर बड़ा हमला बोलते हुए कहा है कि अगर कांग्रेस आई तो राममंदिर पर सुप्रीम कोर्ट का फैसला बदल देगी। उन्होंने कहा कि कांग्रेस राममंदिर पर बुलडोजर चलवा देगी। प्रधानमंत्री ने इंडी गठबंधन को नसीहत भी दी कि उन्हें योगी जी से ट्यूशन लेना चाहिए कि कहां बुलडोजर चलाना है और कहां नहीं। पीएम मोदी शुक्रवार को यहां जैदपुर मार्ग के समीप विशाल चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आपके एक वोट की ताकत ने 500 साल के इंतजार को खत्म करके भव्य राममंदिर में श्रीरामलला को विराजमान कराया। कहा कि पहले जब लोग रामलला को टेंट में देखते थे तो सरकार को भद्दी भद्दी गालियां देते थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि योगी जी के ओडीओपी मिशन से अब मुझे विदेश जाते वक्त गिफ्ट लेने के लिए चिंता नहीं करनी पड़ती। उन्होंने (शेष पेज 9)

जनता-जनार्दन चुनाव परिणाम को लेकर पहले से आश्वस्त, जीतेंगे तो मोदी ही: योगी

लखनऊ/ बाराबंकी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि देश में अब तक चार चरणों के चुनाव संपन्न हो चुके हैं जबकि तीन चरण बाकी हैं। इसके बावजूद पूरे देश की जनता जनार्दन 4 जून के परिणाम को लेकर पहले से ही आश्वस्त है। वह जानते हैं कि इस बार भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ही जीत होगी। यही वजह है कि पूरे देश में एक बार फिर मोदी सरकार और अबकी बार 400 पार का नारा गूंज रहा है। यह उद्घोष अब जनघोष बन गया है। यह पूरे देश में कांग्रेस और इंडी गठबंधन के विभाजनकारी तुष्टीकरण और अराजकता की नीतियों के खिलाफ देश की आम जनमानस की उद्घोषणा का शंखनाद है।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को बाराबंकी लोकसभा के जैदपुर मार्ग पर एक जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी मौजूद रहे। सीएम योगी ने बाराबंकी की लोकसभा प्रत्याशी राजरानी रावत और मोहनलालगंज के लोकसभा प्रत्याशी केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर के पक्ष में वोट की अपील की। साथ ही, उन्होंने अवध प्रांत के देवाधिदेव महादेव की धरती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत भी किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक भारत श्रेष्ठ भारत, आत्मनिर्भर और विकसित भारत की संकल्पना की विजय का अबकी बार 400 पार का नारा एक नया उद्घोष भी है। उन्होंने महादेवा और सिद्धेश्वर महादेव की धरती पर भारत की सांस्कृतिक नवजागरण के पुरोधा, एक भारत श्रेष्ठ भारत के शिल्पी, दुनिया के सबसे लोकप्रिय राजनेता और देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का बाराबंकी की जनता की ओर से हृदय से स्वागत किया।

रायबरेली में कांग्रेस नेता और पार्टी उम्मीदवार राहुल गांधी के साथ पार्टी नेता सोनिया गांधई और प्रियंका गाधी तथा समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव।

रायबरेली में बोलीं सोनिया गांधी अपना बेटा सौंप रही हूं

पायनियर समाचार सेवा। रायबरेली/अमेठी

आगामी लोकसभा चुनाव में अपनी पहली सार्वजनिक रैली में पूर्व कांग्रेस प्रमुख सोनिया गांधी ने शुक्रवार को रायबरेली लोकसभा क्षेत्र के मतदाताओं के साथ भावनात्मक जुड़ाव बनाने का प्रयास किया और लोगों से उनके बेटे राहुल गांधी को भी अपना मानने के लिए कहा जो वहां से उम्मीदवार हैं और सोनिया द्वारा खाली की गई सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता गृह मंत्री अमित शाह ने भी निर्वाचन क्षेत्र में एक चुनावी रैली को संबोधित किया, जिसके दौरान उन्होंने रायबरेली को पारिवारिक सीट कहने के लिए कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी पर हमला किया और कहा कि यह किसी परिवार की सीट नहीं बल्कि लोगों की सीट है। सोनिया ने कहा, राहुल आपको निराश नहीं करेंगे, उनके साथ राहुल, बेटी प्रियंका गांधी वाद्रा और इंडिया ब्लॉक के (शेष पेज 9)

रामजन्म भूमि में जातीय समीकरण बड़ा मुद्दा

विश्वजीत बनर्जी/कमलेश श्रीवास्तव। अयोध्या

22 जनवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा राम मंदिर के भव्य उद्घाटन ने अयोध्या को अंतरराष्ट्रीय सुर्खियों में ला दिया है। हालाँकि, इस लोकसभा क्षेत्र, जिसे अब भी आमतौर पर फैजाबाद के नाम से जाना जाता है, में चुनावी गणित कहीं अधिक जटिल है, जो मंदिर की राजनीति के साथ-साथ जटिल जाति समीकरणों से गहराई से प्रभावित है।इस हाई-स्टेक सीट पर भाजपा के ठाकुर उम्मीदवार लल्लू सिंह को सपा के दलित उम्मीदवार और मौजूदा विधायक अवधेश प्रसाद और बसपा के ब्राह्मण उम्मीदवार सच्चिदानंद पांडे से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। हाल ही में भाजपा से बसपा में शामिल हुए पांडे का लक्ष्य ब्राह्मण वोट बैंक पर कब्जा करना है।

राजनीतिक विश्लेषक राजेश एन. बाजपेयी ने कहा, अयोध्या भगवान राम का पर्याय है। लेकिन जब चुनाव की बात आती है तो राम का नाम लेना पर्याप्त नहीं है। उम्मीदवारों की जाति भी मायने रखती है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि राम मंदिर की लंबे समय से चली आ रही वकालत के कारण बाहरी लोग अयोध्या को भाजपा के गढ़ के रूप में देख सकते हैं, लेकिन वास्तविकता थोड़ी अलग है। 1989 के बाद से अब तक आठ लोकसभा चुनाव हुए हैं और उनमें से केवल चार में ही भाजपा को जीत मिली है। लल्लू सिंह और विनय कटियार दो-दो बार जीते, जबकि मित्रसेन यादव तीन बार जीते- दो बार एसपी के टिकट पर और एक बार सीपीआई उम्मीदवार के रूप में। 2009 में भी सपा ने इस सीट पर कब्ज़ा जमाया।1992 में बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद राम लहर के चरम के दौरान सोशल इंजीनियरिंग नामक रणनीतिक गठबंधन के कारण भाजपा को 1993 के विधानसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा। कांशीराम और मुलायम सिंह यादव एकजुट हुए, जिससे सपा और बसपा की पहली सरकार बनी। स्थानीय लोग भगवान राम के अभिषेक के बाद अयोध्या के परिवर्तन की पुष्टि करते हैं। शहर अब ट्रैफिक जाम और देश भर से तीर्थयात्रियों की भीड़ से व्यस्त है। कभी शांत रहने वाली अयोध्या को फैजाबाद से जोड़ने वाली 13 किमी लंबी सड़क, जिसका नाम अब राम पथ रखा गया है, शहर का व्यस्त केंद्र बन गया है, जो दिल्ली के कनॉट प्लेस की याद दिलाती है। स्थानीय निवासी बी.पी. सिंह ने कहा, यह राम पथ शहर की जीवन रेखा बन गया है, जिसमें प्रमुख भोजनालय, बड़ी व्यापारिक दुकानें और व्यापारिक केंद्र उभर रहे हैं। (शेष पेज 9)

बाकी चरणों में नौतपा भी तपाएगा मतदाताओं को

राजेश कुमार नई दिल्ली

तपती गर्मी से बचने के लिए स्कार्फ का इस्तेमाल करती महिलाएं। फाइल फोटोः रंजन डिमरी

दिल्ली, हरियाणा और उत्तर प्रदेश सहित छह राज्यों और दो केंद्र शासित प्रदेशों के 58 संसदीय क्षेत्रों के लोग 2024 के लोकसभा चुनावों के छठे चरण के लिए मतदान करेंगे, वह दिन साल के सबसे गर्म नौ दिनों में शामिल है। इसे नौतपा के जाना जाता है। नौतपा 2 जून तक चलेगा। इसे दक्षिण पश्चिम मानसून का जन्म समय भी माना जाता है। नौतपा के दौरान सूर्य पृथ्वी के सबसे करीब होता है और इस कारण भीषण गर्मी होती है। अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस से 45 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की उम्मीद है, जिससे 50 डिग्री सेल्सियस तक गर्मी का एहसास हो सकता है। नौतपा के दौरान मतदान ने शेष चरणों में विशाल मैदानी इलाकों में मतदाताओं की कम भागीदारी को लेकर चिंता बढ़ा दी है।मौसम ज्योतिषी डॉ. एसएन वाजपेई के मुताबिक नौतपा 25 मई से शुरू होगा, जिस दिन दिल्ली के लोग वोट डालेंगे और 2 जून तक जारी रहेगा। उन्होंने कहा, ऐसा माना जाता है कि सूर्य की गर्मी और रोहिणी के जल तत्व के कारण, यह मानसून का जन्म समय है और इस कारण से नौतपा को मानसून का जन्म समय माना जाता है। ज्योतिषियों के अनुसार, नौतपा के नौ दिनों के दौरान जब चार ग्रह - सूर्य, मंगल, बुध और शनि - कुंडली (शेष पेज 9)

दिल्ली का नज़फगढ़ देश का सबसे गर्म इलाका

नई दिल्ली। उत्तर पश्चिम भारत में शुक्रवार को भीषण गर्मी पड़ी तथा राष्ट्रीय राजधानी के नजफगढ़ इलाके में पारा 47.4 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया और यह देश में सबसे गर्म स्थान रहा। राजस्थान में 19, हरियाणा में 18, दिल्ली में आठ और पंजाब में दो स्थानों पर पारा 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंच गया। अगले पांच दिनों के दौरान उत्तर पश्चिम भारत के मैदानी इलाकों में उष्ण लहर जारी रहने की आशंका है। उष्ण लहर की स्थिति तब मानी जाती है जब मैदानी इलाकों में अधिकतम तापमान कम से कम 40 डिग्री सेल्सियस, तटीय क्षेत्रों में 37 डिग्री और पहाड़ी क्षेत्रों में 30 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है और सामान्य से कम से कम 4.5 डिग्री सेल्सियस ज्यादा होता है।

पायनियर
नई दिल्ली, शनिवार, 18 मई, 2024

एलिवेटेड रोड फिर खुलने से जाम से मिलेगी राहत

7 अप्रैल से चल रहा था मरम्मत का काम, सड़क पर नई परत बिछाई गई

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

एलिवेटेड रोड खुलने से नोएडा के लोगों को जाम से राहत मिल गई है। शुक्रवार से एलिवेटेड रोड पर आवाजाही शुरू हो गई। बता दें कि नोएडा अथॉरिटी के द्वारा रोड पर मरम्मत का कार्य किया गया था और इस वजह से इस रोड को बंद किया गया था।

नोएडा के एलिवेटेड रोड पर नोएडा अथॉरिटी ने 7 अप्रैल से रिफ्रेशिंग का काम शुरू किया था। नोएडा ट्रैफिक पुलिस की ओर से काम को पूरा करने के लिए अथॉरिटी को 90 दिन का समय दिया गया था, लेकिन अथॉरिटी ने सिर्फ 40 दिन में एलिवेटेड रोड की पुरानी सड़क उखड़कर नई परत बिछा दी है। नोएडा सेक्टर-18 से सेक्टर-60 की तरफ जाने वाली रोड पहले से ही खुली हुई है। इस प्रोजेक्ट को नोएडा अथॉरिटी के सिविल विभाग की टीम ने काफी तेजी से किया। नोएडा अथॉरिटी ने मरम्मत में पुरानी सड़क उखाड़ कर एक नई परत बिछाने का काम पूरा कर लिया है। अब नई परत के ऊपर दूसरी परत बिछाई जानी है। इसका काम भी सेक्टर-18 से सेक्टर 60 जाने वाली रोड पर करीब 75 प्रतिशत पूरा हो गया है। वहीं, नोएडा के सेक्टर-61 से सेक्टर-18 की तरफ जाने वाली रोड पर दूसरी परत का काम करीब 15 प्रतिशत पूरा हो गया है। पहली परत दोनों रोड पर बिछने के बाद अब सड़क को खोल दिया गया है, जिससे वाहनों के गुजरने में कोई समस्या नहीं होगी। नोएडा के डीसीपी ट्रैफिक अनिल यादव ने बताया कि ऐसे में ट्रैफिक सुबह 6 बजे से रात 11 बजे तक खोला जाएगा। रात 11 बजे से सुबह 6 बजे तक नोएडा अथॉरिटी दूसरी परत बिछाने का काम करवाती रहेगी। जिसकी वजह से रात में 11 बजे से लेकर सुबह 6 बजे तक फ्लाई ओवर बंद रहेगा। इस दौरान जरूरत के हिसाब से वाहनों का डायवर्जन किया जाएगा।

शहर में ट्राम सेवा चलाने को लेकर मंथन

नोएडा। *जेवर में शुरू हो रहे नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट के यात्रियों के लिए अत्याधुनिक तथा सुगम यातायात व्यवस्था को चालू करने के लिए प्रदेश सरकार आधुनिक सार्वजनिक यातायात प्रणाली पर विचार कर रही है। इसी के मद्देनजर अब नोएडा, ग्रेटर नोएडा, ग्रेटर नोएडा एक्सटेंशन, गाजियाबाद, हापुड़, बुलंदशहर में सडकों पर ट्राम सेवा चलाने की योजना पर भी मंथन चल रहा है। इसी को लेकर कल प्रदेश के औद्योगिक विकास एवं अवस्थापना विभाग के आयुक्त मनोज सिंह ने सेक्टर.55 स्थित रैडीसन होटल में एक समीक्षा की। इस दौरान आयोजित कार्यशाला में कई कंपनियों ने बेहतर यातायात कनेक्टिविटी के लिए प्रेजेटेंशन भी दिया। एचईएसएस कंपनी द्वारा ट्राम सेवा का प्रजेंटेशन देने के बाद कंपनी के प्रबंध निदेशक किशोर शाहू ने बताया कि यह ट्राम तीन कोच की होगी। जो बिजली से चार्ज होगी। एक बार चार्ज होने के बाद यह ट्राम 150 किलोमीटर तक चलेगी। इससे प्रदूषण नहीं होगा तथा किराया भी सस्ता होगा। यह सुविधा नोएडा व एनसीआर के लिए बेहतर विकल्प साबित होगा। इस दौरान इलेक्ट्रोनिक बसों के संचालन का भी प्रजेंटेशन दिया गया। इस दौरान आधुनिकतम सार्वजनिक यातायात व्यवस्था के संबंध में एक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मनोज सिंह के अलावा नोएडा के सीईओ डा लोकेश एम, ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार, डीसीपी ट्रैफिक अनिल यादव तथा विभिन्न कंपनियों के एमडी भी मौजूद रहें।*

ग्रेनो प्राधिकरण के चेयरमैन की समीक्षा

डीएमआईसी परियोजनाओं पर बैठक, टाउनशिप का लिया जायजा

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास आयुक्त और नोएडा-ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के चेयरमैन मनोज कुमार सिंह ने ग्रेटर नोएडा में चल रही डीएमआईसी परियोजनाओं की समीक्षा की।

ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ व आईआईटीजीएनएल के प्रबंध निदेशक एनजी रवि कुमार और प्राधिकरण की एसीईओ अन्नपूर्णा गर्ग ने टाउनशिप के इंफ्रास्ट्रक्चर के बारे में चेयरमैन को जानकारी दी। अब तक हुए औद्योगिक आवंटनों के बारे में बताया। मनोज कुमार सिंह ने टाउनशिप में शेष औद्योगिक भूखंडों का आवंटन शीघ्र करने के निर्देष दिए। इसके साथ ही आवासीय व वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए भी भूखंडों का आवंटन किए जाने के निर्देश दिए। आईटीजीएनएल की इस स्मार्ट टाउनशिप में हायर इलेक्ट्रॉनिक्स, फॉर्मे मोबाइल, सत्कृति इंफोटेनमेंट, चेनफेंग, जे वर्ल्ड इलेक्ट्रॉनिक्स और गुरू अमरदास समेत करीब 18 बड़ी कंपनियां निवेश कर रही हैं।

चेयरमैन ने बोड़ाकी के पास प्रस्तावित मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब और मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक हब के बारे में भी जानकारी ली। करीब 478 हेक्टेयर जमीन पर ये दोनों प्रोजेक्ट विकसित किए जा रहे हैं। मल्टीमॉडल ट्रांसपोर्ट हब अंतर्गत रेलवे, बस अड्डा व मेट्रो कनेक्टिविटी विकसित की जाएगी। बोड़ाकी के पास ही रेलवे टर्मिनल बनाया जाएगा। वहीं लॉजिस्टिक हब से उद्योगों के लिए माल ढुलाई की राह आसान हो जाएगी। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के बोर्ड रूम में समीक्षा के बाद चेयरमैन मनोज कुमार सिंह ने इंटीग्रेटेड इंडस्ट्रियल टाउनशिप का भ्रमण भी किया।

इस दौरान सीईओ एनजी रवि कुमार और एसीईओ अन्नपूर्णा गर्ग और अन्य अधिकारीगण भी मौजूद रहे। आईडीसी ने टाउनशिप में प्लग एंड प्ले सिस्टम और ऑटोमेटेड वेस्ट कलेक्शन प्लांट को भी देखा। वेस्ट प्रोसेसिंग प्लांट और हर प्लॉट से पाइप के जरिए कूड़े को प्रोसेसिंग प्लांट तक पहुंचाने और निस्तारित करने की तकनीक को समझा। उन्होंने इसकी सराहना भी की। बता दें कि दिल्ली मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के अंतर्गत आईआईटीजीएनएल की तरफ से इंटीग्रेटेड टाउनशिप करीब 750 एकड़ में इंटीग्रेटेड इंडस्ट्रियल टाउनशिप बसाई गई है।

प्लग एंड प्ले के आधार पर बनी इस टाउनशिप में उद्यमी तत्काल प्लांट लगाकर काम शुरू कर सकते हैं। इस टाउनशिप में वर्क टू साइकिल, 24 घंटे बिजली, एलईडी लाइट जैसी सुविधाएं मौजूद हैं। यह टाउनशिप सीसीटीवी से भी लैस होगी। इस टाउनशिप की सुरक्षा के लिए इंटीग्रेटेड कंट्रोल रूम बनाया जाएगा।

धोखाधड़ी के आरोप में विधायक पर मुकदमा

पायनियर समचार सेवा। गाजियाबाद

● फर्जी कागज से बैनामा करने का मामला, कोर्ट के आदेश पर हुई एफआईआर

प्लॉट का फर्जी कागजात तैयार कर बैनामा करने के मामले में कोर्ट के आदेश पर विधायक डॉ मंजू शिवाच, उनके पति सहित आठ के खिलाफ थाने धोखाधड़ी का केस दर्ज किया गया है।

पुलिस का कहना है कि जांच के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। वहीं, विधायक ने कहा कि सभी आरोप निराधार हैं। पुलिस जांच में सब सामने आ जाएगा। मेरठ के थाना ब्रह्मपुरी की नूरनगर कॉलोनी निवासी पंकज कुमार द्वारा दी गई याचिका में बताया गया कि मोदीनगर की गोविंदपुरी कॉलोनी में रहने वाले प्रमोद जैन और रामचंद्र जैन से 2016 में प्लॉट खरीदा था। श्याम वाटिका में खसरा नंबर 609 में 270 वर्गमीटर का प्लॉट का सौदा प्रॉपटी डीलर हाजी वासिद के माध्यम से विधायक डॉ मंजू शिवाच और उनके पति डॉ देवेंद्र शिवाच से हुआ।

उन्होंने दस लाख रुपये बैंक के माध्यम से भुगतान कर दिया। आरोप है कि फर्जी कागजात तैयार कर 2022 में उक्त प्लॉट का बैनामा कर लिया गया। इसकी जानकारी होने पर थाने में तहरीर दी, लेकिन कार्रवाई नहीं हुई। इस पर गाजियाबाद कोर्ट में याचिका डाली। एसीपी ज्ञानप्रकाश राय ने बताया कि मामले में हाजी वासिद निवासी इकबाल नगर मेरठ, बाबू निवासी किदवई नगर मोदीनगर, रहीसा, यामीन निवासी गांव खडौली थाना कंकरखेड़ा मेरठ, खतीजा निवासी गांव बलैनी बागपत, मारुफ मलिक निवासी चमन पार्क आस्मा मस्जिद नाला रोड दिल्ली के अलावा डॉ मंजू शिवाच और डॉ देवेंद्र शिवाच के खिलाफ धारा 420, 467, 468, 471 के तहत रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। जांच के बाद ही आगे की कार्रवाई की जाएगी। मामले में आरोपों को पूछताछ के लिए बुलाया जाएगा।

तेज रफ्तार बाइक की भिड़ंत में दो लोगों की मौत

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

● हादसे में दो युवक घायल, इलाज के लिए दिल्ली भेजा

पाइपलाइन मार्ग पर नवीपुर पुलिया के पास शुक्रवार दोपहर करीब दो बजे तेज रफ्तार बाइक और स्कूटी की आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। हादसे में बाइक सवार दो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं, दो गंभीर रूप से घायल हो गए।

घायलों को गाजियाबाद और दिल्ली के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जिला मेरठ के गांव नहाली में 53 वर्षीय अरशद परिवार सहित रहते हैं। शुक्रवार को वह स्कूटी से पाइपलाइन मार्ग से दिल्ली की ओर जा रहे थे। दोपहर दो बजे के आसपास जब वह नवीपुर पुलिया के पास पहुंचे तो सामने से आ रही बाइक से भिड़ंत हो गई। टक्कर लगने के बाद बाइक सवार तीन युवक और स्कूटी सवार अरशद उछलकर काफी दूर जा गिरे। चीख पुकार सुनकर मौके पर पहुंचे राहगीरों ने हादसे की सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने घायलों को मुरादनगर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। जहां पर बाइक सवार दो युवकों को मृत घोषित कर दिया।

मृतकों की पहचान शहनावाज उर्फ सानू और जहांगीर निवासी पंसौड़ा थाना टीला मोड़ गाजियाबाद के रूप में हुई। हालात गंभीर होने पर बाइक सवार अबरार को गाजियाबाद संयुक्त अस्पताल और स्कूटी सवार अरशद को दिल्ली के लिए रेफर कर दिया गया है।

संक्षिप्त समाचार

वैशाली सेक्टर में गौरी शंकर मंदिर में पूजन के दौरान महिलाएं

मित्रता की मिसाल है कृष्ण-सुदामा की जोड़ी

गाजियाबाद। वैशाली सेक्टर में गौरी शंकर मंदिर (भंडारे वाले मंदिर) में संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के सातवें दिन शुक्रवार को सुदामा चरित्र, व्यास पूजन और भंडारे के साथ समापन हो गया। सुदामा चरित्र के वर्णन के दौरान भक्तगण भाव विह्वल हो गए। अंतरराष्ट्रीय कथा वाचक आचार्य श्याम करण महाराज (चित्रकूट धाम) ने भागवत कथा के आखिरी दिन जीने की कला के मर्म को समझाया। उन्होंने बताया कि मनुष्य का जीवन चौरासी लाख योनियों के बाद मिलता है। कथा वाचक ने सूर्यदेव से सत्रजीत को उपहार स्वरूप मिली मणि का प्रसंग सुनाते हुए मणि के खो जाने पर जामवंत और श्रीकृष्ण के बीच 28 दिन तक चले युद्ध और फिर जामवंती, सत्यभामा समेत से श्रीकृष्ण सभी आठ विवाह की कथा सुनाई। उन्होंने सुदामा चरित्र को विस्तार से सुनाया। कृष्ण और सुदामा की निश्छल मित्रता का वर्णन करते हुए बताया कि कैसे बिना याचना के कृष्ण ने गरीब सुदामा का उद्धार किया। मित्रता निभाते हुए सुदामा की स्थिति को सुधारा। मंदिर के प्रमुख पुजारी व संरक्षक पंडित विनय शास्त्री ने कथा में आए सभी श्रद्धालुओं का स्वागत किया और आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि इस भागवत कथा के मुख्य यजमान शैलेंद्र कश्यप और बबिता कश्यप हैं।

लॉ रेजिडेंशिया सोसाइटी की लिफ्ट में फंसा युवक

नोएडा। ग्रेटर नोएडा में लिफ्ट अटकने के मामले लगातार सामने आ रहे हैं। ताजा मामला ग्रेटर नोएडा वेस्ट की लॉ रेजिडेंशिया सोसायटी का है। जहां पर लिफ्ट अचानक से रुक गई। जिसमें एक युवक फंस गया और करीब आधे घंटे तक युवक लिफ्ट के अंदर फंसा रहा। फिलहाल इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस दौरान एक महिला जो की लिफ्ट के बाहर है वह उन लोगों से पानी देने की बात भी कह रही है। बताया जा रहा है कि जो व्यक्ति लिफ्ट में फंसा वह सोसाइटी में किसी फ्लैट में काम करने के लिए आया था। लेकिन जब वह लिफ्ट से ऊपर जा रहा था तो अचानक से लिफ्ट अटक गई और वह उसके अंदर ही फंस गया। इसके बाद उसने अलार्म बजाया लेकिन उसने भी कोई कार्य नहीं किया। जब उसने शोर मचाया तब आवाज सुनकर एक महिला उसकी मदद के लिए आगे आई। इसके बाद सिक्योरिटी गार्ड और अन्य लोग लिफ्ट में फंसे युवक को बाहर निकलने लगे।

तिबड़ा मानकी मार्ग पर नाले में मिले शव की शिनाख्त

गाजियाबाद। मोदीनगर के तिबड़ा मानकी मार्ग पर नाले में मिले शव की शिनाख्त जिला मेरठ के थाना इंचौली के लावड़ निवासी दीनू उर्फ कालू के रुप में हुई है। मृतक दिल्ली मेरठ मार्ग पर एसआरएम संस्थान के पास एक ढाबे पर काम करता था। सिर में धारदार हथियार से वार कर हत्या की गई है। पुलिस जल्द हत्या का खुलासे करने की बात कह रही है। तिबड़ा मानकी मार्ग पर बुधवार दोपहर नाले में प्लास्टिक की बोरी से लिपटा हुआ एक शव पड़ा मिला था। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर शिनाख्त के प्रयास शुरु कर दिए। गुरुवार को शव की शिनाख्त दीनू उर्फ कालू निवासी कस्बा लावड़ थाना इंचौली जिला मेरठ के रुप में हुई।

दो चोर गिरफ्तार, कब्जे से चोरी किया सामान बरामद

नोएडा। दिल्ली-हावड़ा रेल मार्ग पर बोड़ाकी व दादरी रेलवे स्टेशन के बीच पुलिस ने दो चोरों को गिरफ्तार किया है। उनके कब्जे से कंप्यूटर मॉनिटर व अन्य उपकरण बरामद किए हैं । तथा अन्य चोरी घटनाओं के बारे में पूछताछ की जा रही है । आरपीएफपुलिस ने बताया कि घोड़ी बछेड़ा गांव के पास बसी कांशीराम कॉलोनी निवासी नाजिम व नगर की नई आबादी निवासी मान खां दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग पर बोडाकी व दादरी रेलवे स्टेशन के बीच घूम रहे थे। गश्त कर रही पुलिस ने रोक लिया।

मसूरी के आकाश नगर में घरों पर चिपके पलायन के पोस्टर

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद के थाना मसूरी के आकाश नगर में घरों के बाहर पलायन के पोस्टर चिपक गए हैं। लोगों को कहना है कि असामाजिक तत्व यहां नशा करते हैं और गाली गलौज करते हैं। मना करने पर धमकी देते हैं। हथियार दिखाते हैं। विरोध करो तो झूठे मुकदमे लिखवा देते हैं।

वहीं पुलिस का कहना है कि इलाके के एक व्यक्ति के खिलाफ एससी एसटी में मुकदमा दर्ज हुआ है। इसके बाद वह स्थानीय लोगों को भड़का कर ऐसा कर रहा है। थाना मसूरी के आकाश नगर में रहने वाले बबलू बंसल के मुताबिक इलाके में कुछ गलत लोग नशा करते हैं और बहुत जोर-जोर से आपत्तिजनक बातें करते हैं। बबलू बंसल की पत्नी बताती हैं कि जब वह एसीपी मसूरी ऑफिस शिकायत करने गईं तो वहां उन्हें भाग जाने के लिए कहा गया। इसके लिए उन्होंने वीडियो भी दिखाए। वहीं इस मामले में गाजियाबाद के डीसीपी ग्रामीण विवेक चंद यादव ने बताया की बबलू बंसल ने दलित परिवार के साथ बदसलूकी और मारपीट की थी।

विधायक अमानतुल्लाह खान की तलाश में छापेमारी

● नोएडा पुलिस की 4 टीमें जुटीं

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

नोएडा थाना फेज 1 क्षेत्र में स्थित सेक्टर-95 स्थित पेट्रोल पंप पर सात मई को सेल्समैन समेत अन्य कर्मचारियों के साथ मारपीट करने के मामले में नोएडा पुलिस की चार टीमें आप विधायक अमानतुल्लाह और उनके बेटे अनस की गिरफ्तारी के लिए ठिकानों पर लगातार दबिश दे रही है।

16 तारीख को भी पुलिस की टीमों ने विधायक, उनके पुत्र और एक अन्य की तलाश में दिल्ली के तीन ठिकानों पर दबिश दी पर दोनों नहीं मिले। इस बीच आप विधायक अमानतुल्लाह के द्वारा जिला न्यायालय में सरेन्डर की अर्जी लगाने की चर्चा है लेकिन इसकी पुष्टि नहीं हुई है। नोएडा पुलिस के अधिकारियों ने दिल्ली पुलिस से केस में नामजद आप विधायक, उनके बेटे और साथी अबू बकर के आपराधिक इतिहास की जानकारी मांगी है। इस मामले में सोमवार को आप विधायक के मैनेजर इकरार अहमद को फेज वन पुलिस ने गिरफ्तार किया था।

पुलिस ने इस मामले में एससी.एसटी की धारा बढ़ाने के साथ ही आप विधायक अमानतुल्लाह, उनके बेटे अनस और अबू बकर के खिलाफ एनबीडब्ल्यू भी जारी कर दिया है। पेट्रोल पंप के संचालक ने फेज वन थाने में विधायक और उसके बेटे के खिलाफसंबंधित धाराओं में केस दर्ज कराने के बाद बाप और बेटे दोनों फरार हैं। नोएडा जोन के एडिशनल डीसीपी मनीष मिश्रा का कहना है कि मामले की जांच कर रहे इन्वेस्टिगेशन ऑफिसर के द्वारा पेट्रोल पंप पर पीड़ितों का बयान लिया गया था। सीसीटीवी कैमरो की जांच की गई थी।

वहां मौजूद अन्य गवाहों के भी बयान दर्ज किये गए थे। जिस आधार पर एससी.एसटी एक्ट और 307 आईपीसी और अन्य धाराओं में साक्ष्य के हिसाब से मुकदमा दर्ज किया गया था। मामले की जांच के लिए चार टीमें में गठित की गई हैं, जो आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी कर रही है। एक अभियुक्त इकरार को गिरफ्तार किया जा चुका है, इस मामले में अन्य आरोपियों को जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा।

कार सीज होने पर ड्राइवर का बीच सड़क हंगामा

गाजियाबाद। थाना कविनगर क्षेत्र के हापुड़ चुंगी इलाके में एक ड्राइवर ने ट्रैफि क सब इंस्पेक्टर पर गंभीर आरोप लगाए हैं। ड्राइवर के मुताबिक ट्रैफिक सब इंस्पेक्टर ने उसको थप्पड़ मारा और 10 हजार रुपए की मांग की। ड्राइवर ने वीडियो बनाकर वायरल कर दिया। मामले में पुलिस का कहना है कि ड्राइवर के पास गाड़ी के कागज नहीं थे, जिसको लेकर गाड़ी सीज कर दी गई थी।

उसने आरोप लगाए हैं, अगर कोई शिकायत आती है तो जांच की जाएगी। गाजियाबाद में सोशल मीडिया पर दो वीडियो जबरदस्त तरीके से वायरल हो रहे हैं। इन वीडियो में एक शख्स जो खुद को ड्राइवर बता रहा है। ट्रैफि क सब इंस्पेक्टर पर आरोप लगा रहा है।

गाजियाबाद में कैडबरी के एक्सपायरी उत्पाद पकड़े

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

गाजियाबाद के कस्बा मोदीनगर में खाद्य सुरक्षा विभाग ने 2 जगह छापे मारकर प्रमुख कंपनी कैडबरी के एक्सपायर प्रोडक्ट पकड़े। जो प्रोडक्ट साल-2019 में एक्सपायर हो चुके थे, वो मार्केट में बेचे जा रहे थे, ऐसी आशंका है।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने इस संबंध में दुकान-गोदाम मालिक को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। मोदीनगर क्षेत्र की खाद्य सुरक्षा अधिकारी मीरा सिंह ने बताया, गुरुवार शाम को गोविंदपुरी में हिमांशु सचदेवा के दुकान और गोदाम पर छापेमारी की गई। दोनों एक.दूसरे से 500 मीटर दूरी पर हैं। हमें यहां से कैडबरी कंपनी के चॉकलेट, बॉर्नविटा, हॉर्लिक्स, ऑरियो बिस्केट बड़ी संख्या में मिले। ज्यादातर प्रोडक्ट एक्सपायरी थे। कुछ प्रोडक्ट तो साल.2019 में एक्सपायरी हो चुके थे। खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने बताया, हमने दुकान-गोदाम मालिक हिमांशु सचदेवा से पूछताछ की।

उनका कहना था कि हम कैडबरी कंपनी के एक्सपायरी प्रोडक्ट क्वार्टरली वापस करते हैं। इसलिए फि लहाल इतना सामान एक्सपायरी रखा हुआ है। लेकिन साल-2019, 2020 के एक्सपायरी प्रोडक्ट अब तक क्यों वापस नहीं हुए, इस पर वे चुप्पी साध गए और संतोषजनक जवाब नहीं दे पाए।

दोस्त के घर से युवक ने लगाई छलांग, मौत

● आर्थिक तंगी से परेशान था युवक

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

थाना सेक्टर-39 क्षेत्र के छलेरा गांव से 11 मई से लापता रितिक श्रीवास्तव के परिजन उसकी तलाश करते हुए उसके दोस्त के सर्फाबाद गांव स्थित घर पर पहुंच गए। वहां से परिजन सुशील और उसकी पत्नी को लेकर छलेरा गांव में आए।

वहां पर परिजन सुशील से बातचीत कर रहे थे, इसी बीच सुशील आक्रोशित हो गया तथा उसने रितिक के घर की छत से छलांग लगा दिया। अत्यंत गंभीर हालत उसे उपचार के लिए दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां पर उसकी मौत हो गई। पुलिस उपायुक्त जोन प्रथम विद्यासागर मिश्रा ने बताया कि इस मामले में अभी तक किसी ने पुलिस से कोई शिकायत नहीं की है। उन्होंने बताया कि जांच के दौरान पुलिस को पता चला है कि दोनों पक्ष एक दूसरे के पुराने परिचित है।

पूर्व में रितिक सुशील तथा उसकी पत्नी एक साथ छलेरा गांव रहते थे। किसी बात को लेकर इनका आपस में विवाद हो गया। उसके बाद सुशील अपनी पत्नी के साथ सर्फाबाद गांव में रहने चला गया। उन्होंने बताया कि घटना के समय क्या परिस्थितियों रही इस बात की जांच की जा रही है। वहीं लापता युवक रितिक की मां ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल कर पुलिस पर आरोप लगाया था, लेकिन आज उसने एक और वीडियो जारी की जिसमें उसने पुलिस की कार्रवाई की प्रशंसा की है। जांच के दौरान पुलिस को पता चला है कि लापता युवक रितिक ने काफी लोगों से पैसे उधार लिए थे। वहीं से उसने अपनी बहन को मैसेज किया था। उसके मैसेज के आधार पर ही पुलिस ने उसका लोकेशन ट्रेस करके पीड़ित के परिजनों से पूछा था कि क्या सर्फाबाद गांव में उनका कोई रहता है।

गांवों की सड़कों पर कूड़ा बिखरा देख भड़के ओएसडी

● वैदपुरा, सैनी व भोला रावल का किया औचक निरीक्षण

पायनियर समाचार सेवा। नोएडा

ग्रेटर नोएडा के ओएसडी संतोष कुमार अचानक से ग्रेटर नोएडा वेस्ट स्थित गांव वैदपुरा, सैनी व भोला रावल पहुंच गए।

सैनी व वैदपुरा के बीच मुख्य मार्ग की पटरियों पर जगह-जगह कूड़ा बिखरा दिखा, जिस पर ओएसडी ने फर्म मैसर्स साईंनाथ पर 50 हजार का जुर्माना लगा दिया और इनकी तत्काल सफाई कराने के निर्देश दिए।

इन तीनों गांवों के नालियों की हालत भी खराब दिखी। नालियों में सिल्ट जमा दिखी। स्लोप ठीक न होने के कारण पानी की निकासी नहीं हो पा रही। संतोष कुमार ने नालियों की मरम्मत और सफाई के लिए परियोजना विभाग को पत्र लिखा है।

ओएसडी ने इन गांवों की समस्याओं से सीनियर अधिकारियों को भी अवगत कराया है। ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण के सीईओ एनजी रवि कुमार कि निर्देश पर ओएसडी स्वास्थ्य संतोष कुमार अपनी टीम के साथ रोजाना गांवों व सेक्टरों में सफाई व्यवस्था का जायजा ले रहे हैं।

ओएसडी स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ प्रबंधक नथोली सिंह व अन्य टीम के साथ सैनी व वैदपुरा पहुंचे। ओएसडी ने इन दोनों गांवों की सफाई व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान गांव के लोग भी आ गए। उन्होंने गांव की समस्याओं से ओएसडी को अवगत कराया। ग्रामीणों ने नियमित सफाई न होने की बात कही। सैनी व वैदपुरा के बीच मुख्य मार्ग की पटरियों पर जगह.जगह कूड़ा बिखरा दिखा, जिस पर ओएसडी ने फर्म मैसर्स साईंनाथ पर 50 हजार का जुर्माना लगाया। इसकी तत्काल सफाई कराने के निर्देश दिए। ओएसडी के निरीक्षण के दौरान नालियों व ड्रेन में पॉलिथीन और सिल्ट भरी हुई थी। पानी ओवरफ्लो होता दिखा। ओएसडी ने इसकी जानकारी परियोजना विभाग को दे दी है। इसके बाद वे भोला रावल भी गए। वहां भी ऐसी ही स्थिति दिखी। सफाई व्यवस्था खराब दिखी। जिस पर ओएसडी ने कड़ी नाराजगी जताते हुए सफाई कराने के निर्देश दिए।

टोकन मिलने के बाद भी ओपीडी में लग रही मरीजों की कतार

● नई व्यवस्था के कारण इलाज के लिए घंटों जूझ रहे मरीज

पायनियर समाचार सेवा। गाजियाबाद

जिले के तीनों बड़े सरकारी अस्पतालों में टोकन व्यवस्था को लागू है। टोकन मिलने के बाद भी ओपीडी में मरीजों की कतार लग रही। बेंच और कुर्सी की कम व्यवस्था होने से मरीजों को घंटों परेशान होना पड़ रहा।

इसकी वजह से गंभीर मरीज चक्कर आने से ओपीडी में बेहोश भी हो जा रहे। विजयनगर निवासी महेंद्र सिंह पिछले काफी समय से खून की कमी से जूझ रहे हैं। जांच में उनका हीमोग्लोबिन 3.3 रह गया। शुक्रवार को महेंद्र अपने बेटे के साथ एमएमजी अस्पताल की ओपीडी में पहुंचे और कमरा नंबर-27 के सामने अपनी बारी का इंतजार करने लगे। काफी देर तक लाइन में खड़े रहने से उनकी हालत बिगड़ गई । इसके बाद रेजिडेंट डॉक्टर ने स्ट्रेचर मंगाकर उन्हें इमरजेंसी पहुंचवाया और उन्हें खून चढ़ाने की सलाह दी। इमरजेंसी में महेंद्र को भर्ती करके उपचार शुरू किया गया।

स्वाति प्रकरण पर माफी मांगे सीएमः सीतारमण

बोलीं, कार्रवाई का वादा करने के बाद विभव कुमार के साथ लखनऊ पंजाब घूम रहे हैं

प्रेस वार्ता के दौरान वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण व साथ में भाजपा नेता शाजिया इल्मी। फोटोः रंजन डिमरी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल के साथ कथित मारपीट मामले पर मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की चुप्पी को लेकर वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने सवाल उठाए हैं। वित्त मंत्री ने कहा कि यह अविश्वसनीय और अस्वीकार्य है कि केजरीवाल ने अपनी पार्टी की महिला सांसद पर हमले को लेकर एक शब्द भी नहीं बोले। मामले में आम आदमी पार्टी द्वारा कार्रवाई का वादा किए जाने के बाद केजरीवाल आरोपी विभव कुमार के साथ बेशर्मी से लखनऊ और पंजाब घूम रहे हैं।

भाजपा मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में शुक्रवार को निर्मला सीतारमण ने मांग की कि आप संयोजक इस मामले पर बयान दें और 13 मई को मालीवाल पर उनके आधिकारिक आवास पर हुए कथित हमले के लिए माफी मांगें। उन्होंने कहा कि आप सांसद संजय सिंह ने मामले में कार्रवाई का वादा किया था लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

केंद्रीय वित्त मंत्री ने इसे घाव में नमक छिड़कने के समान करार दिया और कहा, यह तो बेशर्मी की पराकाष्ठा है। भाजपा की वरिष्ठ नेता ने नई दिल्ली लोकसभा सीट से उम्मीदवार सोमनाथ भारती समेत आप के कई नेताओं के खिलाफ महिलाओं पर हमले के पूर्व के आरोपों का जिक्र करते हुए दावा किया कि दिल्ली की सत्ताधारी पार्टी महिला विरोधी है। उन्होंने कहा कि पूर्व आईएफएस अधिकारी और आप के संस्थापक सदस्य मधु भादुड़ी ने यह कहते हुए पार्टी छोड़ दी थी कि इसमें महिलाओं के साथ इंसानों जैसा व्यवहार नहीं किया जाता और इसकी मानसिकता खाप पंचायतों की तरह है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि गांधी परिवार के सदस्य सोमनाथ भारती को वोट देंगे, जिन पर अपनी गर्भवती पत्नी पर हमला करने का आरोप है।

उन्होंने कहा कि यह अविश्वसनीय और अस्वीकार्य है कि केजरीवाल ने अपनी पार्टी के सांसद पर हमले पर एक शब्द नहीं बोला। मालीवाल ने शुक्रवार को मामले में प्राथमिकी दर्ज कराई थी, जिसमें बिभव कुमार पर मुख्यमंत्री के आधिकारिक आवास पर हमला करने का आरोप लगाया गया था। सीतारमण ने कहा कि मालीवाल पर उस समय हमला किया गया जब केजरीवाल अपने घर में थे। उन्होंने कहा कि केजरीवाल को माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने दावा किया कि राष्ट्रीय राजधानी में महिलाएं हैरान हैं कि क्या मुख्यमंत्री उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने में सक्षम हैं। सीतारमण ने कहा कि विपक्षी गठबंधन इंडिया के घटक दलों को केजरीवाल से इस मुद्दे पर सफाई देने के लिए कहना चाहिए। उन्होंने कहा कि अन्यथा महिलाओं के लिए उनके नारे केवल दिखावटी साबित होंगे।मालीवाल को पुलिस में आधिकारिक रूप से शिकायत दर्ज कराने में कुछ दिन का समय लेने का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इससे पता चलता है कि उन पर उच्च स्तर का दबाव था।

आप ने भाजपा पर केजरीवाल को फंसाने का लगाया आरोप

- मंत्री आतिशी ने कहा, वीडियो सामने आने के बाद मालीवाल के झूठ की पोल खोल दी है

शिक्षा मंत्री आतिशी

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

आम आदमी पार्टी ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि स्वाति मालीवाल पर हमले का मामला मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को फंसाने की भाजपा की साजिश है और वह इसका चेहरा हैं। पार्टी ने केजरीवाल के निजी सहायक के खिलाफ राज्यसभा सदस्य मालीवाल द्वारा लगाए गए आरोपों को निराधार बताया। आप की यह टिप्पणी दिल्ली पुलिस द्वारा मुख्यमंत्री के आधिकारिक आवास पर मालीवाल के साथ कथित तौर पर मारपीट करने के मामले में केजरीवाल के निजी सहायक विभव कुमार के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने के एक दिन बाद आई है। आतिशी ने शुक्रवार को संवाददाता सम्मेलन में आरोप लगाया कि वह पहले से मुलाकात का समय लिए बिना मुख्यमंत्री आवास पहुंची थीं और उनका इरादा केजरीवाल के खिलाफ आरोप लगाने का था। आतिशी ने कहा, आज एक वीडियो सामने आया है, जिसने मालीवाल के झूठ की पोल खोल दी है। अपनी प्राथमिकी में उन्होंने कहा है कि उनके साथ बेरहमी से मारपीट की गई और वह दर्द में थीं और उनकी शर्ट के बटन तोड़ दिए गए। सामने आया एक वीडियो बिल्कुल अलग हकीकत बयां करता है। प्राथमिकी के मुताबिक, कथित तौर पर कुमार ने मालीवाल को लात मारीं और सात से आठ बार थप्पड़ मारे। प्राथमिकी में यह भी कहा गया है कि मालीवाल द्वारा रुकने को कहे जाने के बावजूद कुमार नहीं माने। आतिशी ने कहा कि वीडियो में मालीवाल आराम से ड्राइंग रूम में बैठी हुई और सुरक्षा कर्मचारियों को धमकाते हुए दिख रही हैं, और उनके कपड़े नहीं फटे थे। उन्होंने दावा किया, वीडियो में वह कुमार को धमकी देती दिख रही हैं। मालीवाल द्वारा लगाए गए आरोप निराधार हैं। मालीवाल ने केजरीवाल से मिलने की जिद की। वह राज्यसभा सदस्य हैं और उन्हें पता होना चाहिए कि मुख्यमंत्री का व्यस्त कार्यक्रम होता है। कुमार ने उन्हें बताया कि मुख्यमंत्री व्यस्त हैं और उनसे मिलने में असमर्थ हैं। वह उन पर चिल्लाईं, उन्हें (कुमार को) धक्का दिया और मुख्यमंत्री निवास के आवासीय हिस्से में घुसने की कोशिश की। उन्होंने आरोप लगाया, पूरी घटना साबित करती है कि यह भाजपा की साजिश थी और केजरीवाल को फंसाने के लिए स्वाति मालीवाल को इसका चेहरा बनाया गया था। आतिशी ने कहा कि कुमार ने मालीवाल के खिलाफ पुलिस में शिकायत भी दी है। जब आतिशी से पूछा गया कि सिंह ने मालीवाल के साथ दुर्व्यवहार की बात स्वीकार की है, तो आतिशी ने कहा, आप सांसद संजय सिंह ने मालीवाल से मुलाकात की थी और उनके पास केवल उनका पक्ष था। लेकिन अब इस वीडियो ने सच्चाई सामने ला दी है।

लोकसभा चुनावी रण में प्रचार तेज

भाजपा प्रत्याशी रामवीर सिंह बिधूड़ी के समर्थन में उत्तराखंड के सीएम पुष्कर सिंह धामी जनसभा को संबोधित करते हुए।

सोम बाजार रोड रिठाला में कार्यालय के उद्घाटन के दौरान गठबंधन प्रत्याशी उदित राज।

गंगा मैय्या मंदिर ए-ब्लॉक में प्रचार करती भाजपा की कमलजीत सहरावत

आप के यू-टर्न पर मालीवाल ने उठाए सवाल

- खुद लड़ना होगा, कृष्ण भगवान बचाने नहीं आयेंगे : नवीन जयहिंद

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

स्वाति मालीवाल ने आप पर पटलवार करते हुए आप के यू-टर्न लेने पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर कहा कि कहा कि कल के आए नेताओं से 20 साल पुरानी कार्यकर्ता को भाजपा का एजेंट बता दिया। दो दिन पहले पार्टी ने प्रेस कांफ्रेंस कर सब सच कबूल लिया था और आज यू-टर्न लेकर आरोपी पार्टी को धमका रहा है कि अगर वह गिरफ्तार हुआ तो सारे राज खोलूंगा इसलिए ही लखनऊ से लेकर हर जगह शरण में घूम रहा है।

उन्होंने कहा कि उसके दबाव में पार्टी ने हार मान ली और एक गुंडे को बचाने के लिए पूरी पार्टी से मेरे चरित्र पर सवाल उठाए गए। कोई बात नहीं, पूरे देश की महिलाओं के लिए अकेले ही लड़ती आई हूं अपने लिए भी लड़ूगी। जमकर कैरेक्टर असेसिनेशन करो, समय आने पर सब सच सामने आएगा। वहीं जयहिंद सेना प्रमुख डॉ नवीन जयहिंद ने दिल्ली पुलिस से अपील है इस मामले की गहन जांच कर आरोपी को जल्द गिरफ्तार कर इस घटना का सच सबके सामने लाए। स्वाति को भी समझना होगा कि कलयुग में कोई कृष्ण भगवान उसे बचाना के लिए नहीं आएंगे। खुद न्याय के लिए लड़ना होगा और आगे आना होगा।

भाजपा महिला मोर्चा ने केजरीवाल के आवास के पास किया प्रदर्शन

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की दिल्ली इकाई ने आम आदमी पार्टी की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल से कथित बदसलूकी के मामले में शुक्रवार सुबह मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के आवास के पास विरोध प्रदर्शन किया। महिला मोर्चा अध्यक्ष ऋचा पांडे मिश्रा के नेतृत्व में चूड़ियां व लेकर प्रदर्शनकारियों ने केजरीवाल के सहयोगी विभव कुमार द्वारा मालीवाल से कथित बदसलूकी के मामले में मुख्यमंत्री के इस्तीफे की मांग की।मिश्रा ने कहा कि महिला मोर्चा केजरीवाल को उनके आधिकारिक आवास पर मालीवाल के साथ घटी घटना पर चुप्पी साधने के लिए चूड़ियां सौंपना चाहता था। मालीवाल के साथ हुई घटना केजरीवाल का कोई पारिवारिक मामला नहीं है बल्कि यह दिल्ली की जागरूक महिला सांसद के साथ अपमान का मुद्दा है।

पालम विधानसभा के राजनगर पार्ट 2 में महरौली रोड़ के पास में आयोजित जनसभा में आप प्रत्याशी सहराम ।

पीएम मोदी और राहुल गांधी की दिल्ली में मेगा रैली आज

- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, उत्तर पूर्वी दिल्ली के घोंडा, राहुल गांधी अशोक विहार स्थित रामलीला मैदान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

जैसे-जैसे गर्मी बढ़ रही है सियासत का पारा भी चढ़ता जा रहा है। दिल्ली में शनिवार को राजनीतिक गरमी चरम पर होगी वजह जहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी उत्तर पूर्वी दिल्ली में भाजपा उम्मीदवार मनोज तिवारी के लोकसभा क्षेत्र के गोंडा विधानसभा में संबोधित करेंगे।

इसी दिन वरिष्ठ कांग्रेस के नेता राहुल गांधी चांदनी चौक लोकसभा क्षेत्र के अशोक विहार के रामलीला मैदान में एक जनसभा को संबोधित करेंगे। लोकसभा चुनाव के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र

मोदी दिल्ली में दो जनसभाएं करेंगे। शनिवार को उनकी पहली रैली होगी, जिसमें वह मनोज के लिए वोट मांगेंगे। इस सीट पर भाजपा के मनोज तिवारी और इंडिया गुट के कांग्रेस प्रत्याशी कन्हैया कुमार के बीच मुकाबला है। पीएम के कार्यक्रम को भाजपा नेता शुक्रवार को अंतिम रूप देते रहे। इसे लेकर पार्टी संगठन की बैठकें हुई। प्रदेश भाजपा की तैयारी है कि पीएम की बड़ी जनसभा की जाए। इसके बाद उनकी दूसरी जनसभा बीस मई के बाद आयोजित की जाएगी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी का प्रचार अभियान भी राष्ट्रीय राजधानी में शनिवार से शुरू होगा। इसके मद्देनजर दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष देवेन्द्र यादव व अन्य नेताओं ने गत गुरुवार को रामलीला मैदान का निरीक्षण कर तैयारियों को परखा। यादव नेबताया कि 18 मई को शाम छह बजे अशोक विहार स्थिति रामलीला मैदान में जनसभा को संबोधित करके राहुल गांधी अपने अभियान की शुरुआत करेंगे।

राहुल गांधी को सुनने के लिए चांदनी चौक लोकसभा क्षेत्र के अलावा पूरी दिल्ली से बड़ी संख्या में लोगों के पहुंचने की संभावना है। जनसभा के लिए आसपास के क्षेत्र में प्रचार का जिम्मा खासतौर पर आदर्शनगर और चांदनी चौक जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्षों को सौंपा गया है।

वौथे चरण से साफ हुआ गठबंधन की बन रही केंद्र में सरकारः जयराम रमेश

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने पर्यावरण प्रदूषण को दिल्ली सहित पूरे देश के लिए अहम मुद्दा बताते हुए कहा कि इंडिया गठबंधन की सरकार दिल्ली में प्रदूषण के खिलाफ प्राथमिकता से काम करेगी और तय समय सीमा के अंदर फर्क दिखाएगी। उन्होंने कहा कि इन चार चरणों के बाद यह साफ हो गया है कि इस बार इंडिया गठबंधन की सरकार बनने जा रही है।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने शुक्रवार को यहां पार्टी के प्रदेश कार्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि देश में चार चरणों का चुनाव हो चुका है और आने वाली 25 मई को दिल्ली में चुनाव होने वाला है। कांग्रेस नेता ने कहा कि इंडी गठबंधन सरकार बनाने जा रहा है और उसकी प्राथमिकता राष्ट्रीय राजधानी में वायु और यमुना नदी में प्रदूषण सहित पांच पर्यावरणीय मुद्दों पर काम करना होगा। इसमें वायु प्रदूषण, अरावली का वनीकरण, यमुना एक्शन प्लान को पुनर्जीवित करना शामिल है। देश में पर्यावरण एक बहुत जरूरी मुद्दा है।

संक्षिप्त समाचार

708 स्कूलों में मच्छरों के प्रजनन की हुई जांच

नई दिल्ली। दिल्ली नगर निगम के जन स्वास्थ्य विभाग ने डेंगू और इसकी रोकथाम के तरीकों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए राष्ट्रीय डेंगू दिवस-2024 मनाया। मच्छर जनित बीमारियों की

समस्याओं के समाधान के लिए सामुदायिक भागीदारी एक महत्वपूर्ण रास्ता है। सामुदायिक भागीदारी के बिना डेंगू की रोकथाम, नियंत्रण और उन्मूलन संभव नहीं है। दिल्ली नगर निगम के अन्य जोनों में भी वेक्टर जनित रोगों की रोकथाम एवं नियंत्रण के संबंध में विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गईं। मच्छरों के प्रजनन के लिए 708 स्कूलों की जांच की गई है और 145 स्कूल असेंबली में बैठकें और पोस्टर प्रतियोगिताएं आयोजित की गई हैं। एमसीडी के 12 जोनों में 510 आरडब्ल्यूए/एनजीओ बैठकें/मार्केट एसोसिएशन बैठकें की गई हैं। मच्छरों के प्रजनन के लिए 350 अस्पतालों/डिस्पेंसरियों की जाँच की गई है। एमसीडी के 12 जोनों में मच्छरों के प्रजनन के लिए 281 एमसीडी कार्यालयों, 512 सरकारी कार्यालयों और 147 निजी कार्यालयों की जांच की गई है।

लखनऊ घूमने के लिए ठहरने की चिंता खत्म

नई दिल्ली/लखनऊ। ओयो ने नवाबों के शहर लखनऊ में 25 सेल्फ-ऑपरेटेड होटल्स शुरू करने की घोषणा की है। शुरुआती चरण में चार होटल्स शुरू भी हो चुके हैं। ओयो रियल एस्टेट डेवलपर्स के साथ साझेदारी कर रहा है, ताकि होटल्स शुरू करने के लिए बेहतर क्षेत्रों और सम्पत्तियों का पता लगाया जा सके। चाहे हमारे मेहमान अपनी व्यावसायिक यात्रा पर हों, पारिवारिक अवकाश पर अपने शहर से बाहर आए हों, या फिर अकेले ही एडवेंचर ट्रिप पर निकले हों, ओयो के माध्यम से उन्हें टॉप-रेटेड होटल्स में ठहरने के विभिन्न विकल्प मिलेंगे, जो न सिर्फ उनकी यात्रा को सुगम बनाएँगे, बल्कि उनके बजट के भी अनुरूप होंगे।

कांग्रेस के ब्लाक अध्यक्ष व कार्यकर्ता भाजपा में शामिल

नई दिल्ली। प्रदेश भाजपा के प्रभारी ओम प्रकाश धनखड़ और भाजपा के वरिष्ठ अरविंदर सिंह लवली की उपस्थिति में कांग्रेस से 20 वार्ड के अध्यक्ष सहित 300 से अधिक पार्टी पदाधिकारी भाजपा में शामिल हुए। धनखड़ ने कहा कि दिल्ली में भाजपा का कुनबा बढ़ता जा रहा है और आने वाले 25 मई को सातों सीटों पर जीत दिलानी है क्योंकि सभी के मन में है कि भारत एक मजबूत और विश्व गुरु बनें इसके लिए सभी संकल्पित है। ओम प्रकाश धनखड़ ने कहा कि दुनिया में सबसे लोकप्रिय नेता अगर कोई है तो वह प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं जिनके नेतृत्व में भारत विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है और आने वाले समय में जल्द ही तीसरे नंबर पर होंगे।

पहले दिन 1,482 मतदाताओं ने किया सुविधा का उपयोग

घर से मतदान

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी की सात लोकसभा सीटों के चुनाव के लिए मतदान में अभी करीब एक सप्ताह शेष है। इस बीच घर से मतदान के लिए आवेदन करने वाले 85 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्गों व दिव्यांगजन मतदाताओं के घर से मतदान की प्रक्रिया बृहस्पतिवार से शुरू हो गई है।

पहले दिन दिल्ली की सभी सीटों के लिए 1,482 बुजुर्ग व दिव्यांग मतदाताओं के घर बैठे पोस्टल बैल्ट से मतदान किया। दिल्ली में 85 वर्ष अधिक उम्र के बुजुर्गों व दिव्यांग मतदाताओं की संख्या 175303 है। चुनाव आयोग ने

इस बार लोकसभा चुनाव में 40 फीसदी से अधिक दिव्यांग और 85 वर्ष से अधिक उम्र के वरिष्ठ नागरिकों को घर से मतदान की सुविधा दी है इसके लिए पात्र मतदाताओं को फॉर्म 12डी भरकर देना था। दिल्ली में 5424 बुजुर्गों व दिव्यांग मतदाताओं ने घर से मतदान के लिए फॉर्म 12डी भरकर दिया है इनके मतदान की प्रक्रिया 24 मई तक चलेगी।

कांग्रेस-आप के खिलाफ भाजपा का आरोप पत्र जारी

- दोनो पार्टियों से जुड़े घोटालों और भ्रष्टाचार को शामिल किया : सचदेवा

पायनियर समाचार सेवा। नई दिल्ली

लोकसभा सीटों पर 25 मई को होने वाले मतदान से पहले दिल्ली भाजपा ने शुक्रवार को अपने इंडिया गुट के आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के खिलाफ आरोपपत्र जारी किया।

इस आरोप पत्र में पिछले 9 सालों में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने किस प्रकार से दिल्ली को लूटने का काम किया है, किस प्रकार से यहां भ्रष्टाचार का शासन, दंगाईयों को सम्मान देने का काम चला है और जिस प्रकार से कांग्रेस ने घूटने टेकते हुए आम आदमी पार्टी के साथ लूट

आरोप पत्र में पिछले 9 सालों के कथित घोटालों को साझा करते भाजपा नेता।

का बंधन किया है, इन सभी बिंदुओं को आरोप पत्र में शामिल किया गया है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा, आरोप पत्र समिति के अध्यक्ष विधायक विजेन्द्र गुप्ता, समिति के सदस्या प्रवीण शंकर कपूर ने शुक्रवार को संवाददाता सम्मेलन में आरोप पत्र जारी किया। सचदेवा ने कहा कि पिछले नौ सालों में शरोब घोटाला ही केजरीवाल सरकार का एक घोटाला नहीं है। कोविड में दिल्ली की जनता त्रस्त थी उस वक्त अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और संजय सिंह शराब घोटाले में पैसे कमाने की योजना बना रहे थे। आरोप पत्र में मुख्यमंत्री के शीश महल का जिक्र होने के साथ ही स्वास्थ्य घोटाला, शिक्षा घोटाला, पैनिक बटन घोटाला, ट्रांसपोर्ट घोटाले की भी चर्चा है। दिल्ली में एक भी राशन कार्ड नहीं बना। सचदेवा ने कहा कि वृद्धों का पेंशन रोकने जैसे कई घोटाले आम आदमी पार्टी सरकार ने किये हैं। टुकड़े-टुकड़े गैंग को समर्थन देना, देश के टुकड़े करने वालों के साथ हाथ मिलाने के आम आदमी पार्टी के चरित्र को इस आरोप पत्र में बताया गया है। उन्होंने कहा कि महिला के साथ अभद्रता करने वालों को शह दिया जा रहा है। इनके विधायक जितेन्द्र तोमर फर्जी डिग्री में पकड़े गए, संदीप कुमार जिसने महिला के साथ अभद्रता की, असीम खाँ रिश्वत के आरोप में, अमानतुल्लाह खान जो आतंकी गतिविधियों में लिप्त है, सत्येन्द्र जैन अभी भी मनी लॉड्री के आरोप में जेल में है, सोमनाथ भारती जिनपर घरेलू हिंसा का आरोप है, ऐसे लोगों की पूरी एक लिस्ट है। पार्टी के महिला सांसद के साथ मुख्यमंत्री आवास पर अभद्रता हुई।

पायनियर
नई दिल्ली, शनिवार, 18 मई, 2024

नियमों की धज्जियां उड़ा रहे बिल्डर

बिना रेरा पंजीकरण के ही मकान के खरीदारों से ऐंठ लिए करोड़ों रुपए

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

फ्लैट्स की प्री-बुकिंग के नाम से तीन बिल्डर द्वारा रेरा के नियमों का उल्लंघन किया गया है। नियमों में साफ दिया गया है कि किसी प्रोजेक्ट के रेरा पंजीकरण के बिना कोई भी डेवेलपर नए प्रोजेक्ट के लिए प्री-बुकिंग नहीं कर सकता। रेरा एक्सपर्ट एवं मानव आवाज संस्था के संयोजक अभय जैन एडवोकेट ने इसकी शिकायत हरियाणा के मुख्यमंत्री से की है।

अभय जैन के अनुसार हरियाणा रियल एस्टेट विनियामक प्राधिकरण से अनिवार्य रेरा पंजीकरण प्रमाण-पत्र प्राप्त किए बिना डेवलपर्स अपनी प्रोजेक्ट से फ्लैट बुकिंग कर रहे हैं। यह रियल एस्टेट अधिनियम, 2016 की धारा 3 का घोर उल्लंघन है। इसमें स्पष्ट कहा गया है कि डेवेलपर अपने प्रोजेक्ट को संबंधित प्राधिकरण से पंजीकृत कराए बिना एक पैसा भी एकत्र नहीं कर सकता है।

अभय जैन के मुताबिक, कुछ खरीदारों से पता चला है कि प्रमुख डेवलपर्स जैसे वाटिका वन इंडिया नेक्स्ट प्राइवेट लिमिटेड अपने आगामी प्रोजेक्ट वाटिका क्रॉसओवर के लिए सेक्टर-82ए, सिग्नेचर ग्लोबल डेवलपर्स प्राइवेट लिमिटेड अपने आगामी लक्जरी अपार्टमेंट प्रोजेक्ट सिग्नेचर ग्लोबल सिटी, सेक्टर-37डी गुरुग्राम और एडोर प्रॉपमार्ट एलएलपी ने सेक्टर-77 मानेसर में अपने आगामी प्रोजेक्ट द सेलेक्ट प्रीमिया के लिए बड़ी संख्या में अपनी इकाइयां बेची थीं। उन्होंने कहा कि रेरा के नियमों के अनुसार हर प्रोजेक्ट के लिए अलग से बैंक खाता होना चाहिए और घर खरीदारों द्वारा जमा कराई जाने वाले रकम उसी खाते में जमा हो। प्रोजेक्ट में अगर डेवेलपर देरी करता है तो उस खाते को फ्रीज किया जाना चाहिए, ताकि उस पैसे का किसी दूसरे काम में उपयोग ना हो। अभय जैन एडवोकेट ने कहा कि वर्ष 2005 से 2015 तक के वर्षों के दौरान बड़ी संख्या में डेवलपर्स ने अपनी सेंकड़ों आगामी परियोजनाएं खरीदारों को बेचकर नगर एवं ग्राम नियोजन विभाग, हरियाणा से आवश्यक अनिवार्य लाइसेंस के बिना खरीदारों से भारी राशि एकत्र की थी। उन्होंने कहा कि एक मई 2017 को रेरा का गठन हुआ था।

रेरा के इस नियम को पूरा तरह से माना जाता था, लेकिन अब पिछले कुछ समय से रेरा के इस पंजीकरण वाले नियम की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ डेवलपर्स अभी भी आगामी परियोजनाओं की अपनी प्रस्तावित इकाइयों को बेच रहे हैं। उनका अनुरोध है कि ऐसे डेवलपर्स के खिलाफ रेरा को कार्रवाई करने का निर्देश दें, जो अभी भी अपनी प्रस्तावित इकाइयों को बेच रहे हैं। अभय जैन एडवोकेट के अनुसार रेरा के चेयरमैन अरुण कुमार ने उन्हें आश्वस्त किया है कि इस तरह के मामलों की जांच करके दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जाएगी।

नियमों के विरुद्ध प्रचार सामग्री छापने पर होगी कार्रवाई: निशांत

- जिला निर्वाचन अधिकारी ने जिले के प्रिंटिंग प्रेस मालिकों को दिए सख्त निर्देश

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

जिला में पंजीकृत सभी प्रिंटिंग प्रेस को चुनाव पैम्फलेट, पोस्टर और संबंधित सामग्री की छपाई और प्रकाशन के संबंध में आगामी लोकसभा चुनावों के मद्देनजर जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी निशांत कुमार यादव ने दिशा-निर्देश जारी किए हैं। सभी पंजीकृत मुद्रकों और प्रकाशकों को नोटिस जारी किया है, जिसमें बताया गया कि चुनाव पैम्फलेट, पोस्टर आदि की छपाई और प्रकाशन प्रतिनिधित्व की धारा 127-ए के प्रावधानों द्वारा नियंत्रित किया जा रहा है। जिला निर्वाचन अधिकारी ने प्रिंटिंग प्रेस मालिकों को निर्देश दिए हैं कि वे बिना जांच पड़ताल व नियमों के विरूद्ध जाकर कोई भी चुनाव प्रचार सामग्री प्रकाशित न करें।

चुनाव के दौरान मुद्रक व प्रकाशक के नाम के बिना चुनाव से संबंधित पम्पलेट व पोस्टर आदि छापना जनप्रतिनिधि अधिनियम 1951 की धारा 127 ए का उल्लंघन है और ऐसा करने वाले प्रिंटर के खिलाफ भारतीय दंड संहिता की धारा-188 के तहत कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। जिसमें छह महीने की सजा से लेकर प्रिंटिंग प्रेस का लाइसेंस निरस्त करने का प्रवाधान है। उन्होंने कहा कि चुनाव से संबंधित हर सामग्री पर मुद्रक व प्रकाशक का नाम अवश्य छापें। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग ने लोकसभा उम्मीदवारों के खर्च की सीमा निर्धारित की हुई है।

संक्षिप्त समाचार

क्रिएंजा टाइल्स का लोकार्पण करते कंपनी के अधिकारी।

दुनिया में बढ़ी भारतीय चीजों की मांग: देवेन सेरसिया

गुरुग्राम। गुजरात बेस्ड टाइल निर्माता कंपनी क्रिएंजा टाइल्स ने अपना नया कलेक्शन लांच करने के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकल फॉर वोकल अभियान को और अधिक मजबूत करने पर बल दिया। नए कलेक्शन की भव्य लांचिंग पर कंपनी के सीएमडी देवेन सेरसिया ने कहा कि मिट्टी की चीजों से लेकर हवाई जहाज तक का निर्माण करना भारत ने शुरू कर दिया है। भारत में निर्मित वस्तुओं की डिमांड देश ही नहीं, दुनिया में बढ़ी है। सीएमडी देवेन सेरसिया ने कहा कि भारत के युवाओं ने दुनियाभर में अपनी प्रतिभा से देश का नाम रोशन किया है। भारत में भी इन युवाओं की ऊर्जा सही दिशा में लगे, इसके प्रयास हुए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस तरह से हर क्षेत्र में लोकल फॉर वोकल को बढ़ावा दिया, उससे निम्न तबके का भी उत्थान हुआ है। देवेन सेरसिया ने कहा कि कंपनी टाइल निर्माण के क्षेत्र में नए इनोवेशन के लिए कमिटेड हैं। परिवर्तन कलेक्शन का मुख्य उद्देश्य भी यही है। इतना ही नही इवेंट में आए तमाम लोगों ने इन क्रांतिकारी डिजाइन और शानदार क्वालिटी की सराहना की। अगले महीने यानी जून से यह नया कलेक्शन बाजार में आ जाएगा। कंपनी के निदेशक गौरव मेहता ने कहा कि क्रिएंजा कंपनी परिसर में अपने देश के ही युवाओं को कंपनी में प्राथमिकता दी जाती है। क्रिएंजा के नए कलेक्शन पर उन्होंने कहा कि कंपनी लगातार टाइल्स बनाने के क्षेत्र में नए प्रयोग करती रहती है, ताकि लोगों को बेहतर गुणवत्ता के साथ-साथ नए डिजाइन उपलब्ध हों।

मतदान प्रक्रिया में स्कूली बच्चों का भी होगा योगदान

गुरुग्राम। 18वीं लोकसभा के तहत 25 मई को होने वाले लोकसभा चुनावों में मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय द्वारा एक नई पहल की गई है, जिसमें स्कूली बच्चों को जोड़ा गया है। उन्हें नकद इनाम से पुरस्कृत किया जाएगा। इस पहल के तहत बच्चों द्वारा इस बार अपने अभिभावकों को मतदान करने के लिए प्रेरित किया जाएगा और मतदान के दिन वोट करने के बाद परिवार के मतदाताओं की उंगली पर लगी नीली स्याही के साथ सेल्फी अपलोड करनी होगी। जिला स्तर पर ड्रॉ के माध्यम से प्रथम, द्वितीय व तृतीय विजेताओं को क्रमशः 10 हजार रुपये, 5 हजार रुपये और 2.5 हजार रुपये का नकद इनाम दिया जाएगा। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी निशांत कुमार यादव ने बताया कि इस पहल के तहत जिस स्कूल के विद्यार्थी सबसे अधिक सेल्फी अपलोड करेंगे, उस स्कूल को भी 25 हजार रुपये का विशेष पुरस्कार दिया जाएगा। सेल्फी अपलोड करने के लिए पोर्टल पर एक लिंक विकसित किया गया है, जोकि मतदान के दिन यानी 25 मई को खुलेगा। सुबह 7 बजे से मतदान के साथ ही सेल्फी अपलोड करने का लिंक स्कूली बच्चों के लिए खुल जाएगा और रात्रि 8 बजे तक सेल्फी अपलोड की जा सकेगी।

बच्चों ने मतदान करने के लिए किया जागरुक

फरीदाबाद। एनएच-2एम स्थित मॉम टू मॉम कान्वेंट स्कूल में लोकसभा आम चुनाव में मतदाताओं को जागरूक कर बढ़-चढकर मतदान करने व मतदान प्रतिशत को बढ़ाने के लिए जागरूकता अभियान चलाया गया। प्राचार्य श्रीमति रेखा रावत के मार्गदर्शन व विजय रावत के निर्देशन में स्कूल के नन्हें मुन्हें बच्चों ने सलोगन जिसपर लिखा था वोट फॉर इंडिया,फोरगेट दा रेस्ट वोट फॉर बेस्ट, मतदान करना हम सबका फर्ज है,सारा काम छोड़ दो सबसे पहले वोट दो से आमजन को वोट डालने के लिए प्रेरित व जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। श्रीमति रेखा रावत ने कहा कि मतदान हमारा अधिकार है और नागरिक कर्तव्य भी अत: अपने अधिकार का सही प्रयोग करें। सही और गलत की पहचान करके ही मतदान करें अपने देश की बागडोर सही हाथों में सौंपें 1 हमारा वोट ही हमारा भविष्य तय करेगा अत: परिवार सहित जाएं और आपने बल का सही प्रयोग करें। सरकार निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें का संदेश लिखकर आमजन को वोट डालने के लिए प्रेरित व जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

गुरुग्राम पुलिस ने बरामद किए गए मादक पदार्थों को किया नष्ट

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

नशे के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए गुरुग्राम पुलिस द्वारा अलग-अलग मामलों में बरामद किए गए मादक पदार्थों को सीपी विकास कुमार अरोड़ा की अध्यक्षता में गठित कमेटी द्वारा नष्ट किया गया।

कमेटी द्वारा मादक पदार्थों को सेक्टर-37 इन्डस्ट्रीयल एरिया में स्थित बायोटिक वेस्ट लिमिटेड कंपनी में नष्ट किया गया। नष्ट किए गए मादक पदार्थों में 147.208 किलोग्राम गांजा, 18 ग्राम चरस, 90.190 ग्राम हेरोइन, 92.2 ग्राम सुल्फा, 6.7 ग्राम कोकैन 53.970 किलोग्राम चुरापोस्त व 22.89 ग्राम स्मैक थे। सीपी विकास कुमार अरोड़ा ने कहा कि गुरुग्राम पुलिस द्वारा मादक पदार्थों के सेवन के दुष्परिणामों एवं अवैध मादक पदार्थों के व्यापार के प्रति लोगों को विभिन्न माध्यमों से जानकारी देकर जागरुक किया जा रहा है। इस दौरान दीपक पुलिस उपायुक्त मुख्यालय, सुशीला अतिरिक्त पुलिस आयुक्त मुख्यालय मौजूद रहे।

महंगे मोबाइल फोन छीनने के आरोप में दो गिरफ्तार

- तीन दर्जन से भी अधिक वारदातों को दे चुके थे अंजाम
- पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 12 हजार रुपए भी किए बरामद

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

सामान का ऑर्डर देने के नाम पर मोबाइल छीनने के आरोपी पुलिस गिरफ्त में।

महंगे मोबाइल फोन्स झपटकर उन्हें दिल्ली में बेचने वाले एक गिरोह को पुलिस ने काबू किया है। वह छीने गए मोबाइल फोन्स को दिल्ली की गफ्फार मार्केट में बेचता था। आरोपी अब तक तीन दर्जन वारदातों को अंजाम दे चुके थे।

एसीपी क्राइम वरुण दहिया ने बताया कि 7 मई को एक व्यक्ति ने थाना डीएलएफ में शिकायत दी कि उसकी व्यापार केंद्र में क्रॉकरी की दुकान है। एक व्यक्ति ने उसकी दुकान पर डिनर सेट ऑर्डर किया और कहा कि पैसे गलेरिया मार्केट में आकर ले लेना। जब वह गलेरिया मार्केट में रुपए लेने के लिए गया तो उस व्यक्ति ने कहा कि वह अपना फोन भूल आया है। पैसे उसे अपने सीनियर से लेने हैं। पीड़ित ने अपना आईफोन मोबाइल उसे कॉल करने के लिए दे दिया। फोन पर बात करते हुए वह व्यक्ति कुछ दूर चला गया और वापस नहीं आया। उसने उसका फोन भी बंद कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

पुलिस ने इस मामले में जांच-पड़ताल की और शक के आधार पर दो युवकों को पकड़ा। आरोपियों की पहचान अमित शर्मा व संजय के रूप में हुई है। आरोपियों ने बताया कि वे दिल्ली, यूपी और गुरुग्राम में चोरी व गबन करते हैं। आरोपियों ने बताया कि वह पहले दुकान की रेकी करता था। आसपास ऐसी बिल्डिंग देखता था, जहां लिफ्ट की सुविधा हो। फिर दुकान के मालिक को सामान का बड़ा ऑर्डर देता था। इसके बाद वह सामान के पैसे किसी ऐसी जगह पर लेने के लिए बुलाता था, जिस बिल्डिंग में लिफ्ट हो। ऐसा इसलिए कि भगाने में आसानी हो जाए।

विद्यार्थियों को सफाई रखने की शपथ दिलाई

- स्वच्छता पखवाड़ा के तहत एनपीटीआई ने चलाया अभियान

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

विद्युत मंत्रालय भारत सरकार के राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान (एनपीटीआई) कॉर्पोरेट कार्यालय सेक्टर - 33 फरीदाबाद में स्वच्छता पखवाड़ा की शुरूआत की गई। स्वच्छता पखवाड़ा 16 से 31 मई तक चलाया जाएगा। इस दौरान एनपीटीआई की महानिदेशक डॉ. तृप्ता ठाकुर ने कार्यालय के सभी अधिकारियों कर्मचारियों और विद्यार्थियों को सफाई रखने और अपने आसपास सफाई रखवाने की शपथ दिलाई।

एनपीटीआई की महानिदेशक डॉ. तृप्ता ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने महात्मा गांधी जी की जयंती पर सफाई के लिए एक दीपक जलाया था जो अभी तक निरंतर जल रहा है और भविष्य में भी जलता रहेगा। आज उस दीपक की रोशनी इतनी फैल चुकी है कि पूरे देश के लोग अब सफाई की ओर ध्यान देने लगे हैं खुद तो सफाई रखते ही है अगर कोई और भी गंदगी करता है तो उसे भी रोकते हैं और सफाई का पाठ पढाते हैं। उन्होंने कहा कि विकसित भारत देश की कल्पना बिना स्वच्छता के संभव नही है। डा. ठाकुर ने कहा कि एनपीटीआई में भी समय - समय पर सफाई अभियान चलाया जाता है इसका नतीजा ये है कि आज एनपीटीआई परिसर पूरी तरह से साफ-सुथरा रहता है। वहीं उन्होंने अधिकारियों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को शपथ दिलाते हुए कहा कि आप लोग न तो गंदगी फैलाएंगे और न ही फैलाने देंगे। इस दौरान एनपीटीआई की महानिदेशक डॉ. तृप्ता ठाकुर के साथ प्रधान निदेशक डा. मंजू माम, प्रोजेक्ट निदेशक डा. एन के श्रीवास्तव, सिम्युलेटर निदेशक डी एस साहू, एडमिन निदेशक श्रीमति मधुबाला कुमार, ट्रेनिंग निदेशक एन आर हल्दर सहित सभी उप निदेशक, सह निदेशक स्टाफ कर्मचारी भी मौजूद रहे।

कन्या महाविद्यालय में चुनावी ड्यूटी कर्मियों के लिए बनाया है सुविधा केंद्र

गुरुग्राम। लोकसभा चुनाव के छठे चरण के तहत चुनावी ड्यूटी में शामिल अधिकारी व कर्मचारी अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके। यह सुनिश्चित करने के लिए सेक्टर 14 स्थित राजकीय कन्या महाविद्यालय में मतदान सुविधा केंद्र बनाया गया है। सुविधा केंद्र पर 19 मई से बैलेट पेपर के माध्यम मतदान का कार्य शुरू होगा जोकि 24 मई तक जारी रहेगा। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी निशांत कुमार यादव ने बताया कि जिला में चुनावी ड्यूटी में शामिल ऐसे कर्मचारी जो हरियाणा प्रदेश के निवासी है व गुड़गांव लोकसभा क्षेत्र से संबंध नही रखते हैं।

डीपीएसजी स्कूल में दो दिवसीय कैरम प्रतियोगिता की शुरुआत

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

डीपीएसजी स्कूल सुशांत लोक-1 में अंतर विद्यालय कैरम प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। दो दिनों तक चलने वाली इस प्रतियोगिता में 12 विद्यालयों के लगभग 100 प्रतिभागी विभिन्न आयु वर्गों की 6 अलग-अलग प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले रहे हैं।

गुरुग्राम कैरम संघ के अध्यक्ष बोधराज सीकरी ने बताया कि जिला कैरम संघ कैरम के खेल को विद्यार्थियों में ज्यादा से ज्यादा लोकप्रिय बनाने के लिए कई कदम उठाएगा। उन्होंने कहा कि कैरम का खेल खिलाड़ियों की एकाग्रता को बढ़ाता है जिससे विद्यार्थियों को उनकी पढ़ाई में काफी मदद मिलती है। कैरम बच्चों को मोबाइल की रेडिएशन से दूर रखने में भी मदद करता है।

इस खेल में परिवार की चार पीढ़ियां एक साथ खेलकर मनोरंजन भी कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त कैरम के खेल में अर्जुन अवार्ड, स्पोर्ट्स कोटा में नौकरियां, स्कॉलरशिप, कैश अवॉर्ड्स, विश्व व एशियन प्रतियोगिताओं में सहभागिता भी विद्यार्थियों को कैरम खेलने के लिये प्रेरित करती है।

मोदी की नीतियों पर सभी को भरोसा: नवीन गोयल

- व्यापार प्रकोष्ठ भाजपा हरियाणा के संयोजक ने कनीना में किया डोर-टू-डोर प्रचार

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

डोर-टू-डोर प्रचार के दौरान व्यापार प्रकोष्ठ भाजपा के संयोजक नवीन गोयल।

व्यापार प्रकोष्ठ भाजपा हरियाणा के संयोजक नवीन गोयल ने भिवानी-महेंद्रगढ़ से भाजपा प्रत्याशी धर्मबीर सिंह के लिए कनीना में डोर-टू-डोर अभियान चलाकर उनके पक्ष में मतदान की अपील की। इस दौरान लोगों ने नवीन गोयल का गर्मजोशी से स्वागत किया।

अभियान के दौरान नवीन गोयल ने कहा कि चुनाव का काउंटडाउन शुरू हो गया है। चुनाव होने में मात्र 8 दिन बाकी हैं। हम सबको तीसरी बार मोदी सरकार 400 पार कराने के लिए एक-एक वोट पोल करानी है। उन्होंने कहा कि पूरे हरियाणा में सभी 10 सीटों पर भाजपा की लहर है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों पर हर किसी को विश्वास है। हर किसी को इन नीतियों का लाभ मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस तरह से सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के लिए काम किया है, उससे साफ है कि भारत देश ही नहीं, दुनिया में भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का वर्चस्व कायम है। सुपरपावर देशों ने जिस तरह से प्रधानमंत्री को अपने देशों में सम्मान दिया है, उससे हम कह सकते हैं हम भारत की साख दुनिया में मजबूत करने वाले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हैं। उन्होंने कहा कि देश की जनता वैसे तो जागरुक है। फिर भी हमें हर मतदाता से यही अपील की है कि वे मतदान के दिन भाजपा के चुनाव निशान कमल के फूल पर वोट दें, ताकि अपने देश का भविष्य मजबूत हाथों में हो। नवीन गोयल ने कहा कि युवाओं, बुजुर्गों, किसानों, बेरोजगारों के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में ऐतिहासिक कार्य किए हैं।

कारगर साबित हो रहा टोल फ्री नंबर 1950

फरीदाबाद। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं उपायुक्त विक्रम सिंह ने बताया कि लोकसभा चुनाव को शांतिपूर्ण, निष्पक्ष एवं पारदर्शी ढंग से करवाने के लिए निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा टोल फ्री नंबर 1950 जारी किया गया है। निर्वाचन कार्यालय के टोल फ्री नंबर 1950 चुनाव से संबंधित जानकारी हासिल करने में कारगर साबित हो रहा है। इस पर आने वाले शिकायतों व अन्य चुनाव से संबंधित जानकारी के लिए त्वरित कार्रवाई की जा रही है। निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार स्थानीय लघु सचिवालय में प्रथम तल पर टोल फ्री नंबर के लिए विशेष तौर पर कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है।

भाजपा जिला कार्यालय अटल कमल पर आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान पूर्व विधायक केहर सिंह रावत।

तीसरी बार फिर सांसद बनेंगे कृष्णपाल: रावत

- भाजपा सरकार के कार्यकाल में पलवल का हुआ अभूतपूर्व विकास
- कांग्रेसी भ्रम फैला रहे, मैं भाजपा का था, हूं और रहूंगा: केहर सिंह

पायनियर समाचार सेवा। फरीदाबाद

हथीन के पूर्व विधायक केहर सिंह रावत ने भाजपा जिला कार्यालय अटल कमल पर आयोजित प्रेस वार्ता में कहा कि मैं भाजपा का निष्ठावान सिपाही हूं, पार्टी के साथ था, साथ हूं और भाजपा में रहूंगा। भाजपा का सिपाही होने के नाते लोकसभा चुनाव में भाजपा उम्मीदवार केंद्रीय राज्य मंत्री कृष्णपाल गुर्जर के साथ हूं। मेरे सभी समर्थक और कार्यकर्ता भाजपा के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर इस विजय अभियान में जुड़े हुए हैं। हथीन होडल पलवल क्षेत्र के मतदाताओं से ज्यादा से ज्यादा वोट भाजपा के पक्ष में दिलवाकर कृष्णपाल गुर्जर को को भारी मतों से विजयी बनाने का काम करेंगे। कांग्रेस प्रत्याशी ने राजनैतिक फायदा लेने के लिया झूठा प्रचार किया कि केहरसिंह रावत कांगेस में शामिल हो रहा है यह सरासर गलत है और उनके द्वारा जनता को गुमराह किया जा रहा है। मैंने पहले भी इस बात का खंडन किया और आज इस प्रेस वार्ता के माध्यम से मैं यह बताना चाहता हूं की यह कांग्रेस का झूठा प्रचार मात्र था। प्रेस वार्ता में लोकसभा संयोजक अजय गौड़, जिला अध्यक्ष राजकुमार वोहरा, चरणसिंह तेवतिया, भाजपा वरिष्ठ नेता यशबीर डागर जिला मीडिया प्रभारी विनोद गुप्ता, सह प्रभारी राज मदान, आभास अग्रवाल और रावत पाल के पंच उपस्थित रहे।

पूर्व विधायक केहर सिंह रावत ने कहा की आगामी 25 मई को हरियाणा प्रदेश में लोक सभा के चुनाव में जाट समाज भारी मात्र में भाजपा उम्मीदवार के लिए वोट करेगा। जाट समाज हमेशा देश की रक्षा, अन्न पैदा करने में अग्रणी रहा है। जाट समाज अच्छे से जानता है जितनी तरक्की मोदी जी और भाजपा सरकार के कार्यकाल में हुई, ऐसी कभी नहीं हुई । 55 साल के कांग्रेस के कार्यकाल में जाट समाज सबसे ज्यादा प्रभावित रहा और दुखी और परेशान रहा। कांग्रेस के शासनकाल में किस प्रकार से किसानों की जमीन को औने पौने दामों पर अधिग्रहण किया जाता था और कांग्रेस के राज में किस प्रकार से किसानों को तीन-तीन, पांच और 10 रुपए के चेक फसल खराब होने के मुआवजे के रूप में दिए जाते थे, उसको किसान आज तक नहीं भुला है। भाजपा की डबल इंजन सरकार ने किसानों को फसल बीमा योजना के माध्यम से पूरा मुआवजा देने का काम किया। किसानों के लिए अनेकों योजना लाकर उनको सशक्त बनने का काम भाजपा की सरकार ने किया है। जहां तक नौकरियों का सवाल है कांग्रेस के समय में हरियाणा प्रदेश में नौकरियों के नाम पर मंडी लगती थी, नौकरियों की खरीद होती थी। जिसके पास पैसा होता था उसे नौकरी मिलती थी और जिसके पास पैसा नहीं होता था तो किसान जमीन और गहने बेचकर अपने बच्चों के लिए नौकरी खरीदनी पड़ती थी।

एक प्रत्याशी ऐसा भी, दिन में करता है प्रचार, शाम को बेचता है पाव भाजी

निर्दलीय के रूप में दो बार विधानसभा व तीन बार लड़ चुका है लोकसभा का चुनाव, एक बार फिर से है मैदान में

संजय कुमार मेहरा। गुरुग्राम

लोकसभा चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी कुशेश्वर भगत सैनी पाव-भाजी बनाते हुए।

नाम-कुशेश्वर भगत सैनी...। काम-पाव भाजी का ठेला लगाना। ख्वाब-देश की संसद, प्रदेश की विधानसभा में पहुंचना। सोच व्यवस्था बदलने की। इसलिए वह दो बार विधानसभा और तीन बार लोकसभा का चुनाव लड़ चुका है। यह अलग बात है कि कामयाबी मिली या नहीं मिली। मिलेगी या नहीं मिलेगी। फिर भी वह चुनाव में नामांकन करके अपने प्रयास जारी रखे हुए हैं। खास बात यह भी है कि वह दो बार राष्ट्रपति के चुनाव के लिए भी नामांकन कर चुका है।

कुशेश्वर भगत सैनी मूलरूप से बिहार के मधुबनी जिला के गांव परसा के रहने वाले हैं। वर्ष 1996 से वे गुरुग्राम में पाव-भाजी का ठेला लगाते हैं। गुरुग्राम से पहले वे मायानगरी मुंबई में फिल्मों में किस्मत आजमाने गए थे। वहां पर फिल्मों में तो उनकी किस्मत ने साथ नहीं दिया, लेकिन मुंबई में वे पाव-भाजी बनाना सीखकर गुरुग्राम आ गए। यहां पर उन्होंने पाव-भाजी का ठेला लगाना शुरू किया। इसी के साथ ही उन्होंने जनसमस्याएं देखकर उनका सुधार करने की भी सोचते हुए खुद राजनीति में आने के प्रयास शुरू किए। वे किसी राजनीतिक दल से नहीं जुड़े हैं, लेकिन विधानसभा, लोकसभा के चुनाव में वे नामांकन करके चुनाव लड़ते हैं।

कुशेश्वर भगत सैनी कहते हैं कि गुड़गांव लोकसभा में 9 विधानसभाएं हैं और इनमें 900 समस्याएं हैं। जिनका निराकरण नहीं हो पाता। उनका चुनाव लड़ने का उद्देश्य यही है कि इस समस्याओं का समाधान होना चाहिए। जनहित के मुद्दों को सुलझाया नहीं जाता। कुशेश्वर भगत का कहना है कि वे देश में बदलाव लाना चाहते हैं। बहुत से मुद्दे ऐसे हैं, जिन पर कोई भी सरकार, कोई भी सांसद ध्यान नहीं देते। जनता त्रस्त रहती है। देश में ऐसी व्यवस्था उन्हें मंजूर नहीं। उनका कहना है कि हर बार वे चुनाव लड़ेंगे। अपने चुनाव प्रचार में सुबह 10 से सायं 5 बजे तक वे जनता के बीच अपना एजेंडा रखते हैं। इसके बाद सेक्टर-15 में पाव-भाजी का ठेला लगा लेते हैं।

दो बार राष्ट्रपति के लिए नामांकन की कोशिश

कुशेश्वर भगत सिर्फ विधायक या सांसद बनने के लिए ही चुनाव नहीं लड़ते, बल्कि वे राष्ट्रपति का भी चुनाव लड़ने की तैयारी रखते हैं। उन्होंने दो बार राष्ट्रपति पद के लिए नामांकन करने की कोशिश की, लेकिन नियम पूरे नहीं होने पर वे नामांकन नहीं कर पाए। वर्ष 2017 में उनके नामांकन पर मात्र 7 विधायकों ने सहमति दी थी। 2022 में दिल्ली के आम आदमी पार्टी के 35 विधायकों व गुरुग्राम के एक विधायक ने उन्हें सहमति दी थी।

अगले पांच दिनों में और झुलसाएगी गर्मी

● प्रदेश के 11 जिलों में येलो और 11 में ओरेंज अलर्ट की चेतावनी

● पारा जा सकता है 48 डिग्री के पार

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

आगामी पांच दिन हरियाणा लू की तपन में तपेगा। शुक्रवार को सिरसा सबसे से ज्यादा गरम रहा। यहां पारा 47.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। बैशाख माह में हर रोज पारा 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ रहा है। हर रोज तापमान में बढ़ोतरी को देखते हुए मौसम विभाग ने प्रदेश में ओरेंज और येलो अलर्ट जारी किया है। 11 जिलों में येलो अलर्ट और 11 जिलों में ओरेंज अलर्ट की चेतावनी है।

प्रदेश में गर्मी का सितम लगातार बढ़ रहा है। लू के थपेड़ों और गर्म हवाओं से जनजीवन पूरी तरह प्रभावित है। सुबह सात बजे ही आसमान से गरम अंगारे बरसने शुरू हो जाते हैं। दोपहर के समय बाहर निकला दुश्वारी साबित हो रहा है।

हरियाणा में मौसम विभाग की ओर से जारी चेतावनी में कहा है कि 17 से 21 मई तक लू चलेंगी और गर्मी और बढ़ेगी। आशंका है कि पारा 48 डिग्री को भी पार कर सकता है। इस प्रदेश में कुछ हिस्सों में पारा 41 से 43 डिग्री सेल्सियस तक है। आगामी पांच दिनों में उत्तर हरियाणा के जिलों में पारा 42 से 45 डिग्री और दक्षिण हरियाणा के जिलों में 45 से 48 डिग्री सैल्सियस के पार जा सकता है। मौसम विशेषज्ञ डा. मनमोहन सिंह का कहना है कि अब धीरे धीरे गर्मी का पीक आएगा। आगामी पांचों दिनों तक लू के थपेड़ों का सामना करना पड़ेगा और पारा अपने पीक पर जा सकता है।

प्रदेश में अधिकतम तापमान का ब्यौरा

जिला	अधिकतम तापमान
रोहतक	45.9 डिग्री सेल्सियस
चरखी-दादरी	45.8 डिग्री सेल्सियस
गुरुग्राम	44.6 डिग्री सेल्सियस
हिसार	46.3 डिग्री सेल्सियस
झज्जर	45.7 डिग्री सेल्सियस
जींद	46.7 डिग्री सेल्सियस
महेंद्रगढ़	46.0 डिग्री सेल्सियस
पलवल	46.0 डिग्री सेल्सियस
मेवात	46.9 डिग्री सेल्सियस
सोनीपत	45.8 डिग्री सेल्सियस

हीट वेव के चलते स्कूलों का टाइम भी बदला

चंडीगढ़। हरियाणा सरकार ने प्रदेश में हीट वेव का असर देखते हुए स्कूलों के समय में बदलाव कर दिया है। स्कूलों को नई समय सारिणी शनिवार से ही लागू होगी और 31 मई तक जारी रहेगी। एक जून से स्कूलों में गर्मी की छुट्टियां शुरू हो जाएंगी। विद्यालय शिक्षा निदेशालय की तरफ से जारी निर्देशों के अनुसार राज्य में सिंगल शिफ्ट वाले स्कूल सुबह एक घंटा पहले लगेंगे। अर्थात शनिवार से सिंगल शिफ्ट वाले स्कूल सुबह सात बजे से दोपहर 12 बजे तक लगेंगे। दोहरी शिफ्ट वाले स्कूल सुबह सात बजे से सुबह 11.30 बजे तक और दूसरी शिफ्ट 11.45 से शाम 4.15 तक लगेगी। निदेशालय ने सभी जिला शिक्षा अधिकारियों को ऑर्डर के पालन करने के निर्देश दिए गए हैं।

कार्यक्रम जारी, चुनाव के बाद होगा वेटनरी सर्जन का साक्षात्कार

चंडीगढ़। हरियाणा लोक सेवा आयोग पशु पालन विभाग में वेटनरी सर्जन के लिए भर्ती की इंटरव्यू का शैड्यूल जारी कर दिया है। प्रदेश में 25 मई को लोकसभा चुनाव के बाद 27 मई से वेटनरी सर्जन के लिए इंटरव्यू शुरू होंगे।

वेटनरी सर्जन के 383 पदों के लिए 570 युवाओं को शॉर्टलिस्ट किया गया है, इन्होंने इस साल सात अप्रैल को विषय ज्ञान की परीक्षा पास की थी। हरियाणा के पशुपालन और डेयरी विभाग में यह भर्तियां की जानी हैं। छह दिन तक सुबह और दोपहर बाद दो पालियों में 50-50 युवाओं के इंटरव्यू लिए जाएंगे। एचपीएससी ने 2022 में इन पदों के लिए भर्तियां निकाली गई थी। आवेदन की प्रक्रिया 15 दिसंबर 2022 से शुरू हुई थी। इस भर्ती के लिए आयोग 383 पदों पर भर्ती करेगा। इस भर्ती के लिए उम्मीदवारों की उम्र 22 से 42 वर्ष रखी गई थी। आयु की गिनती एक जुलाई 2022 से की जाएगी। आरक्षित श्रेणी के उम्मीदवारों के लिए ऊपरी आयु सीमा में छूट दी गई है।

भाजपा प्रत्याशियों का प्रचार कर रहे जजपा के विधायक

● पार्टी ने स्पीकर के समक्ष याचिका दायर कर की कार्रवाई की मांग

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

पार्टी विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले जननायक जनता पार्टी के दो विधायकों की सदस्यता पर तलवार लटक गई है। पार्टी ने शुक्रवार को हरियाणा विधानसभा स्पीकर के समक्ष याचिका दायर करके पार्टी विरोधी गतिविधियों में लिप्त होकर दलबदल कानून के तहत कार्रवाई की मांग की है। जजपा ने यह याचिका दोनों विधायकों को दो बार कानूनी नोटिस जारी करने के बाद लगाई है।

हरियाणा में भाजपा के साथ गठबंधन टूटने के बाद जननायक जनता पार्टी बिखर चुकी है। जजपा के विधायक रामनिवास सुरजाखेड़ा तथा जोगी राम सिहाग इन दिनों भाजपा प्रत्याशियों के लिए प्रचार कर रहे हैं। पार्टी के कार्यालय सचिव रणधीर सिंह ने शुक्रवार को बताया कि सुरजाखेड़ा ने नरवाना में तथा जोगी राम सिहाग ने हिसार में भाजपा प्रत्याशी के साथ मंच साझा किया है, जबकि इन क्षेत्रों में जननायक जनता पार्टी के प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे हैं। रणधीर सिंह ने कहा कि दोनों विधायकों ने वर्ष 2019 में जजपा की टिकट पर चुनाव लड़ा था। अब वह जजपा प्रत्याशियों का समर्थन करने की बजाए भाजपा प्रत्याशियों का समर्थन कर रहे हैं। जिसके बाद पार्टी के संविधान के अनुसार दोनों विधायकों को दो बार कानूनी नोटिस जारी किए गए। जिसका उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। जिसके बाद आज ट्रिब्यूनल के नाते विधानसभा स्पीकर ज्ञान चंद गुप्ता के समक्ष याचिका दायर करके पार्टी विरोधी गतिविधियों में लिप्त होने का हवाला देकर दलबदल कानून के तहत कार्रवाई की मांग की है। रणधीर सिंह ने बताया कि दोनों विधायकों की प्रिंट व इलेक्ट्रोनिक मीडिया में प्रकाशित खबरें तथा वीडियो रिकार्डिंग को सबूत बनाया गया है।

महावीर सिंह गुड्डू का सम्मान समस्त कलाकारों का सम्मान: नागेंद्र शर्मा

कुरुक्षेत्र। प्रदेश में कला के क्षेत्र में पहला पद्मश्री पुरस्कार आना समस्त कलाकारों के लिए गौरव की बात है। लोक कलाकार महावीर गुड्डू का सम्मान हरियाणा के सभी कलाकारों का सम्मान है। महावीर गुड्डू की कला के प्रति तपस्या और समर्पण के कारण उन्हें पद्मश्री सम्मान से नवाजा जाना युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी रहेगा। ये कहना था हरियाणा कला परिषद के निदेशक नागेंद्र शर्मा का। ये शब्द उन्होंने गत दिवस कला कीर्ति भवन में पद्मश्री महावीर गुड्डू का स्वागत करते हुए कहे। शर्मा ने कहा कि इससे पूर्व महावीर गुड्डू पंडित लखमीचंद राज्य पुरस्कार, हरियाणा कला रत्न अवॉर्ड, पंडित लखमीचंद शिक्षा एवं संस्कृति पुरस्कार के साथ-साथ संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किए जा चुके हैं।

कांग्रेस परिवारवाद के मोह में फंसी: सैनी

● मुख्यमंत्री ने कांग्रेस पर साधा निशाना

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने वंशवादी राजनीति को लेकर कांग्रेस पर निशाना साधते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि विपक्षी पार्टी परिवारवाद मोह में फंस गई है। सैनी ने कहा, कांग्रेस परिवारवाद मोह में फंस गई है। अपने शीर्ष स्तर पर यह गांधी परिवार है और हरियाणा में यह हुड्डा परिवार है।

रोहतक में, उनके (कांग्रेस) कई वरिष्ठ नेता हैं जो चुनाव लड़ सकते हैं लेकिन वे एक (हुड्डा) परिवार से बाहर नहीं आ सकते। उन्होंने हरियाणा के करनाल में एक सवाल के जवाब में पत्रकारों से कहा कि कांग्रेस की अंदरूनी कलह पहले भी सार्वजनिक मंचों पर सामने आ चुकी है। उन्होंने कहा कि 2019 के लोकसभा चुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा और उनके बेटे दीपेंद्र सिंह हुड्डा क्रमश: सोनीपत और रोहतक से चुनाव लड़ रहे थे और दोनों हार गए। सैनी ने कहा, पिछली बार बापू-बेटा (भूपेंद्र सिंह हुड्डा और दीपेंद्र सिंह हुड्डा) ने चुनाव लड़ा था और दोनों हार गए थे। बापू इस बार लड़ाई से भाग गए हैं और अपने बेटे को (रोहतक से) चुनाव लड़ने के लिए छोड़ दिया है। वह इस बार फिर हारेंगे। हरियाणा की सभी दस लोकसभा सीट पर लोकसभा चुनाव के छठे चरण में 25 मई को मतदान होगा।

जेबीटी शिक्षकों को दो माह से नहीं मिला वेतन

चंडीगढ़। जेबीटी शिक्षकों को पिछले दो महीने से वेतन नहीं मिल रहा है। मौलिक शिक्षा निदेशक ने आज इस संबंध में जिला मौलिक शिक्षा अधिकारियों से रिपोर्ट तलब की है। साथ ही यह भी निर्देश दिए हैं कि कारणों का पता लगाते हुए तुरंत अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाए।

राकेश का इलाज कराएगी नि:स्वार्थ कदम संस्था

● किडनी की बीमारी से पीड़ित की पत्नी की भी हो चुकी है मौत

पायनियर समाचार सेवा। गुरुग्राम

किडनी की बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति के परिवार के साथ निस्वार्थ कदम संस्था के सदस्य।

शहर के जैकमपुरा निवासी राकेश अपनी पत्नी और दोनों बेटियों के साथ हंसी-खुशी जीवन व्यतीत कर रहा था। अचानक राकेश की पत्नी की दोनों किडनियां फेल हो गई। इलाज में राकेश ने कोई कसर नहीं छोड़ी, लेकिन कामयाबी नहीं मिली। लंबी बीमारी के चलते राकेश की पत्नी का देहांत हो गया।

अब दोनों बेटियों की जिम्मेदारी राकेश के कंधों पर आ गई। समय के साथ ही राकेश ने बेटियों की जिम्मेदारी ठीक से निभानी शुरू कर दी। बेटियों को खुश रखने की हर सम्भव मदद की। उसकी खुशी ज्यादा दिन नहीं चली। जांच में पता चला कि राकेश की दोनों किडनियां फेल हो गई हैं। इस तरह से राकेश पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। इलाज के लिए न तो पैसे थे और न ही अपनों का साथ। ऐसे में राकेश के दोस्तों ने निस्वार्थ कदम के संचालक प्रमोद राघव से सम्पर्क साधा। सारी स्थिति से अवगत करवाया।

विद्यार्थी व शिक्षक जमा नहीं करा रहे टैब, शिक्षा अधिकारियों को फटकार

पायनियर समाचार सेवा। चंडीगढ़

हरियाणा के स्कूलों में दसवीं तथा बारहवीं कक्षा पास करने वाले विद्यार्थी और सेवानिवृत्त होने वाले अध्यापक टेबलेट जमा नहीं करवा रहे हैं। कुछ ऐसी ही स्थिति उन अध्यापकों की भी है जिनके तबादले हुए हैं। तबादले के साथ ही अध्यापक टैब भी अपने साथ ले गए हैं।

शिक्षकों व छात्रों की कोताही का संज्ञान लेते हुए माध्यमिक शिक्षा निदेशक ने जिला शिक्षा अधिकारियों को फटकार लगाई है। इसके साथ उन्होंने 21 मई तक उन शिक्षकों व विद्यार्थियों की रिपोर्ट भी तलब की है, जिन्होंने अभी तक टेबलेट जमा नहीं कराए हैं। माध्यमिक शिक्षा निदेशक ने सभी शिक्षा अधिकारियों को पत्र लिखकर निर्देश दिए हैं कि जिन शिक्षकों व छात्रों ने टेबलेट जमा नहीं कराए हैं, संबंधित स्कूल मुखिया उन शिक्षकों व विद्यार्थियों से संपर्क कर उनसे टेबलेट और सिम को लेकर अवसर पोर्टल पर अपलोड करे। उन शिक्षकों व विद्यार्थियों की रिपोर्ट 21 मई तक मुख्यालय में जमा कराने के भी निर्देश दिए हैं।

चार छात्रों को मिला प्लेसमेंट

कुरुक्षेत्र। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के विधि संस्थान के कैम्पस प्लेसमेंट द्वारा चार विद्यार्थियों का फिनलीफ लॉ फर्म में चयन हुआ है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ सचदेवा ने चयनित विद्यार्थियों को बधाई दी है और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विधि संस्थान की निदेशिका प्रो. सुशीला चौहान ने विद्यार्थियों के चयन पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए बताया कि चयनित विद्यार्थियों में निधि, तनु सैनी, वाणिका गुप्ता व प्रिया शामिल हैं।

प्लेसमेंट कंवीनर डॉ. कृष्णा अग्रवाल ने भी चयनित विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं।

भाजपा को वोट की ताकत से सिखाएं सबक: महेंद्र प्रताप

दयाराम वशिष्ट। फरीदाबाद

कांग्रेस पार्टी एवं इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी पूर्व केबिनेट मंत्री चौधरी महेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि इस बार यह लड़ाई सिर्फ चुनावी नहीं है बल्कि संविधान व देश को बचाने की भी है। क्योंकि गरीब, दलित व पिछड़ा विरोधी मानसिकता से ग्रस्त भाजपा संविधान को बदलने की बात कह रही है।

ऐसे में इन जमलेबाज भाजपाईयों से अपने आपको बचाने का सही वक्त आ गया है, क्योंकि लोकतंत्र में वोट ही सबसे बड़ी ताकत होती है, इसलिए अपनी वोट की ताकत का एहसास कराओ। महेन्द्र प्रताप सिंह शुक्रवार को पलवल के फुलवाडी में आयोजित एक विशाल चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे। उनके साथ पलवल के पूर्व विधायक सुभाष चौधरी, जिला परिषद के पूर्व चेयरमैन बिजेन्द्र चांट, युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव एवं हरियाणा प्रभारी सत्यभान गहलौत तथा युवा कांग्रेस हरियाणा के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष मयंक चौधरी भी मुख्यरूप से मौजूद थे। जबकि रैली का संचालन आयोजक युवा कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष फिरेसिंह पोसवाल द्वारा किया गया। ग्रेस के लोकसभा प्रत्याशी चौधरी महेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि किसान की एमएसपी, युवा के रोजगार व व्यापारी की सुरक्षा देने के लिए कांग्रेस की जीत जरूरी है। क्योंकि मोदी की गारंटी जनता के समक्ष जुम्ले साबित हुई हैं।

सार्वजनिक सूचना

मेरी मुवक्किल श्रीमती मंजू देवी संपत्ति संख्या I-23 की मालिक हैं। क्षेत्रफल 71.07 वर्ग मीटर, खसरा संख्या 1238 से बाहर, I-ब्लॉक, प्रेम नगर-2, ग्राम किरारी सुलेमान नगर, नांगलोई, दिल्ली-110086 में स्थित है। दिल्ली विकास प्राधिकरण द्वारा श्रीमती मंजू देवी के पक्ष में पंजीकरण संख्या 2024/14/I/519, SR-VI-D नई दिल्ली के तहत कन्वेन्स डीड दिनांक 12.02.2024 के माध्यम से निष्पादित। उपरोक्त संपत्ति फेड बैंक फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के पास बंधक होने जा रही है। यदि किसी व्यक्ति/ बैंक/वित्तीय संस्थान के पास उपरोक्त संपत्ति के संबंध में कोई दावा/ग्रहणाधिकार, अधिकार, कोई आपत्ति है, तो उसे दस्तावेजी साक्ष्यों के साथ इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 15 दिनों के भीतर पंजीकृत अधिवक्ता के माध्यम से सलाहकार/अधोहस्ताक्षरी विशाल मेहन, ई-713, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली-110092 के पते पर सूचित किया जाना चाहिए। ऐसा न करने पर किसी भी दावे, ग्रहणाधिकार या आपत्ति को माफ कर दिया गया माना जाएगा। **एडवोकेट विशाल मेहन, ई-713, कड़कड़ डूमा कोर्ट, दिल्ली- 110092, मो. 9811215181**

सार्वजनिक सूचना

मेरी मुवक्किल श्रीमती किरण देवी पत्नी श्री कुन्दन मंडल प्लॉट नं. 35, क्षेत्रफल 15.8+20 वर्ग गज, खसरा नंबर 26/15 और 26/16 में से कुल क्षेत्रफल 35.8 वर्ग गज, अनाधिकृत कॉलोनी सैनिक एन्क्लेव विकास नगर, उत्तम नगर हास्टल, नई दिल्ली-110059 में स्थित संपत्ति की मालिक है। डीडीए द्वारा श्रीमती किरण देवी पत्नी श्री कुंदन मंडल के पक्ष में दिनांक 17.02.2021 को दो पंजीकृत प्राधिकरण पर्चियों 3607 और 3608 SR-II B, दिल्ली के माध्यम से निष्पादित। उपरोक्त संपत्ति फेड बैंक फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड के पास बंधक होने जा रही है। यदि किसी व्यक्ति/ बैंक/वित्तीय संस्थान के पास उपरोक्त संपत्ति के संबंध में कोई दावा/ग्रहणाधिकार, अधिकार, कोई आपत्ति है, तो उसे दस्तावेजी साक्ष्यों के साथ इस नोटिस के प्रकाशन की तारीख से 15 दिनों के भीतर पंजीकृत अधिवक्ता के माध्यम से सलाहकार/अधोहस्ताक्षरी विशाल मेहन, ई-713, कड़कड़डूमा कोर्ट, दिल्ली-110092 के पते पर सूचित किया जाना चाहिए। ऐसा न करने पर किसी भी दावे, ग्रहणाधिकार या आपत्ति को माफ कर दिया गया माना जाएगा। **एडवोकेट विशाल मेहन, ई-713, कड़कड़ डूमा कोर्ट, दिल्ली-110092, मो. 9811215181**

सार्वजनिक सूचना

यह सूचित किया जाता है कि प्लॉट संख्या K-210, सूरजपुर इंडस्ट्रियल एरिया, साइट -5 ,कासना ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश -201306 में स्थित है ! जिसकी मूल लीज डीड कहीं खो गयी है! जिसकी सूचना दिनांक 17 मई 2024 को ग्रेटर नोएडा थाना में दर्ज कराई गयी है! इस प्लॉट को सान्वी इंटरप्राइजेज रजिस्टर्ड ऑफिस K-210, सूरजपुर इंडस्ट्रियल एरिया, साइट-5, कासना, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश-201306, के नाम से हस्तांतरित हेतु आवेदन पत्र प्राप्त हुआ है ! जन साधारण /किसी को इस सम्बन्ध में कोई आपत्ति हो तब वह 15 दिन के अंदर छेत्रिय कार्यालय U.P.S.I.D.A सुरजपुर, ग्रेटर नोएडा में विविधक साक्षयों के साथ आपत्ति दर्ज करा सकता है ! नियोजित समयावधी में कोई सुसंगत आपत्ति प्राप्त न होने पर हस्तांतरण की कार्यवाही कर दी जाएगी !

अनिल कुमार शर्मा -छेत्रीय प्रबन्धक
U.P.S.I.D.A
ग्रेटर नोएडा

THE PIONEER CLASSIFIEDS

नाम परिवर्तन

मैं सुनील बापना सुपुत्र श्री पवित्र कुमार बापना निवासी सी-57, डीडीए फ्लेट्स गोल्फ व्यु अपार्टमेंट, नई दिल्ली-110017, ने अपना नाम बदल लिया है तथा एतद्पश्चात भविष्य के सभी उद्येश्यों के लिए सुनील कुमार बापना के नाम से जाना जाऊंगा ।

PD(451)C

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्री तरुण सरवाल पुत्र श्री टी.बी. सरवाल निवासी नंबर 2डी बेल्वेडियर कोर्ट नंबर 6, स्पेंसर रोड, फ्रेज़र टाउन, बेंगलुरु नॉर्थ, फ्रेज़रटाउन, बेंगलुरु, कर्नाटक 560005, उनकी मां, स्वर्गीय श्रीमती सीता सरवाल धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री टी.बी. सरवाल, मालिक और निवासी 1303 ए, बेवर्ली पार्क 2, एमजी रोड, गुड़गांव, हरियाणा 122022, का निधन 20 जनवरी 2024 को हो गया है।

उनकी पंजीकृत वसीयत {वसीयत संख्या 68, पंजीकरण वर्ष 2006-2007 (दिनांक 20 अप्रैल 2006), पुस्तक संख्या 3} के अनुसार, संपत्ति-1303 ए, बेवर्ली पार्क 2, एमजी रोड, गुड़गांव, हरियाणा-122022 का सम्पूर्ण स्वामित्व उनके एक मात्र जीवित पुत्र श्री तरुण सरवाल को प्राप्त हो गया है। उनके एक मात्र कानूनी उत्तराधिकारी श्री तरुण सरवाल (पुत्र) हैं। यदि किसी को इस संबंध में कोई आपत्ति है, तो वह इस सूचना के प्रकाशन के 7 दिनों के भीतर अधिवक्ता के कार्यालय में आपत्ति दर्ज करा सकता है।

प्रवीन रस्तोगी (अधिवक्ता)
ENRL No. D-244/06
आरजेड-97 खुशी राम पार्क, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059 **मो.नं.: 9810986643**

सूचना

सेबी (लिस्टिंग दायित्व और प्रकटीकरण आवश्यकताएं) विनियम, 2015 के विनियमन 47 के साथ पठित विनियमन 29 के अनुसार नोटिस दिया जाता है, कि कंपनी के निदेशक मंडल की एक बैठक शुक्रवार, 24 मई, 2024 को आयोजित की जाएगी, अन्य बातों के साथ-साथ, 31 मार्च 2024 को समाप्त तिमाही और वर्ष के लिए कंपनी के लेखापरीक्षित वित्तीय परिणामों पर विचार करने और अनुमोदित करने हेतु।

इस नोटिस में निहित जानकारी कंपनी की वेबसाइट **www.cubical90.com** के साथ-साथ स्टॉक एक्सचेंज की वेबसाइट अर्थात बीएसई लिमिटेड **www.bseindia.com** पर भी उपलब्ध है।

कृते क्यूबिकल फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड
हस्ता/-
स्थान: नई दिल्ली — **(अश्वनी कुमार गुप्ता)**
दिनांक: 17.05.2024 — **प्रबंध निदेशक**

This may be published in Newspaper and TV from the day following the last date for withdrawal of candidature and two days before the date of poll

Format C-1

Declaration about criminal cases

(As per the judgement dated 25th September, 2018, of Hon'ble Supreme Court in WP (Civil) No 536 of 2011 (Public Interest Foundation & Ors. Vs Union of India & Anr.)
Name and address of candidate: Singh Ram S/o Mam Chand, Vill- Bharampur, Bharangi, Tehsil- Bawal, Distt. Rewari
Name of Political Party: Independent
Name of Election: House of The People
Name of Constituency: Gurgaon-09
I Singhram (name of candidate), a andidate for the above mentioned election, declare for public information the following details about my criminal antecedents:
(A) Pending criminal cases
Sl. No.-1
Name of Court: SDJM
Case No. and Dated: CHI/923/19
Status of Case(s): Evidence
Section(s) of Acts concerned and brief description of offence(s): 323, 294, 506, IPC
(B) Details about cases of conviction for criminal offences: NA
***In the case of election to Council of States or election to Legislative Council by MLAs, mention the election concerned in place of name of constituency.**

Format C-7

(for political parties to publish in the newspapers, social media platforms & website of the party)

Information regarding individuals with pending criminal cases, who have been selected as candidates, along with the reasons for such selection, as also as to why other individuals without criminal antecedents could not be selected as candidates

(As per the Commission's directions issued in pursuance of the Order dated 13.02.2020 of the Hon'ble Supreme Court in contempt petition(C) no. 2192 of 2018 in WP(C) no. 536 of 2011)

Name of Political Party : **INDEPENDENT**
***Name of the Election** : **GENERAL ELECTION TO LOK SABHA 2024**
Name of State/ UT : **DELHI**
(1) Name of the Constituency - **05-NORTH WEST DELHI**
Name of the candidate - **PARMENDRA MANJHI**

Sl.No.			
1.	**Criminal antecedents**		
(i)	a.	FIR No. With name and address of police station concerned.	656/2015, P.S, Kanjhawala
	b.	Case no. with name of the court	612/2018, SH. BABRU BHAN, ADD. SESSION JUDGE, ROHINI COURT, DELHI
	c.	Section(s) of concerned Acts/Codes involved (give no. of the section, e.g. section.... Of IPC, etc.)	147,149,186,353,332,333,342, 506/34 IPC
	d.	Brief description of offense	ASSAULT BY MOB DURING PUBLIC DEALING
	e.	Whether charges have been framed (mention YES or NO)	YES
	f.	If answer against (e) above is YES, then give the date on which charges were framed.	02/08/2023
	g.	Whether any appeal /application for revision has been filed against the proceedings (mention YES or NO)	YES
2.		The reasons for the selection of the candidate Selection shall be with reference to the qualifications, achievements and merit of the candidate, and not mere “winnability” at the polls (not more than 100 words	The candidate is prominent among the people of the constituency and helped the needful people during the hard time. The candidate always ready for social & developmental works of the area. Thus, he has been preferred over others.
3.		Reasons as to why other individuals without criminal antecedents could not be selected as candidates (not more needful people during the hard time. not more than 100 words)	The candidate is prominent among the people of the constituency and helped the needful people during the hard time. The candidate is always ready for social & developmental works of the area. Thus, he has been preferred over others.

(2) Name of the Constituency- **05-NORTH WEST DELHI**
Name of the candidate- **Parmendra Manjhi**
* In the case of election to Council of States or States or election to Legislative Council by MLAs. mention the election concerned in place of name of Constituency.

PARMENDRA MANJHI
(Signature of the Candidate INDEPENDENT)

Lost & found

I, Rajiv Sapra S/o Arjun Dass Sapra R/o Flet No. 385, GF H.I.G Asha Pushp Vihar, Sector-14, Kaushambi, Ghaziabad (UP) declare that I, have lost the Original Principal Deposit Receipt No. 3736 dt. 23.12.1999, 3739 dt 04.01.2002, 589 dt. 01.03.2000, 4800 dt. 11.03.2000, 5591 dt. 15.05.2000, 5660 dt. 30.09.2000, 5671 dt. 10.11.2000 & 127 dt. 29.06.2010 If found/seen, please contact- 9999340918. Deponent

PUBLIC NOTICE

The general public is hereby informed that **my MRS. NASEEM BANO W/O MR. MERAJUDDIN R/O SITUATED AT WARD NO. VII, GALI VAKIL WALI, KUCHA PANDIT, LAL KUAN, DELHI-110006** has severed/ disowned their Son **MOHAMMAD SAAD S/O Mr. MERAJUDDIN R/o O SITUATED AT WARD NO.VII, GALI VAKIL WALI, KUCHA PANDIT, LAL KUAN, DELHI-110006** and from all their movable and immovable properties from the date of publication of this notice due to the bad behavior by him towards my clients, if anybody deals/incurs any liability/loss due to them. My client shall have no liability of any transaction/dispute in any manner in the future towards the above said persons. Anyone dealing with him shall be dealing at their own risk and responsibility, my clients shall not be liable and responsible for the same. **BURHAN ZAKI, (ADVOCATE), CH.NO.-169, WESTERN WING TIS HAZARI COURT, DELHI-54.**

सांकेतिक कब्जे की सूचना

ICICI Bank | **शाखा कार्यालय :** आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, शॉल टॉवर, प्लॉट नंबर- 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली- 110005

जबकि

अधोहस्ताक्षरी ने वित्तीय परिसंपत्तियों के प्रतिभूतिकरण एवं पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के अंतर्गत आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में तथा प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के साथ पठित धारा 13(12) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए नीचे वर्णित कर्ज़दारों को माँग सूचनाएँ निर्गमित की थीं, जिसमें उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर सूचना में वर्णित राशि का प्रतिभुगतान करने को कहा गया था।

कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार/ज़मानतदार राशि का प्रतिभुगतान करने में विफल रहे हैं, अतएव एतद् द्वारा कर्ज़दार तथा जनसाधारण को सूचित किया जाता है कि अधोहस्ताक्षरदाता द्वारा सांकेतिक अधिग्रहण किया गया है जो कि उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत नियम 8 में दर्शाया गया है। संपत्ति तथा अधिग्रहण की तिथि नीचे दर्शाई गई है। एतद् द्वारा विशेष रूप से कर्ज़दार एवं जनसाधारण को संपत्ति के संव्यवहार नहीं करने के लिए सचेत किया जाता है तथा संपत्ति के साथ कोई भी संव्यवहार इसमें वर्णित राशि तथा उस पर आगे ब्याज हेतु आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभार के अधीन होगा।

क्र. सं.	कर्ज़दार/ सह-कर्ज़दार का नाम/ ऋण खाता क्र.	संपत्ति का विवरण/ सांकेतिक कब्ज़े की तिथि	डिमांड नोटिस की तिथि/ डिमांड नोटिस में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	आनंद कुमार मिश्रा/नरोत्तम प्रसाद मिश्रा/LBDEL00005768151/ LBDEL00005854800	डी.डी.ए. एलआईजी फ्लैट, फ्लैट नंबर- 514, तीसरी मंजिल, पॉकेट-सी ब्लॉक-ए, लोकनायकपुरम स्थित, बक्करवाला, नई दिल्ली- 110034/ 14 मई, 2024	दिसंबर 14, 2023 रु. 15,59,516/-	दिल्ली/ एनसीआर

उपरोक्त दर्शाए गए कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार एवं ज़मानतदारों को सूचित किया जाता है कि इस सूचना के प्रकाशन से 30 दिनों के अंदर राशि का भुगतान करें, अन्यथा 30 दिनों की समाप्ति के पश्चात् अधिग्रहित संपत्ति की नीलामी कर दी जाएगी जो पूर्णत: नियम 8 और 9 प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के अंतर्गत है।

दिनांक : मई 18, 2024 — **प्राधिकृत अधिकारी**
स्थान : दिल्ली/एनसीआर — **आईसीआईसीआई बैंक लि.**

सांकेतिक कब्ज़े की सूचना

ICICI Bank | **शाखा कार्यालय :** आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड, शॉल टॉवर, प्लॉट नंबर- 23, न्यू रोहतक रोड, करोल बाग, दिल्ली-110005

जबकि

अधोहस्ताक्षरी ने आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्राधिकृत अधिकारी के रूप में वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्निर्माण तथा प्रतिभूति हित प्रवर्तन अधिनियम, 2002 के तहत और प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के नियम 3 के साथ पठित अधिनियम की धारा 13(12) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कर्ज़दार और डीएचएफएल के बीच हुए ऋण अनुबंध के अनुसरण में मंज़ूर की गई आवास ऋण सुविधा के संबंध और प्रतिभूति के प्रवर्तन के संबंध में निम्न वर्णित कर्ज़दारों को (बुनियादी समूह दीवान हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड द्वारा आईसीआईसीआई बैंक को समनुदेशित किए जाने पर) माँग सूचनाएँ जारी की थीं, जिसमें उनसे सूचना में वर्णितानुसार बकाया राशि का भुगतान, उक्त सूचना की प्राप्ति की तिथि से 60 दिनों के अंदर करने की माँग की गई थी।

कर्ज़दार उपरोक्त राशि चुकाने में असफल रहे हैं, एतद् द्वारा कर्ज़दार और जनसाधारण को सूचना दी जाती है कि अधोहस्ताक्षरी ने उक्त नियमावली के नियम 8 के साथ पठित उक्त अधिनियम की धारा 13(4) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए यहाँ नीचे वर्णित संपत्ति का कब्ज़ा निम्न वर्णित तिथि को प्राप्त कर लिया है। कर्ज़दार को विशेष रूप से तथा जनसाधारण को एतद्द्वारा उक्त संपत्ति के संबंध में संव्यवहार नहीं करने हेतु सावधान किया जाता है तथा उक्त संपत्ति के संबंध में कोई भी संव्यवहार इसमें वर्णित राशि तथा उस पर आगे ब्याज हेतु आईसीआईसीआई बैंक लिमिटेड के प्रभाराधीन होगा।

क्र. सं.	कर्ज़दार का नाम/(ऋण खाता नंबर) (डीएचएफएल पुराना ऋण खाता नंबर एवं आईसीआईसीआई नया ऋण खाता नंबर)	संपत्ति का विवरण/ सांकेतिक कब्ज़े की तिथि	माँग सूचना की तिथि/ माँग सूचना में राशि (रु.)	शाखा का नाम
1.	वीणा रानी/ सुशील कुमार/ 19600044124 & QZGRN00005040008)	संपत्ति संख्या बी-62/2, ग्राउंड फ्लोर, अनारकली गार्डन, जगत पुरी, खसरा संख्या 28/1, ग्राम-खुरेजी खास, इलाक़ा शाहदरा, दिल्ली)/ मई 15, 2024	जनवरी 30, 2024 रु.18,87,542/-	दिल्ली/ एनसीआर
2.	संदीप रावत/ सावित्री रावत/ 07700001988 & QZGHZ00005021077)	संपत्ति धारक क्रमांक, एफ-44-ए, प्लॉट नंबर एफ-44 पर निर्मित, रियर आरएचएस फ्लैट, गली नंबर 7, खसरा 59/19/2 और 20, गाँव खुरेजी खास, आबादी मंगल बाजार, लक्ष्मी नगर, शाहदरा, नई दिल्ली-110092/ मई 15, 2024	जनवरी 31, 2024 रु. 11,20,376/-	दिल्ली/ एनसीआर

उपरोक्त दर्शाए गए कर्ज़दार/सह-कर्ज़दार एवं ज़मानतदारों को सूचित किया जाता है कि इस सूचना के प्रकाशन से 30 दिनों के अंदर राशि का भुगतान करें, अन्यथा 30 दिनों की समाप्ति के पश्चात् अधिग्रहित संपत्ति की नीलामी कर दी जाएगी जो पूर्णत: नियम 8 और 9 प्रतिभूति हित (प्रवर्तन) नियमावली, 2002 के अंतर्गत है।

दिनांक : मई 18, 2024 — **प्राधिकृत अधिकारी**
स्थान : दिल्ली/एनसीआर — **आईसीआईसीआई बैंक लि.**

हिमालय फूड इंटरनेशनल लिमिटेड

रजि. कार्यालय: 118, पहली मंजिल, 12 गगनदीप बिल्डिंग, राजेंद्र प्लेस, नई दिल्ली-110008
दूरभाष +91 11 45108609, फैक्स:- +91 1704 225178
ई-मेल आईडी: cs@himalyainternational.com, वेबसाइट:- www.hilayafoodcompany.com

31 मार्च, 2024 को तिमाही और वर्ष समाप्ति हेतु लेखापरीक्षित समेकित वित्तीय परिणामों का सारांश

(लाख रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	तिमाही समाप्ति			वर्ष समाप्ति	
		मार्च 31, 2024 (लेखापरीक्षित)	दिसम्बर 31, 2023 (अलेखापरीक्षित)	मार्च 31, 2023 (लेखापरीक्षित)	मार्च 31, 2024 (लेखापरीक्षित)	मार्च 31, 2023 (लेखापरीक्षित)
1.	संचालन से कुल आय	1249.81	1315.33	4293.80	4724.73	9751.16
2.	अवधि हेतु शुद्ध लाभ (कर पूर्व और आपवादिक मद)	122.89	144.24	(3178.83)	424.45	-2470.76
3.	कर पूर्व अवधि हेतु शुद्ध लाभ (आपवादिक मद पश्चात्)	122.89	144.24	(3127.83)	424.45	-2470.76
4.	कर पश्चात् अवधि हेतु शुद्ध लाभ (आपवादिक मद पश्चात्)	188.21	144.24	(3127.83)	489.77	(2419.76)
5.	अवधि हेतु कुल व्यापक आय [अवधि हेतु लाभ (कर पश्चात्) और अन्य कुल व्यापक आय (कर पश्चात्) शामिल]	188.21	144.24	(3127.83)	489.77	(2419.76)
6.	प्रदत्त इक्विटी शेयर पूंजी (प्रति शेयर रु. 10/- का अंकित मूल्य)	5787.29	5787.29	5787.29	5787.29	5787.29
7.	प्रति शेयर आय					
	i) मूलभूत रु. में	0.33	0.25	(5.40)	0.85	(4.18)
	ii) तरलीकृत रु. में	0.33	0.25	(5.40)	0.85	(4.18)

टिप्पणियाँ:

1. उपरोक्त लेखापरीक्षित परिणामों की समीक्षा लेखापरीक्षा समिति द्वारा की गई और उसके बाद वीरवार, 16 मई, 2024 को आयोजित बैठक में निदेशक मंडल द्वारा अनुमोदित किया गया। कंपनी के सांविधिक लेखापरीक्षकों द्वारा परिणामों की लेखापरीक्षा की गई है और उन्होंने असंशोधित रिपोर्ट जारी की है।
2. उपरोक्त सेबी (लिस्टिंग दायित्व और प्रकटीकरण आवश्यकताएँ) विनियम, 2015 के विनियमन 33 के तहत स्टॉक एक्सचेंज में दाखिल 31 मार्च, 2024 को समाप्त तिमाही और वर्ष हेतु लेखापरीक्षित वित्तीय परिणामों के विस्तृत प्रारूप का सारांश है। पूर्ण प्रारूप 31 मार्च, 2024 को समाप्त तिमाही और वर्ष के लिए उपरोक्त लेखापरीक्षित वित्तीय परिणाम बीएसई लिमिटेड (www.bseindia.com) और कंपनी की वेबसाइट (www.himalayafoodcompany.com) पर उपलब्ध हैं।
स्टैंडअलोन वित्तीय परिणामों पर अतिरिक्त जानकारी इस प्रकार है:

(लाख रुपये में)

क्र. सं.	विवरण	तिमाही समाप्ति			वर्ष समाप्ति	
		मार्च 31, 2024 (लेखापरीक्षित)	दिसम्बर 31, 2023 (अलेखापरीक्षित)	मार्च 31, 2023 (लेखापरीक्षित)	मार्च 31, 2024 (लेखापरीक्षित)	मार्च 31, 2023 (लेखापरीक्षित)
1.	संचालन से आय	1249.81	1315.33	4293.80.12	4724.73	9751.16
2.	कर पूर्व लाभ	122.89	144.24	(3178.83)	424.45	(2470.76)
3.	कर पश्चात् लाभ	188.21	144.24	(3127.83)	489.77	(2419.76)

3. वित्तीय परिणाम समय-समय पर संशोधित कंपनी (भारतीय लेखा मानक) नियम, 2015 के साथ पठित कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 133 के तहत निर्धारित भारतीय लेखा मानक (आईएनडी एएस) के अनुसार तैयार किए गए हैं।

बोर्ड और उसकी ओर से
हस्ता/-
मन मोहन मलिक
प्रबंध निदेशक
(डीन - 00696077)

दिनांक: 16.05.2024
स्थान: नई दिल्ली

पीओके में अशांति

अमित शाह का बयान

पाक अधिकृत कश्मीर-पीओके में जनता का गुस्सा तथा व्यापक अराजकता को देखते हुए अमित शाह ने कहा है कि भारत इसे अपने साथ शामिल कर लेगा। वर्तमान समय में कश्मीर घाटी में शांति एवं सद्भावना व्याप्त है, पर एलओसी के पार पीओके में जनता के साथ पुलिस व अर्धसैनिक बलों के बीच टकराव से अराजकता की स्थिति व्याप्त है। ऐसे में भारतीय गृह मंत्री अमित शाह ने जोर दिया है कि यह क्षेत्र 'भारत का है और हम इसे फिर अपने साथ शामिल कर लेंगे।' उनके इस बयान से संवेदनशील इतिहास के विवादित क्षेत्र पर फिर बहस तेज हुई है। विभाजन के बाद अन्य ऐसे राज्यों की तरह जम्मू कश्मीर की देशी रियासत को भारत या पाकिस्तान के साथ विलय का विकल्प दिया गया था। जम्मू कश्मीर के तत्कालीन शासक महाराजा हरि सिंह शुरुआत में तो 'स्वतंत्र' रहना चाहते थे, पर पाकिस्तान-समर्थित कबीलाई उग्रवादियों की घुसपैठ के कारण उन्होंने अक्टूबर, 1947 में भारत में विलय का फैसला किया। इसके कारण भारत-पाकिस्तान के बीच पहला युद्ध हुआ और संयुक्त राष्ट्रसंघ के आह्वान पर युद्धविराम के पश्चात एलओसी निर्धारित की गई। इससे यह क्षेत्र भारतीय जम्मू कश्मीर तथा पीओके में विभाजित हो गया। हालांकि, भारत ने अधिकांश क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था, पर लगभग एक तिहाई क्षेत्र पर पाकिस्तानी कब्जा बना रहा जिसे उसने 'आजाद जम्मू कश्मीर' व गिलगिट-बाल्टिस्तान का नाम दिया। इस प्रकार भारतीय दृष्टिकोण से पीओके जम्मू कश्मीर का अखंड अंग है और उसे भारत में शामिल करना ऐतिहासिक, विधिक व नैतिक आधार पर उचित क्षेत्र संबंधी दावा है। भारतीय संसद ने इस पर सर्व-सम्मत प्रस्ताव पास किया है। लेकिन विपक्षी दल चुनाव के समय अमित शाह के बयान पर सवाल उठा रहे हैं।

पाकिस्तान पीओके को 'आजाद क्षेत्र' मानता और इस पर संयुक्त राष्ट्रसंघ-यूएनओ के एक पुराने प्रस्ताव के आधार पर 'जनमत संग्रह' की याद दिलाता रहा है। लेकिन उसने स्वयं यूएनओ प्रस्ताव की शर्तें पूरी नहीं की थीं और अब उसे दुहराने का कोई अर्थ नहीं है। पाकिस्तान शिमला समझौते का उल्लंघन करते हुए जम्मू कश्मीर का मुद्दा बार-बार अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उठाता रहा है। उसने जम्मू कश्मीर से अनुच्छेद 370 समाप्त करने के मुद्दे पर भी हायतोबा मचाई, पर उसे इस्लामी देशों का भी साथ नहीं मिला। जहां जम्मू कश्मीर अनुच्छेद 370 हटने के बाद से शांति, लोकतंत्र और प्रगति की राह पर तेजी से अग्रसर है, वहीं बदहाल पाकिस्तान के कब्जे वाले पीओके में जनता को दो जून की रोटी भी मुहाल है। वहां आटे की कीमतों, बिजली की दरों तथा पाकिस्तान सरकार द्वारा थोपे करों के विरोध में व्यापक जनान्दोलन हुआ। पुलिस व पाकिस्तानी रेंजर्स के साथ मुठभेड़ में तीन प्रदर्शनकारियों के मारे जाने के बाद आंदोलन और उग्र हो गया। सालों से अशांत इस क्षेत्र में मानवाधिकार व लोकतांत्रिक अधिकारों के उल्लंघनों तथा पाकिस्तानी अवस्थापना द्वारा जनता के स्वर दबाने की घटनायें बार-बार सामने आई हैं। यहां 'गिलगिट बाल्टिस्तान मूवमेंट' जैसे नागरिक अधिकार आंदोलन पाकिस्तानी अत्याचारों का लगातार मुकाबला कर रहे हैं। इन आंदोलनों ने भारत सरकार से बार-बार आह्वान किया है कि वह उनके उत्पीड़न को दुनिया भर में उजागर करे। पीओके में जनता का बड़ा हिस्सा भारत वाले जम्मू कश्मीर में विलय का इच्छुक है और उसकी आवाज मुखर रूप से दुनिया के सामने आ रही है। ऐसे में अमित शाह के बयान को संकुचित चुनावी दृष्टिकोण के बजाय व्यापक संदर्भ में देखा जाना चाहिए।

राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सोने की भूमिका

व्यावहारिक घरेलू बचतकर्ताओं की तरह भारतीय रिजर्व बैंक ने अर्थव्यवस्था में स्वर्ण भंडारों की उपयोगिता को देखते हुए आरक्षित स्वर्ण भंडार बढ़ा कर 817 मीट्रिक टन कर दिया है।

शिवाजी सरकार
(लेखक, वरिष्ठ पत्रकार हैं)

भारतीय परिवारों द्वारा अपनी संपदा सुरक्षित रखने के रणनीतिक कदम की तरह भारतीय रिजर्व बैंक-आरबीआई ने सक्रिय रूप से स्वर्ण भंडार बढ़ा कर देश की अर्थव्यवस्था मजबूत करने की दिशा में कदम बढ़ाया है। यह साहसी पहल व्यावहारिक घरेलू बचतकर्ताओं की आदत का प्रतीक है। केन्द्रीय बैंक ने संभावित आर्थिक उथलपुथल से स्वयं को सुरक्षित रखने और देश की वित्तीय स्थिरता मजबूत करने की दिशा में यह कदम उठाया है। अब आरबीआई ने आरक्षित स्वर्ण भंडार बढ़ा कर 817 टन कर दिया है। इस बढ़ोत्तरी के पीछे अनेक कारण हैं जिनमें पश्चिम एशिया में बढ़ता तनाव, फिलिस्तीन पर इज़राइल का हमला, रूस-यूक्रेन युद्ध तथा लगातार जारी मुद्रास्फीति शामिल हैं।

इन सबके कारण सोने की ओर आकर्षण बढ़ा है। दुनिया भर के केन्द्रीय बैंक अपने भंडारों की विविधता बढ़ाने तथा अमेरिकी डालर पर निर्भरता घटाने के लिए सक्रिय रूप से सोना एकत्र कर रहे हैं। चीन खासकर बड़े पैमाने पर लगातार 17 महीने से भारी मात्रा में सोना खरीद रहा है। इससे वह मुद्रा अवमूल्यन तथा भू-राजनीतिक जोखिमों से निपटने का प्रयास कर रहा है। इस प्रकार दुनिया अनाधिकारिक रूप से उन 'स्वर्ण मानकों' की ओर लौट रही है जिनको उसने 1971 में छोड़ दिया था। भारतीय शेयर बाजारों में लगातार 6 दिन गिरावट आई। इसके काण काफी निवेश नष्ट हुआ है। अनुमान है कि भारतीय शेयर बाजारों में इन 6 दिनों की गिरावट के कारण निवेशकों को लगभग 7 लाख करोड़ रुपये का भारी नुकसान हुआ है। घरेलू बचतकर्ताओं की बचत में बेरोजगारी और बढ़ती कीमतों के कारण गिरावट आई है क्योंकि इन्होंने उनको प्रभावित किया है। आरबीआई ने 9 मई को जारी अपने स्पष्टीकरण में कहा है कि 'वे अपनी बचत रियल इस्टेट में लगा रहे हैं और केन्द्रीय बैंक को इस परिघटना से चिन्ता नहीं है।' बैंक ने स्वयं भी सोने की खरीद बढ़ा दी है ताकि 'अमेरिकी डालर की अस्थिरता को देखते हुए अपने विदेशी मुद्रा भंडारों का विविधीकरण किया जा सके।' अमेरिका में साल दर साल मुद्रास्फीति की दर बढ़ रही है और यह फरवरी में 3.2 प्रतिशत पर पहुंच गई। फेडरल रिजर्व द्वारा 2022 में ब्याज दरें बढ़ाना शुरू करने के बाद से उसने जुलाई, 2023 में दरें बढ़ा कर 5.25 प्रतिशत के बजाय 5.5 प्रतिशत कर दीं। अमेरिका में चुनाव को देखते हुए वह अपना मुद्रा भंडार बढ़ा रहा है। इस साल की शुरुआत से सोने की कीमतों में 10 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हुई है।

इस प्रकार इसे मुद्रास्फीति के खिलाफ एक बाड़ तथा बढ़ती राजनीतिक व आर्थिक अनिश्चितता में सुरक्षित स्वर्ग की तरह देखा जा रहा है। सोने की कीमतें बढ़ने का प्रमुख कारण केन्द्रीय बैंकों द्वारा इसकी भारी मात्रा में खरीद तथा सुरक्षित-स्वर्गों में संपत्ति की बढ़ती मांग है। भारत में सोने की कीमतों में 2024 में काफी उछाल आया है। इसके कारण अक्षय तृतीया के दो दिन पहले इसकी कीमत अभूतपूर्व रूप से अब तक के सर्वाधिक उच्च स्तर पर पहुंच गई। परंपरागत रूप से सोने की खरीद सबसे उच्च स्तर 73,000 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गई। इस प्रकार इसकी कीमतों में केवल एक साल के भीतर 21.1 प्रतिशत की जबरदस्त वृद्धि हुई। हालांकि, 10 मई को अक्षय तृतीया वाले दिन इसकी कीमत में थोड़ी कमी आई और यह 72,788 रुपये प्रति 10 ग्राम पर पहुंच गया। पिछले 6 महीने में सोने की घरेलू कीमतों में उछाल आया और यह 54,000 रुपये प्रति 10 ग्राम से बढ़ कर रिकार्ड 73,958 रुपये पर पहुंच गईं।

कोई भी समझ सकता है कि सोने की तुलना में किसी भी चीज की कीमतें इतनी तेजी से नहीं बढ़ती हैं और ऐसे में आरबीआई की व्यावहारिकता पर सवाल नहीं उठाया जा सकता है। वर्तमान समय में एक डालर 83.88 रुपये का है। 6 महीने में रुपये की कीमत में वृद्धि की उम्मीद है और यह 82.50 पर पहुंच सकता है। एक साल में 1.1 प्रतिशत वृद्धि के साथ यह 82 रुपये तक पहुंच सकता है जो 1.7 प्रतिशत वृद्धि होगी। इसका अर्थ है कि आरबीआई के डालर भंडार का मूल्य एक साल में लगभग 2 प्रतिशत कम हो जाएगा। इसलिए आरबीआई ने डालर की तुलना में ज्यादा सोना खरीदने का निर्णय किया। इसमें प्रति 10 ग्राम पर 73,000 रुपये खर्च करने पर भी 20 प्रतिशत का लाभ होगा। यह समझदारी वाली अर्थव्यवस्था है। आरबीआई ने अपने भंडारों में विविधता लाने के ए सोना खरीदना तेज कर दिया है। विदेशी मुद्रा भंडार में सोने के मूल्य में 3 बिलियन डालर की वृद्धि हुई है और यह 648.5 बिलियन डालर हो गई है। आरबीआई ने विविधीकरण तथा मुद्रास्फीति से सुरक्षा के लिए 2024 की शुरुआत में ज्यादा सोना खरीदा है।

विश्व स्वर्ण परिषद-डब्लूजीसी के अनुसार जनवरी-मार्च में आरबीआई द्वारा सोना खरीद बढ़ कर 19 टन पहुंच गई। इसकी तुलना में पूरे 2023 साल में उसने केवल 16 टन सोना खरीदा था। डब्लूजीसी के अनुसार, सर्वाधिक स्वर्ण भंडार वाले देशों में अमेरिका 8,133 टन के साथ सबसे ऊपर है, इसके बाद जर्मनी, इटली, फ्रांस और रूसी संघ का स्थान है जिनके पास क्रमश: 3366.49, 2451.84, 2436.01 व 2271.16 टन सोना है। केन्द्रीय बैंकों द्वारा सोने की खरीद में वृद्धि अमेरिका द्वारा रूस पर लगे प्रतिबंधों के बाद आई। ये प्रतिबंध रूस द्वारा यूक्रेन पर हमले के कारण लगे और इनमें रूसी आरक्षित डालर भंडार फ्रीज करना तथा कच्चे तेल समेत उसके महत्वपूर्ण वस्तु व्यापार पर प्रतिबंध शामिल है। इन कदमों के वैश्विक विपरीत प्रभाव काफी व्यापक थे जिनसे पश्चिमी वित्तीय संस्थानों की संकटग्रस्त स्थिति उजागर हो गई। इसके चलते शेयरों में निवेश का विकल्प ज्यादा जोखिम वाला है। नवीनतम फेडरल रिजर्व डेटा के अनुसार चीन ने अमेरिकी ट्रेजरी सिक्यूरिटीज़ से 22.7 बिलियन डालर अतिरिक्त निकाले और अपनी कुल होल्डिंग घटा कर 775 बिलियन डालर कर दी। इस कमी के बावजूद चीन अमेरिका का दूसरा सबसे बड़ा कर्जदाता है। अमेरिकन फेडरल रिजर्व डेटा के अनुसार चीन डालर पर अपनी निर्भरता घटा रहा है। 'आईसीआईसीआई डाइरेक्ट स्टडी' के अनुसार आरबीआई अमेरिकी डालर पर अपनी निर्भरता घटाने के साथ अपने विदेशी मुद्रा भंडार में विविधता लाना चाहता है। सोना स्थायित्व प्रदान करता है और इसे सीधे किसी एक मुद्रा से नहीं जोड़ा जा सकता है। आर्थिक अनिश्चितता या डालर मूल्य में उतार-चढ़ाव के समय यह अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। सोने को मुद्रास्फीति के खिलाफ बाड़ समझा जाता है। जब मुद्रास्फीति के कारण मुद्राओं का मूल्य गिरता है तब भी सोने का मूल्य बना रहता है या बढ़ता है। यह भारत के विदेशी मुद्रा भंडार की खरीद शक्ति की रक्षा करता है। आरबीआई का कहना है कि स्वर्ण भंडार पोर्टफोलियो में विविधता से भारतीय अर्थव्यवस्था में विदेशी निवेशकों का विश्वास बढ़ता है। यह भारत की मजबूत वित्तीय स्थिति और स्थायित्व का प्रतीक है जो विदेशी निवेश को आकर्षित करती है।

हालांकि, अब ज्यादा सामान्य नहीं है, पर अंतरराष्ट्रीय लेनदेन में अब भी सोने का प्रयोग किया जा सकता है। ऐसे में आवश्यकता होने पर आरक्षित स्वर्ण भंडार के साथ भारत दूसरे देशों का कर्ज अदा कर सकता है। यदि कोई देश रुपया स्वीकार करने को तैयार न हो तो उसे सोना दिया जा सकता है। दुनिया की भू-राजनीतिक स्थिति को देखते हुए अगले पांच साल उथलपुथल वाले हो सकते हैं और सोना अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को स्थिर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। वर्तमान समय में आईटी क्षेत्र, उद्योग और बाजारों में उथलपुथल है और इनको शांत होने में कुछ समय लगेगा। ऐसे समय में कागजी मुद्रा की तुलना में सोने की मांग और बढ़ने की संभावना है। ऐसे में भारतीय रिजर्व बैंक-आरबीआई ने आरक्षित स्वर्ण भंडार बढ़ाने का सही कदम उठाया है। इससे भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत होगी तथा हम दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं में प्रमुख स्थान प्राप्त करेंगे।

भारत-ईरान के बीच चाबहार समझौता

भारत ने चाबहार में शाहिद बेहेश्टी पोर्ट टर्मिनल के विकास के लिए दस साल के दीर्घकालिक अनुबंध पर हस्ताक्षर करने में कामयाबी हासिल की।

कुमारदीप बनर्जी
(लेखक, नीति विश्लेषक हैं)

भारत और ईरान आखिरकार दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों में सबसे तनावपूर्ण प्रमुख परियोजनाओं में से एक के लिए दीर्घकालिक अनुबंध को बंद करने में कामयाब रहे। भारत ने चाबहार में शाहिद बेहेश्टी पोर्ट टर्मिनल के विकास के लिए दस साल के दीर्घकालिक अनुबंध पर हस्ताक्षर करने में कामयाबी हासिल की।

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी कि चुनावों के बीच में होने के बावजूद, केंद्रीय बंदरगाह शिपिंग और जलमार्ग मंत्री सरबानंद सोनोवाल ने इस महत्वपूर्ण द्विपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए चाबहार बंदरगाह का दौरा किया। चाबहार एक गहरे पानी का बंदरगाह है, जो भारत के सबसे नजदीक स्थित है, जो भारत की मध्य एशिया तक पहुंच और इस क्षेत्र के राज्यों के लिए हिंद महासागर में पहुंच के लिए महत्वपूर्ण है। चाबहार परियोजना पहली बार 2003 में ईरान और भारत के लिए एक महत्वपूर्ण द्विपक्षीय मंच के रूप में सामने आई थी, जब पीएम वाजपेयी और ईरानी समकक्ष हसन रूबानी ने दोनों देशों के बीच परिवर्तनकारी रणनीतिक सहयोग खाका का अनावरण किया ईरान और भारत के बीच हस्ताक्षरित 2003 के दिल्ली घोषणापत्र में दोहराया गया है कि मेलक, जरांज और डेलाराम के माध्यम से चाबहार मार्ग विकसित करने के लिए भारत, ईरान और अफगानिस्तान की सरकारों के बीच हाल ही में हुआ त्रिपक्षीय समझौता क्षेत्रीय व्यापार और पारगमन को सुगम बनाएगा, जिसमें अफगानिस्तान और मध्य एशिया भी शामिल है, जिससे क्षेत्रीय आर्थिक समृद्धि में वृद्धि होगी।

हालांकि, वाजपेयी सरकार के बाद, भारत का ध्यान महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजना पर स्थानांतरित हो गया, जो आंशिक रूप से घरेलू राजनीति और एक नई विश्व व्यवस्था से प्रभावित था। प्रधानमंत्री मोदी के प्रधानमंत्री बनने तक इस एकीकृत बहु-मॉडल चाबहार परियोजना को प्रमुखता नहीं मिली। 2015 में अफगानी राष्ट्रपति की भारत यात्रा और उसके बाद 2016 में पीएम मोदी की ईरान यात्रा सहित व्यस्त बैकरूम वार्ता, त्रिपक्षीय समझौते पर हस्ताक्षर ने परियोजना को बहुत जरूरी प्रोत्साहन प्रदान किया। इसमें अमेरिका के साथ घनिष्ठ समन्वय भी शामिल था (जो चाबहार के साथ भारत के उत्साह को लेकर बहुत उत्सुक नहीं था), लेकिन अफगानिस्तान तक स्वतंत्र पहुंच ने हिचकिचाहट को दूर करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2017 में भारत, ईरान और अफ़गानिस्तान ने चाबहार में परिवहन और पारगमन गलियारे की स्थापना पर अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए दूसरी मंत्रिस्तरीय त्रिपक्षीय बैठक की। त्रिपक्षीय बैठक के बाद जारी बयान में कहा गया, क्षेत्रीय आर्थिक संपर्क के लिए एक केंद्र के रूप में चाबहार के महत्व और इस उद्देश्य की दिशा में काम करने की अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए, मंत्रियों ने चाबहार के माध्यम से भारत से अफ़गानिस्तान तक गेहूं के हाल ही में सफल पारगमन में तीनों देशों के संयुक्त प्रयासों की सराहना की। लगभग सात साल बाद भारत को महत्वपूर्ण परिचालनों को संभालने के लिए चाबहार बंदरगाह तक पूरी पहुंच मिली।

यह याद दिलाना ज़रूरी है कि चीन ने अपने बेल्ट एंड रोड पहल को आक्रामक रूप से आगे बढ़ाते हुए मध्य एशिया में महत्वपूर्ण प्रगति की है। ईरानी राष्ट्रपति ने इस साल फरवरी में चीन में एक उच्च-स्तरीय आर्थिक प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया, जबकि उन्होंने दोहराया कि चीन उसका सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बना हुआ है।

मध्य एशियाई देशों और आगे रूस के साथ भारत के संबंध दशकों से स्थिर हैं। चीन इस क्षेत्र में एक नया प्रवेशक रहा है जिसने सबसे पहले भारत के तत्काल पड़ोस जैसे पाकिस्तान, श्रीलंका आदि में महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को हासिल करने में कामयाबी हासिल की और अब रूस के साथ भी तालमेल बिठा रहा है। ईरान पारंपरिक रूप से पश्चिम एशियाई और मध्य एशियाई क्षेत्रों में एक प्रमुख प्रभावशाली देश रहा है, हालांकि, गाजा में चल रहे युद्ध ने इस क्षेत्र में पुरानी दरारों को फिर से जगा दिया है। अफगानिस्तान से वापस जाने वाला अमेरिका इस क्षेत्र में एक प्रमुख निर्णयकर्ता हुआ करता था और अब वह इस क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए उत्सुक है।

आप की बात

होर्डिंग हादसा

मुंबई में होर्डिंग हादसा एक बड़ी त्रासदी है। 16 लोगों का असमय काल के काल में समा जाना मानवीय भूल व शहरी प्रबंधन में लापरवाही का ही नतीजा है। विज्ञापनों की होड़ में कंपनियां बड़े-बड़े होर्डिंग तो जगह-जगह लगा देती है मगर सुरक्षा के नाम पर रक्षात्मक उपाय नहीं किए जाते हैं। मुंबई में दुर्घटना के दो दिनों बाद भी लोगों का मलबे के नीचे से निकलना जताता है कि होर्डिंग अनुमति से कितने अधिक बड़े आकार में लगाए गए थे। पूर्व सांसद किरीट सोमैया के दावे को अगर सही मानें तो मुंबई में 400 से अधिक ऐसे होर्डिंग है जो अपनी सीमा में कहीं अधिक बड़े और खतरनाक है। घाटकोपर घटना से सबक लेकर सरकार को मुंबई ही नहीं देशभर में अवैध होर्डिंगों के खिलाफ अभियान चलाना चाहिए ताकि घटना की पुनरावृत्ति ना हो। आने वाले बरसात के मौसम के मद्देनजर इस मामले में गंभीरता जरूरी है। मुंबई का होर्डिंग हादसा देश भर के सभी नगर निकायों के लिए सबक है कि वे शहरों में विज्ञापनों से होने वाली आय की तुलना में नागरिकों की सुरक्षा पर अधिक ध्यान दें। इस तथ्य पर भी गौर करना चाहिए कि सामान्य स्थिति में भी सड़कों के किनारे लगे होर्डिंग ड्राइवरों का ध्यान बंटा कर ट्रैफिक दुर्घटनाओं का कारण बनते रहे हैं जिनमें अनेक लोगों की जान गई है।

– **अमृतलाल मारू,** इंदौर

मोदी की चुनौती

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी सरकार द्वारा बनाए सीएए कानून को समाप्त करने की विपक्ष की चुनौती पर समूचे विपक्ष को ललकारते हुए कहा है कि कोई माई का लाल सीएए कानून को खत्म नहीं कर सकता। आज जिस तरह विपक्षी दलों ने वोटबैंक की राजनीति में हिंदू-मुसलमान को लड़ा कर धर्मनिरपेक्षता का ऐसा चोला पहन लिया है जिसे मोदी इनके शरीर से हटाना चाहते हैं। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर विपक्षी दल मुस्लिम तुष्टीकरण कर सभी गैर-मुस्लिमों को नीचा दिखाने का काम करते हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने वादा किया था कि यदि पाकिस्तान से कोई उत्पीड़ित अल्पसंख्यक भारत आया तो उसे नागरिकता दी जाएगी। लेकिन कांग्रेस ने अपने शासनकाल में इन लोगों को नागरिकता देने की सोची तक नहीं। मोदी ने पाकिस्तान, अफगानिस्तान व बांग्लादेश से आए उत्पीड़ित हिंदुओं, सिखों, जैनों, बौद्धों, पारसियों व ईसाइयों को नागरिकता देकर सचमुच भारतीयता का सम्मान किया है। आखिर गैर-मुस्लिम उत्पीड़ित लोगों को यदि भारत शरण नहीं देगा तो वे कहां जाएंगे। कांग्रेस समेत विपक्ष के भी हित में है कि वह सीएए को स्वीकार कर ले, नहीं तो जनता उनको अस्वीकार कर देगी।

– **एमएम राजावत,** शाजापुर

रूस-चीन दोस्ती

रूस और चीन दिन पर दिन करीब आ रहे हैं। इससे यह कहावत सही सिद्ध होती है कि दुश्मन का दुश्मन अपना दोस्त होता है। पश्चिमी देश और नाटो मास्को व बीजिंग के लिए आज दुश्मन नंबर एक हैं। इसीलिए दोनों तानाशाह- ब्लादिमीर पुतिन एवं शी जिनपिंग की दोस्ती दिन पर दिन परवान चढ़ रही है। शी जिनपिंग ने मॉस्को के दौरे में दोनों देशों के संबंधों में एक नए युग का वर्णन किया था, जबकि अक्टूबर 2023 में पुतिन ने बीजिंग का दौरा किया था तो शी ने दोनों नेताओं के बीच गहरी दोस्ती की बात की थी। अब एक बार फिर पुतिन बीजिंग की यात्रा पर हैं। दोनों देश उन संबंधों को और गहरा करना चाहते हैं जो दो मास्को द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण के बाद घनिष्ठ हो गए हैं। अब देखना है कि चीन यूक्रेन पर रुसी आक्रमण के मामले में कब तक साथ देता रहेगा? चीन के पश्चिमी देशों से भी संबंध हैं और उसने रूस-यूक्रेन युद्ध समाप्त करने में अपनी मध्यस्थता का भी प्रस्ताव किया था। चीन-रूस की बढ़ती निकटता भारत की रणनीतिक स्वायत्तता के लिए भी परीक्षा की तरह है। देखना होगा कि चीन की भारत के प्रति आक्रामकता के मामले में रूस क्या दृष्टिकोण अपनाएगा। इसका भारत-अमेरिका संबंधों पर भी प्रभाव पड़ेगा।

– **जंग बहादुर सिंह,** जमशेदपुर

चारधाम यात्रा

उत्तराखंड की चारधाम यात्रा में श्रृद्धालुओं का सैलाब उमड़ रहा है। 10 मई से यात्रा शुरू होने के बाद से 14 मई तक करीब पौने तीन लाख तीर्थयात्री यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ और बद्रीनाथ जा चुके हैं। अभी तक 27 लाख लोग चार धाम यात्रा के लिए पंजीयन करवा चुके हैं। इस वर्ष 80 लाख लोगों के चारधाम यात्रा हेतु हिमालय पर पहुंचने की संभावना है। बेशक लोगों में धार्मिक पर्यटन के प्रति प्रति रुझान बढ़ा है क्योंकि पहाड़ों पर सड़कें अच्छी बन गई है तथा नई सुरंगें बनाने से मार्ग सुगम और छोटे हो गए हैं। देशभर में कई ट्रेवल्स एजेंसीज सक्रिय हो गई है और हेलीकॉप्टर के सभी टिकट अभी से बुक हो चुके हैं। जिन्हें बाद में भारी मुनाफा जोड़कर बेंच दिया जाएगा। गत वर्षो से हमने पहाड़ों पर भारी प्राकृतिक आपदाएं आते हुऐ देखी हैं। इसका सबसे बड़ा कारण पर्यटक सुविधाओं के लिए किए जा रहे निर्माण व अधिक भीड़ है। समय आ गया है कि सरकार को पहाड़ों पर जाने वाले पर्यटकों की संख्या नियंत्रित करनी होगी। पर्यटन व पर्यावरण संरक्षण में संतुलन धार्मिक स्थलों के दूरगामी विकास व स्थायित्व के लिए भी जरूरी है।

– **सुभाष बुड़ावन वाला,** रतलाम

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से
responsemail.hindipioneer@gmail.com
पर भी भेज सकते हैं।

रामद्रोहियों की जमानत जब्त होंगी: योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ अयोध्या

कहा-जब सपा-कांग्रेस मिलते हैं कोई न कोई अपशकुन जरूर होता है

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को फैजाबाद लोकसभा क्षेत्र के तहत मिल्कीपुर, अयोध्या में विशाल जनसभा को संबोधित किया और मौजूदा सांसद व भाजपा प्रत्याशी लल्लू सिंह के लिए अधिक से अधिक संख्या में मतदान की अपील की। इस दौरान सीएम योगी ने सपा और कांग्रेस पर करारा प्रहार किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और सपा का वर्तमान संस्करण बहुत खतरनाक हैं। जब भी ये दोनों मिलते हैं मानकर चलिए कि कोई अपशकुन होने वाला है। समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के इस नए संस्करण को 'खून चुसवा' कहते हैं। औरंगजेब की आत्मा इनके अंदर घुस गई है। ये देश के लोगों से जजिया कर वसूलना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि आज जो माहौल देश के अंदर बन रहा है इसमें हम सबको सहभागी बनना है। ये अवसर कमल चुनाव पर वोट करके लोक और परलोक दोनों सुधारने का है। विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करना है तो यह केवल भाजपा ही कर सकती है। मोदी भारत के विकास के रथ के सारथी हैं। महाभारत के इस युद्ध में वह श्रीकृष्ण की भूमिका में हैं और जहां मोदी होंगे, कमल का फूल होगा तो विजय अवश्य होनी है। वहीं, रामद्रोहियों की जमानतें जब्त होंगी।

सीएम योगी ने कहा कि कांग्रेस, सपा और बसपा ये तीनों केवल आज के दिन पर वोट कटवा हैं। सपा और कांग्रेस जब आपस में मिलते हैं तो कोई न कोई गड़बड़ जरूर करते हैं। जब राज्य में समाजवादी पार्टी की सरकार थी और केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी तब अयोध्या में रामजन्म भूमि पर हमला हुआ था। इस बार इन्होंने अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़ी जाति के आरक्षण पर सेंध लगाने की साजिश की है। इनका गरीबी हटाओ का मॉडल बहुत खतरनाक है। ये कहते हैं कि एक झटके में गरीबी हटा देंगे। किसी ने पूछा कैसे हटाएंगे तो कहा कि संपत्ति का सर्वे करेंगे और फिर जो आपके बाप, दादा की संपत्ति होगी उसमें से आधी संपत्ति ले लेंगे और समाजवादी पार्टी के गुंडों में बांट देंगे। उन्होंने कहा कि कमल के फूल पर जब वोट पड़ता है वही मोदी और योगी को ताकत देता है। यही ताकत है जिसने 500 वर्षों की समस्या का समाधान एक झटके में करके आपको और वर्तमान पीढ़ी को गौरव की अनुभूति कराई है। एक तरफ ये विकास है और दूसरी तरफ गरीब कल्याण भी है। कांग्रेस-सपा के समय राशन माफिया हावी थे। भाजपा के समय माफिया को जहां पहुंचाना था पहुंचा दिया। पूरे देश के अंदर अभी तीन चरण के चुनाव बाकी हैं, लेकिन यह पहला चुनाव है जब एक ही नारा गूंज रहा है और वह नारा है फिर एक बार मोदी सरकार और अबकी बार 400 पार। जब लोग बोलते हैं कि 400 पार कैसे? तो जनता कह देती है कि जो राम को लाए हैं, हम उनको लाएंगे।

उन्होंने कहा कि यह बोलने में कोई संकोच नहीं है कि वर्तमान का यह चुनाव चौथा चरण आते-आते पूरे देश के अंदर रामद्रोही और रामभक्तों के बीच बंट गया है। रामद्रोही वही जो रामभक्तों पर गोलियां चलाते हैं। रामद्रोही वही जो हमारे रामलला की जन्मभूमि पर हमला करने वालों पर मुकदमे वापस लेते हैं। रामद्रोही वही जो कहते हैं कि अयोध्या में राम मंदिर बेकार बना है। रामद्रोही वही जो राम भक्त कल्याण सिंह की मृत्यु पर संवेदना व्यक्त नहीं करते लेकिन माफिया के मरने पर मातम मनाने जरूर जाते हैं। रामद्रोही वही जो देश के अंदर आतंकवाद और नक्सलवाद की जड़ हैं। रामद्रोही वही जो भारत का विकास नहीं चाहते। रामद्रोही वही जो विकास के कार्यों में जगह-जगह बैरियर बनते हैं और रामद्रोही वही जो गरीब के हक पर डकैती डालते हैं। इसमें सबसे पहला नाम आता है समाजवादी पार्टी और कांग्रेस का। याद करिए रामभक्तों पर गोलियां समाजवादी पार्टी ने चलाई थी।

आतंकवाद व भ्रष्टाचार को बढ़ाकर सत्ता प्राप्त करना चाहता है इंडी गठबंधन: योगी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/सारण (बिहार)

- यूपी के सीएम ने बिहार के सारण में चुनावी जनसभा को किया संबोधित

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि जहां एक तरफ मोदी के नेतृत्व में देश डिजिटल युग में प्रवेश कर रहा है वहीं कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) बिहार को लालटेन युग में ले जाना चाहते हैं। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि इंडी गठबंधन के लोग जातियों को लड़ाकर और आतंकवाद, नक्सलवाद एवं भ्रष्टाचार को बढ़ाकर सत्ता प्राप्त करना चाहता है। योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को यहां धौरहरा खुर्द में सारण लोकसभा सीट के लिए चुनावी जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने पार्टी प्रत्याशी राजीव प्रताप रूडी के लिए जनता से वोट की अपील की।

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि मैं भगवान श्रीराम की धरती से आपके बीच आया हूं। हम यूपी वाले बिहार को अपना ननिहाल मानते हैं, क्योंकि ये मां जानकी का मायका। उन्होंने कहा कि देश के प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद और जय प्रकाश नारायण जी के जिस बिहार ने दुनिया को दिशा दी, कांग्रेस और आरजेडी ने उसके नौजवानों के सामने पहचान का संकट खड़ा कर दिया। कहा कि यूपी में भी माफिया नाम की बीमारी थी जिसे पूरी तरह से समाप्त किया जा चुका है, अब यूपी में महोत्सव होते हैं। अपने संबोधन की शुरुआत योगी आदित्यनाथ ने भोजपुरी में करते हुए कहा कि महर्षि दधीचि और बाबा हरिनाथ की पवित्र धरती पर राउर लोगन क वंदन अभिनंदन कर तानी।

उन्होंने कहा कि आज सीता प्राकट्य दिवस भी है। इससे बड़ा सौभाग्य क्या हो सकता है कि इस अवसर पर मुझे सारण आने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के चार चरण हो चुके हैं।

सपा विधायक मनोज पांडे आखिरकार भाजपा में शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ/ रायबरेली

ऊंचाहार से सपा के बागी विधायक मनोज पांडेय ने आखिरकार भाजपा की सदस्यता ले ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को रायबरेली के दौलतपुर में आयोजित जनसभा में उन्हें पार्टी में शामिल कराया।

इसके पहले पार्टी नेतृत्व द्वारा प्रचार करने के लिए उन्हें लगातार मनाने की कोशिशें हो रही थी लेकिन अब विधिवत भाजपा में शामिल होने के बाद राहुल की डगर आसान नहीं होगी। मनोज पांडे के चुनाव में खुलकर आ जाने से निश्चित रूप से भाजपा प्रत्याशी को फ़ायदा मिलेगा। कम उम्र है और अपनी ज़मीनी पकड़ के कारण वह प्रदेश में ब्राम्हण चेहरे के रूप में माने जाते हैं। मनोज पांडे अपनी राजनीति के शुरुआत से ही राजनीतिक दिग्गजों के करीबी रहे हैं,पक्ष-विपक्ष हर तरफ़ के मजबूत नेताओं से वह सम्बंध बनाने में माहिर माने जाते हैं। रायबरेली नगर पालिका परिषद अध्यक्ष रहते हुए तत्कालीन दिग्गज़ लालजी टंडन के वह खासमखास रहे और टंडन ने ही उन्हें राज्य मंत्री का दर्जा दिलवा दिया था। इसके पहले पूर्व मुख्यमंत्री रामप्रकाश गुप्त के वह भरोसेमंद रहे। डॉ मुरली मनोहर जोशी की भी कृपा दृष्टि उनपर हमेशा रही। समाजवादी पार्टी में भी रहते हुए वह मुलायम सिंह यादव और जनेश्वर मिश्र के चहेते रहे। 2012 में विधायक बनने के बाद अखिलेश यादव के प्रिय बन गए। अखिलेश यादव ने उन्हें मंत्री और मुख्य सचेतक तक बना दिया था। सपा से अपनी राजनीतिक पारी शुरू करने वाले मनोज पांडे दलों से परे अपने सम्बंध बनाने के लिए जाने जाते हैं। सपा के विधायक रहते हुए वह सोनिया गांधी के भी नज़दीक रहे। दिग्गजों के भरोसेमंद होने का उन्हें खूब फायदा भी मिला और 2012 में भारी विरोध के बावजूद उन्हें ऊंचाहार से सपा का टिकट मिल गया।

राजनीति की नब्ज़ समझने वाले मनोज पांडे की जनता में पकड़ का यह असर है कि विधानसभा के चुनाव में उन्होंने स्वामी प्रसाद मौर्य के बेटे को दो बार हराया।तीसरी बार 2022 मे उन्होंने भाजपा के अमरपाल मौर्य को हराकर विधायक बने। वहीं 2012 में पहली बार सपा के टिकट पर ऊंचाहार सीट से लड़ने आए डा. मनोज पांडेय ने बसपा के टिकट पर लड़े स्वामी प्रसाद मौर्य के पुत्र को हराकर विधान सभा पहुंचे तो 2017 के चुनावी दंगल में भी मनोज का मुकाबला अशोक से हुआ और दुबारा विधानसभा पहुंचे। 2022 में तीसरी बार विधानसभा पहुंचे मनोज पाण्डेय का जन्म 15 अप्रैल, 1968 को रायबरेली में हुआ। सुल्तानपुर के मूलनिवासी मनोज कुमार पाण्डेय के पिता आयुर्वेदित चिकित्सक डॉ. रमाकांत पांडे रायबरेली आये थे,रायबरेली में वह मशहूर चिकित्सक के रूप में विख्यात थे और दवा व्यवसाय में भी अग्रणी रहे। मनोज पांडे स्नातकोत्तर के साथ ही पीएचडी डिग्रीधारक है।

आरटीई के तहत तीसरे चरण में 23846 बच्चों को स्कूल आवंटित

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

निःशुल्क शिक्षा का अधिकार कानून के तहत प्रदेश के निजी स्कूलों में पढ़ने के लिए आवेदन करने वाले बच्चों के आवेदन में से इस बार तीसरे चरण में तकरीबन 13 हजार आवेदन खारिज कर दिए गए हैं। जबकि 23846 बच्चों को स्कूल आवंटित किए गए हैं। शुक्रवार को यह जानकारी बेसिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने दी है। बेसिक शिक्षा विभाग के अधिकारियों के मुताबिक तीसरे चरण की लॉटरी के लिए विभाग 43375 आवेदन प्राप्त हुए थे। जिसमें स्क्रुटनी के दौरान 30372 आवेदन पत्र स्वीकृत किये गये थे। जबकि 13002 आवेदन खारिज कर दिये गये थे। वहीं 23846 बच्चों को स्कूल आवंटित किये गये हैं। 6525 आवेदन के लिए कोई आवंटन नहीं हुआ है। इस तरह अब तक 152416 बच्चों को अभी तक स्कूल आवंटित किये जा चुके हैं।

जल जीवन मिशन के तहत 82.90 प्रतिशत घरों को नल कनेक्शन से किया आच्छादित

लखनऊ। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र द्वारा जल जीवन मिशन एवं भूगर्भ जल विभाग के कार्यों की समीक्षा की गई। मुख्य सचिव ने जल जीवन मिशन के तहत 82.90 प्रतिशत घरों को नल कनेक्शन से आच्छादित होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि अवशेष घरों को जल्द से जल्द योजना से आच्छादित किया जाये। भीषण गर्मी में कहीं भी पानी की किल्लत नहीं होनी चाहिये। भूगर्भ जल निधि से जल संचयन एवं संवर्धन के कार्य कराये जायें। वर्षा जल संचय के लिये शासकीय भवनों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली स्थापित की जाये। भूजल संचयन एवं संवर्धन हेतु आम जनमानस को जागरूक किया जाये। समीक्षा के दौरान बताया गया कि जल जीवन मिशन से 2,65,59,189 घरों के सापेक्ष 2,20,17,328 घरों को नल कनेक्शन से संतृप्त किया जा चुका है, जो लक्ष्य का 82.90 प्रतिशत है, जबकि 15 अगस्त, 2019 को मात्र 1.94 प्रतिशत घर ही योजना से संतृप्त थे। वर्तमान में 50 प्रतिशत हाउसहोल्ड्स को वाटर कनेक्शन देने के मामले में उत्तर प्रदेश का प्रथम स्थान है। कम्पोनेन्टवाइज रिपोर्ट में बताया गया कि अब तक 38914 के सापेक्ष 38,421 ट्यूबवेल तथा 38364 के सापेक्ष 35,860 पम्प हाउस को क्रियाशील कराया जा चुका है। इसी प्रकार 9514 के सापेक्ष 7576 क्लोरिनेशन प्लांट को क्रियाशील, 1,67,865 के सापेक्ष 1,32,385 किमी रोड रेस्टोरेशन, 5,04,352 किमी के सापेक्ष 4,53,114 किमी पाइप लाइन बिछाने का कार्य पूर्ण हो चुका है।

अखिलेश यादव इंडिया गठबंधन प्रत्याशियों के पक्ष में आज करेंगे कई जनसभाएं

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव 18 मई , शनिवार को लोकसभा श्रावस्ती, फैजाबाद, सुल्तानपुर एवं अम्बेडकरनगर में समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन एवं कांग्रेस पार्टी इंडिया गठबंधन के पक्ष में चुनावी जनसभाओं को सम्बोधित करेंगे।

अखिलेश यादव 11:40 बजे लोकसभा क्षेत्र श्रावस्ती से समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी राम शिरोमणि वर्मा के पक्ष में एमएलके पीजी कॉलेज का छोटा परेड ग्राउण्ड बलरामपुर में विशाल चुनावी जनसभा को सम्बोधित करेंगे। यादव मध्याह्न 1:00 बजे जनसभा स्थल -5 नं0 ट्यूबेल कदनपुर इनायतनगर जनपद फैजाबाद में लोकसभा क्षेत्र फैजाबाद से समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी अवधेश प्रसाद को भारी मतों से विजयी बनाने के लिए अपील करेंगे। अखिलेश यादव अपराह्न 2:00 बजे चांदपुर सैदोपट्टी थाना गोसाईगंज जिला सुल्तानपुर में समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन सुल्तानपुर लोकसभा क्षेत्र से प्रत्याशी राम भुआल को विजयी बनाने के लिए जनसभा को सम्बोधित करेंगे। यादव अपराह्न 3:00 बजे शिव बाबा का मैदान ग्राम सीहमई तहसील अकबरपुर जिला अम्बेडकरनगर में समाजवादी पार्टी इंडिया गठबंधन के लोकसभा क्षेत्र अम्बेडकरनगर से प्रत्याशी लालजी वर्मा को भारी मतों से जिताने के लिए चुनावी जनसभा को सम्बोधित करेंगे।

बाराबंकी में राहुल गांधी की जनसभा आज

लखनऊ। कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी 18 मई, शनिवार को अपरान्ह दो बजे जनपद बाराबंकी के मदारपुर तिराहा, कोशानेश्वर मोड़, निकट-कोठी विधानसभा क्षेत्र हैदरगढ़ में लोकसभा क्षेत्र बाराबंकी के इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी तनुज पुनिया के पक्ष में आयोजित जनसभा को सम्बोधित करेंगे। प्रदेश कांग्रेस कमेटी मीडिया विभाग के चेयरमैन व पूर्व मंत्री डॉ. सीपी राय ने बताया कि कार्यक्रम में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव, प्रभारी उत्तर प्रदेश अविनाश पाण्डेय भी मौजूद रहेंगे।

डिम्पल यादव आज गोंडा में करेंगी रोड-शो

लखनऊ। सांसद डिम्पल यादव 18 मई, शनिवार को गोण्डा जनपद में रोड-शो में भाग लेंगी। उनके साथ गोण्डा लोकसभा क्षेत्र से प्रत्याशी श्रेया वर्मा भी होंगी। रोड-शो अम्बेडकर चौराहा थाना नगर कोतवाली गोण्डा से प्रारम्भ होकर जिलाधिकारी आवास से एसबीएस चौराहा नगर कोतवाली होते हुए गुरुनानक चौक थाना नगर कोतवाली और गुड्डू मल चौराहा पहुंचेगा। रोड-शो वहां से मनकापुर बस अड्डा (वाया आवास विकास चौराहा) बड़ा गांव पुलिस चौकी से गुरुनानक चौक होते हुए अम्बेडकर चौराहा में समाप्त होगा।

मोदी सरकार ने 10 से 12 करोड़ लोगों को खाद्य सुरक्षा कानून से वंचित किया: कांग्रेस

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता अभय दुबे, उप्र कांग्रेस मीडिया विभाग के चेयरमैन व पूर्व मंत्री डॉ. सीपी राय, नेशनल मीडिया कोऑर्डिनेटर गरिमा मेहरा दसौनी, चित्रा बाथम तथा यूपी कांग्रेस प्रवक्ता शुचि विश्वास द्वारा प्रेसवार्ता को सम्बोधित किया गया।

उक्त नेताओं ने कहा कि मोदी सरकार ने 10 से 12 करोड़ लोगों को खाद्य सुरक्षा कानून से वंचित किया। कांग्रेस पार्टी ने एक ऐतिहासिक फैसला लेते हुए देश के नागरिकों की मोदी जनित महंगाई से मुक्ति का शंखनाद कर दिया है। पहले हर गरीब परिवार की महिला को 1 लाख रुपए साल देने का वादा किया फिर युवाओं की पहली नौकरी की पक्की की घोषणा ने देश के हर घर को खुशियों से भर दिया। मनरेगा मजदूरों को 400 रुपए प्रतिदिन का आत्मसम्मान उनकी दहलीज पर रख दिया। अब 5 किलो नहीं बल्कि 10 किलो अनाज प्रति व्यक्ति प्रति माह की घोषणा ने इतिहास रच दिया। मोदी सरकार बनाम कांग्रेस की गारंटी का सच बताते हुए नेताओं ने कहा कि खाद्य सुरक्षा कानून 2013 का नाम बदलकर गरीब कल्याण रखा। मोदी सरकार ने बंद की गरीब कल्याण योजना कांग्रेस के खाद्य सुरक्षा कानून का नाम बदलकर प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना रखा। सोनिया गांधी एवं राहुल गांधी की प्रेरणा से 10 सितम्बर 2013 को खाद्य सुरक्षा कानून अधिसूचित किया गया था, जिसके तहत देश की 75 प्रतिशत ग्रामीण आबादी और 50 प्रतिशत शहरी आबादी अर्थात लगभग देश की 80 करोड़ लोगों को 5 किलो गेंहू और चावल 2 और 3 रूपये प्रतिकिलो में दिया जा रहा था। जिसके तहत उत्तर प्रदेश के 14 करोड़ 97 लाख लोगों को इस योजना में शामिल किया गया था।

मोदी सरकार ने कोविड की महामारी को देखते हुए 21 अप्रैल 2020 को प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना प्रारंभ की गई थी जिसके तहत 5 किलो अतिरिक्त अनाज प्रत्येक व्यक्ति को दिया जाना तय किया गया था, जिसके तहत 4 किलो गेंहू और 1 किलो चावल दिया जा रहा था। इस योजना को मोदी सरकार ने 1 जनवरी 2023 को इस योजना को बंद कर दिया, और 2013 के खाद्य सुरक्षा कानून का नाम बदलकर इसे प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना नाम दे दिया और उस में लिख दिया कि यह योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना 2013 के प्रावधानों को सुदृढ़ करने के लिए लाई गई है।

मोदी सरकार ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून 2013 में यह बदलाव किया कि 2 और 3 रूपये प्रतिकिलो मिलने वाला गेंहू और चावल मुफ्त कर दिया। इस योजना में मोदी सरकार को अतिरिक्त सलाना सिर्फ 10 से 12 हजार करोड़ खर्च करना पड़ा। कांग्रेस पार्टी ने 10 किलो अनाज प्रति व्यक्ति प्रति माह की घोषणा की है अर्थात अतिरिक्त 5 किलो अनाज के आधार पर मूल्यांकन किया जाये तो आज चावल की इकोनॉमिक कास्ट 39.2 रूपये प्रतिकिलो और गेंहू की इकोनॉमिक कास्ट 27 रुपए प्रतिकिलो है। औसत के आधार पर यदि मूल्यांकन किया जाए तो लगभग 1 लाख 60 हजार करोड़ रुपए इस योजना पर अतिरिक्त व्यय किये जायेंगे। इतना ही नहीं कांग्रेस पार्टी ने देश को महंगाई की मार से बचाने के लिए अपने घोषणा पत्र में दाल और तेल में मुहैया कराने का वादा किया है।

भाजपा सरकार में लोगों के जीवन स्तर में सुधार आया: स्वतंत्र देव सिंह

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और प्रदेश के जलशक्ति मंत्री स्वतंत्र देव सिंह ने शुक्रवार को इंडी गठबंधन पर जमकर हमला बोला। उन्होंने कहा कि जब आपलोग बूथ के अंदर वोट देने जाएँगे तो याद रखियेगा कैसे सपा-कांग्रेस के नेताओं ने श्री राम के अस्तित्व को काल्पनिक बताया और रामलला सालों तक टेंट में रहे। उन्होंने कहा कि जब से अयोध्या में श्री राम मंदिर बना है, पूरे क्षेत्र का कायापलट हो गया है। रोज़ 2 से 3 लाख लोग प्रभु के दर्शन भी कर रहे हैं और दूसरी तरफ़ अर्थव्यवस्था को भी गतिशील कर रहे हैं। जलशक्ति मंत्री ने शुक्रवार को दो जन सभाएँ और एक युवा मोर्चा सम्मेलन को सम्बोधित किया। कैसरगंज से लोकसभा प्रत्याशी करणभूषण सिंह के पक्ष में जनसभा की तथा अंबेडकर नगर में लोकसभा प्रत्याशी रितेश पांडे के लिए युवा मोर्चा सम्मेलन और जनसभा संबोधित की। स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि जो श्री राम का नहीं, वह किसी काम का नहीं। इंडी गठबंधन के नेताओं ने ना सिर्फ़ राम मंदिर की राह में रोड़े अटकाए बल्कि मंदिर निर्माण के बाद प्रभु श्रीराम के दर्शन करने भी नहीं गये। अब कांग्रेस सपा के नेता कह रहे हैं कि सत्ता पाते ही रामलला को फिर से टेंट में भेज देंगे। ऐसे लोगों को सबक सिखाने का वक्त आ गया है।

स्वतंत्र देव सिंह ने कहा कि मोदी जी राम को लाये हैं। उनको तीसरी बार प्रधानमंत्री पद का दायित्व देना है। उन्होंने कहा कि आपको याद होगा कैसे विपक्ष की सरकारों में गुंडागर्दी, महिलाओं से छेड़खानी, छिनौती आम बात थी। पुलिस अपराधियों के ख़िलाफ़ रिपोर्ट लिखने के बजाय आज़म ख़ान की भैंस ढूँढती थी। जलशक्ति मंत्री ने कहा कि भाजपा सरकार में लोगों के जीवन स्तर में सुधार आया है। अपराध कम हुए हैं। हमारा भारत विकास के रास्ते पर सरपट दौड़ रहा है। उन्होंने कहा कि बस कुछ ही दिन और मेहनत करनी है। युवा कार्यकर्ताओं से अपील करते हुए उन्होंने कहा की बस आप ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में वोटरों को बूथ तक पहुँचाए। जनता के आशीर्वाद से मज़बूत होकर प्रधानमंत्री मोदी जी हैट्रिक करने जा रहे हैं।

पांचवे चरण की 14 लोकसभा सीटों पर मैदान में हैं 144 प्रत्याशी

- चुनाव प्रचार का आज अंतिम दिन, 20 मई को होगा मतदान

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बताया कि लोकसभा सामान्य निर्वाचन-2024 में पांचवे चरण के अंतर्गत प्रदेश की 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों तथा 173-लखनऊ पूर्व विधानसभा उप निर्वाचन-2024 के लिए 20 मई, 2024 (सोमवार) को मतदान होगा। पांचवे चरण के इन सभी लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों के लिए 144 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं। वहीं, लखनऊ जनपद की 173-लखनऊ पूर्व विधानसभा उप निर्वाचन के लिए 4 प्रत्याशी चुनाव मैदान में हैं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने के लिए लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की

लखनऊ पूर्व विधानसभा उपचुनाव चुनाव में 4 प्रत्याशी मैदान में

धारा-126 के तहत निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान समाप्त होने से पूर्व के 48 घंटे की अवधि में अर्थात कल 18 मई, 2024 को सायं 6 बजे से पांचवे चरण के सभी 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों तथा लखनऊ पूर्व विधानसभा उप निर्वाचन के लिए भी चुनाव प्रचार-प्रसार संबंधी समस्त गतिविधियों व अभियानों पर प्रतिबंध रहेगा। चुनाव प्रचार की अवधि समाप्त होने के बाद इन निर्वाचन क्षेत्रों में सभी राजनैतिक दलों के बाहरी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों की मौजूदगी पूर्णतया प्रतिबंधित रहेगी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि पांचवे चरण का चुनाव प्रचार अभियान समाप्ति के बाद इन निर्वाचन क्षेत्रों के जिला निर्वाचन अधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि राजनैतिक दलों के सभी बाहरी पदाधिकारी व कार्यकर्ता इस दौरान इन निर्वाचन क्षेत्रों में उपस्थित न रहें। इसके लिए मतदान से पहले चुनाव प्रचार पर रोक संबंधी आयोग के निर्देश को सभी राजनैतिक दलों, उम्मीदवारों और उनके प्रतिनिधियों के संज्ञान में लाना सुनिश्चित करेंगे।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि निर्वाचन आयोग द्वारा मतदान के दिन मतदेय स्थलों (पोलिंग बूथ) के अंदर मोबाइल फोन, स्मार्ट फोन, वायरलेस सेट आदि ले जाने पर रोक लगायी गयी है। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्रदेश में पांचवे चरण के अंतर्गत 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों तथा लखनऊ पूर्व विधानसभा उप निर्वाचन के लिए 20 मई, 2024 (सोमवार) को मतदान होना है। इस चरण की 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में मोहनलालगंज (अ.जा.), लखनऊ, रायबरेली, अमेठी, जालौन (अ.जा.), झांसी, हमीरपुर, बांदा, फतेहपुर, कौशाम्बी (अ.जा.), बाराबंकी (अ.जा.), फैजाबाद, कैसरगंज, गोण्डा लोकसभा सीटें आती हैं।

इसमें से 10 सीटें सामान्य श्रेणी की हैं और 4 सीट अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है। पांचवे चरण के 14 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र प्रदेश के लखनऊ, सीतापुर, रायबरेली, अमेठी, सुल्तानपुर, जालौन, झांसी, कानपुर देहात, ललितपुर, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, फतेहपुर, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, बाराबंकी, अयोध्या, गोण्डा, बहराइच तथा बलरामपुर सहित 21 जिलों के अंतर्गत आते हैं।

महान दल ने बिना शर्त एनडीए को दिया समर्थन

- भाजपा सरकार जन-जन की आत्मनिर्भरता के लिए कर रही कार्य: भूपेन्द्र सिंह चौधरी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी के समक्ष शुक्रवार को प्रदेश भाजपा मुख्यालय में महान दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष केशव देव मौर्य ने बिना शर्त अपनी पार्टी का समर्थन एनडीए को देने की घोषणा की। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने महान दल के नेता केशव देव मौर्य सहित उनके पदाधिकारियों का एनडीए परिवार में स्वागत करते हुए कहा कि लोकसभा चुनाव के आगामी चरणों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रही विकास यात्रा को समर्थन देने के निर्णय के लिए महान दल का स्वागत व अभिनंदन है। हम सभी मिलकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प को पूरा करने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि मोदी के नेतृत्व में गरीब, किसान, युवा व महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक उत्थान के लिए समर्पित भाजपा सरकार देश को आर्थिक महाशक्ति बनाकर जन-जन की आत्मनिर्भरता के लिए कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि हम सभी मिलकर एनडीए परिवार को मजबूत करेंगें तथा एनडीए प्रत्याशियों की विजय में सहयोग के साथ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत के संकल्प को पूर्ण करने में सहभागी बनेंगे। महान दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष केशव देव मौर्य ने कहा कि महान दल समाजवादी पार्टी से समर्थन वापस लेकर भारतीय जनता पार्टी व एनडीए को समर्थन की घोषणा करता है। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन में लगातार हो रही उपेक्षा के पश्चात् महान दल ने भाजपा को समर्थन का निर्णय लिया और आज भाजपा को समर्थन देने के लिए मैं यहां उपस्थित हूं। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव ने कभी हमें अपने बगल मे बैठाकर प्रेस वार्ता नहीं की। लेकिन आज भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष जी के साथ बैठकर मैं प्रेस वार्ता कर रहा हूं। महान दल को सम्मान देने के लिए भाजपा परिवार का आभारी हूं और धन्यवाद प्रकट करता हूं। उन्होंने प्रेसवार्ता के माध्यम से अपनी पार्टी के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं तथा समर्थकों से एनडीए प्रत्याशियों को विजयी बनाने की अपील की।

पंजे व साइकिल के सपने टूटे, कुनबा बिखरा: मोदी

● सनातन धर्म का विनाश करने के बयान पर इंडिया गठबंधन को घेरकर जमानत जब्त करने की अपील

फतेहपुर। पीएम नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार फतेहपुर की चुनावी जनसभा में इंडिया गठबंधन पर जबर्दस्त प्रहार किए। इस गठबंधन को भानुमती का कुनबा करार हुए कहा कि अब यह बिखरने लगा है। सपा व कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने तो घर से निकलना ही बंद कर दिया है। इंडिया गठबंधन में अब 4 जून के बाद आने वाले चुनावी परिणामों को लेकर प्लानिंग हो रही है। उन्होंने सत्ता में आने के बाद सनातन धर्म का विनाश करने के बयान पर भी इंडिया गठबंधन को घेरते हुए जनता से उनकी जमानत जब्त कराने की अपील की। शहर में फतेहपुर संसदीय सीट के साथ कौशांबी व बांदा से भाजपा उम्मीदवार के पक्ष में चुनावी जनसभा करने आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि अभी चार चरण के चुनाव हुए हैं। कांग्रेस, सपा जैसे दलों से वास्ता रखने वाला भानुमती का यह कुनबा अब बिखरने लगा है। उसने हथियार डाल दिए हैं। यही कारण है कि बचे हुए चुनाव में कोई मेहनत नहीं करना चाहता। इसी वजह से इंडिया गठबंधन के कार्यकर्ताओं ने तो अब घर से ही निकलना छोड़ दिया है क्योंकि सवाल हारी बाजी को कौन खेले को लेकर खड़ा हो गया है।

उन्होंने जनता की तरफ सवाल उछालते हुए पूछा कि वह कुछ कहना चाहते हैं क्या उसे ध्यान से सुना जाएगा। हांमी की हुंकार पर कहा कि मैं आपको भीतर की बात बताता हूं। आप सभी को पता है कि जब खबर पक्की होती है तभी मैं बताता हूं। मैंने कहा था कि कांग्रेस के शहजादे केरल से भाग खड़े होंगे। भागे कि नहीं। मैंने यह भी कहा था कि अमेठी की तरफ जाने की हिम्मत नहीं करेंगे। क्या ऐसा किया। प्रधानमंत्री ने आगे की खबर का हवाला देते हुए कहा कि अब इज्जत बचाने के लिए मिशन 50 पर काम हो रहा है। भानुमती के कुनबे पर हवा भरने की कोशिश की जा रही है। इंडिया गठबंधन रूपी गाड़ी का टायर पहले से ही पंचर है। उन्होंने मोदी-मोदी की गूंज के बीच कहा कि अब 4 जून के बाद की प्लानिंग हो रही है कि हार का ठीकरा किस पर फोड़ा जाए, खटाखट-खटाखट। मुझे कोई बता रहा था कि विदेशी यात्रा का टिकट भी पक्का हो गया है, खटाखट खटाखट। सही बात तो यह है कि कांग्रेस का यूपी में कोई वजूद नहीं है। हर चुनाव में दो लड़कों की जोड़ी लॉन्च हो जाती है क्योंकि दोनों के सारे गुण मिलते हैं। यह दोनों परिवारवाद को समर्पित हैं। भ्रष्टाचार के लिए राजनीति में हैं। अपराधी और माफिया उनके साथी हैं। आतंकवादियो के हमदर्द हैं।

सपा का शासन तो सबको पता है। प्रदेश का बच्चा-बच्चा जानता था कि आतंकियों को खुली छूट उस सरकार में थी। उस वक्त वन जिला वन माफिया पर काम हो रहा था। फिरौती अपहरण के साथ महिलाओं का घरों से निकलना दूभर था। अब माफिया माफी मांगते घूम रहे हैं लेकिन सपा का माफिया मोह अभी तक खत्म नहीं हुआ है। इनके मुखिया, माफिया की कब्र पर फातिया पढ़ने जाते हैं। कांग्रेस को पाकिस्तान और सपा को दंगाइयों का हमदर्द बताते हुए कहा कि आज फिर से समाज को बांटने के लिए जहर घोला जा रहा है। सपा और कांग्रेस को लगता है कि हमारे समाज को तोड़कर अपना काम बना लेंगे। मुल्क के वजीर-ए-आज़म ने राम मंदिर मुद्दे पर भी कांग्रेस और सपा के सहजादों पर निशाना साधा।

कांग्रेस के शहजादे राम मंदिर में ताला डलवाने का ख्वाब देख रहे हैं तो सपा के शहजादे मंदिर को बेकार बता रहे हैं। उनके गठबंधन के लोग कहते हैं कि सत्ता में आकर सनातन धर्म का विनाश कर देंगे। आप ही बताइए, क्या आप अपना एक भी वोट इन्हें देंगे। इन्हें वोट देना चाहिए क्या। उनकी जमानत जप्त नहीं होनी चाहिए क्या। जनसभा में डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्या, प्रभारी मंत्री राकेश सचान, लोकसभा प्रत्याशी एवं केंद्रीय राज्यमंत्री निरंजन ज्योति, कौशांबी प्रत्याशी विनोद सोनकर, बांदा प्रत्याशी आरके पटेल, धर्मपाल सैनी, विधायक कृष्णा पासवान, विकास गुप्ता, राजेंद्र पटेल, जय कुमार सिंह जैकी, सहित तमाम भाजपाई मौजूद रहे।

गृह मंत्रालय के फर्जी कार्ड के साथ मिला युवक

फतेहपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए बनाई गई कॉटेज में अनाधिकृत रूप से घुसने का एक युवक प्रयास कर रहा था। पीएमओ एवं एसपीजी ने कॉटेज में ताला बंद किया था। ताला तोड़ने को लेकर हो-हल्ला हो रहा था। गृह मंत्रालय का फर्जी कार्ड भी मिला। भाजपा नेताओं के कार्यक्रम में फर्जी कार्ड के जरिए रौब दिखाता था। जितिन प्रसाद, जेपी नड्डा एवं गत दिवस योगी आदित्यनाथ की जनसभा में भी एलआईयू एवं पुलिस अधिकारियों से युवक की भिड़ंत हो चुकी है। युवक का नाम ऋतिक बताया जा रहा है। एसपीजी ने युवक को अपर जिलाधिकारी एवं पुलिस को सौंप कार्रवाई करने को कहा। जांच पड़ताल में पुलिस जुटी है। पकड़ा गया युवक भाजपा नेताओं को अपना करीबी बताता है। पकड़ा गया युवक भाजपा पदाधिकारी का भाई बताया जा रहा है।

उम्मीद थी मुलायम के बेटे में थोड़ी समझ होगी

फतेहपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यूपी के विकास पर चर्चा करते हुए सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश सिंह यादव पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि जब 2014 में वह केंद्र सरकार में आए तो उन्हें पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह के बेटे से इतनी उम्मीद तो थी ही कि उनमें थोड़ी बहुत तो समझ होगी ही लेकिन बहुत जल्द यह उम्मीद टूट गई। उदाहरण पेश करते हुए कहा, उस वक्त पीएम आवास योजना शुरू हुई थी। केंद्र सरकार ने कई बार यूपी की सपा सरकार को चिट्ठी लिखी लेकिन आवासीय योजना की तरफ ध्यान नहीं दिया। बहुत प्रयास के बाद कुछ हजार घर ही यूपी में बन सके। महलों में रहने वालों ने गरीबों की मांगी गई लिस्ट ही केंद्र सरकार को उपलब्ध नहीं कराई। उन्होंने कहा कि वह जानते थे कि यूपी की जनता गरीबों से नाइंसाफी करने वाली सरकार को उखाड़ फेंकेगी। अब जबकि भाजपा सरकार है तो तेजी से घर बना रहे हैं। तमाम कल्याणकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों को दिया जा रहा है।

फतेहपुर की सीमेंट फैक्ट्री देगी रोजगार

फतेहपुर। पीएम ने कहा कि विकास किस तरह का होता है। यह फतेहपुर, बांदा और कौशांबी के लोग जान चुके हैं। आज प्रदेश की पहचान विकास के नाम पर होती है। एयरपोर्ट, मेट्रो जैसे प्रोजेक्ट इसका उदाहरण हैं। फतेहपुर में सीमेंट फैक्ट्री बनने का हवाला देते हुए कहा कि इसके संचालन से युवाओं को यहां से रोजगार मिलेगा।

यूपी के विकास को आपकी गारंटी की दरकार

फतेहपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फतेहपुर की जनता से शत प्रतिशत मतदान करने की अपील की। उन्होंने कहा कि यूपी के विकास के लिए मोदी को आपकी गारंटी चाहिए। प्रधानमंत्री की जनसभा में उत्साह और उल्लास का रंग देखे बना। तमाम चेहरे आयोजन स्थल में मोदी का स्वरूप लिए नजर आए। उधर, अति उत्साह में कुछ कार्यकर्ताओं को आयोजन स्थल भी छोड़ना पड़ा। एक समर्थक की ही बात करें तो वह इस तरह झंडा लहरा रहा था कि पीछे वाले अपने नेता को देख नहीं पा रहे थे। समर्थकों की इस जमात का दर्द महसूस करते हुए प्रधानमंत्री ने माइक के जरिए सुरक्षा कर्मियों का ध्यान आकर्षित कराया। साथी यह भी कहा कि उन्हें सम्मान से ले जाइए।

चुनौती देने का नाम मोदी, जो चुनौती से टकराता है वही मोदी कहलाता है

● सपा कांग्रेस सरकार में बुंदेलखंड के लोग बूंद बूंद पानी को तरसते थे

मंच से जनसभा को संबोधित करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी,सभा में बैठे लोग।

राठ (हमीरपुर)। हमीरपुर महोवा जालौन के सबई लौगन को हमाई राम राम,साथ ही घर जाकर सबई जनन के हमाई राम राम बोल देना के साथ जन सभी को राठ कस्वे में शुक्रवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हमीरपुर महोवा संसदीय क्षेत्र के प्रत्याशी पुष्पेंद्र सिंह चंदेल के समर्थन में चुनावी जनसभा को संबोधित करते हुये कहा कि सपा कांग्रेस सरकार में बुन्देलखंड के लोग बूंद बूंद पानी को तरसते थे,सूखा बुन्देलखंड की पहचान बनगयी थी। योजना आती थी योजना का पैसा खा जाते थे,कहा कि चुनौती को चुनौती देने का नाम मोदी है जो चुनौती से टकराता है वही मोदी कहलाता है।

मोदी ने युवा मतदाताओं से कहा कि बुंदेलखंड की समस्या को युवा लोग अच्छी तरह जानते है। बुन्देलखंड में जल जीवन मिशन में बारह करो्ड़ से ज्यादा घरो में घरो में पानी पहुचाया। क्षेत्र में सैकडो घरो में पानी पहुच चुका है। वह काम की रिपोर्ट लगातार लेते रहते है। भाजपा ने केन वेतवा लिंग परियोजना में काम शुरु कर दियाहै। बुंदेलों को पानी मिले सरकार इसके लिये पूरी तरह संकल्पित है। सरकार इस परियोजना के लिये चालिस हजार करोड़ से ज्यादा खर्च करेगी। तभी विकास के लिये पंख लगेगे। बीएनबी डिग्री कालेज में रैली में प्रधानमंत्री ने कहा कि इस परियोजना से न केवल पानी की समस्या हल होगी बल्कि कृषि के उत्पाद में सहायक होगी। उन्होने पूर्व मुख्यमंत्री बाबू कल्याण सिंह का नाम लेकर नाराज लोधी मतदाताओं को आकर्षित करने का प्रयासकरते हुये कहा कि कल्याण सिंह राममंदिर के लिये अपनी सरकार को बलिदान कर दिया था। विपक्षी उनको श्रद्धाजलिं देने जाते तो उनका बोट कम हो जाता, मगर एक माफिया की मौत पर विपक्षी आसू बहाने गये थे। अंबेडकर ने संविधान में स्पष्ट किया था की धर्म के नाम पर आरक्षण नही दिया जायेगा। मगर कांग्रेस व सपा आपके आरक्षण को खत्म करना चाहते है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सपा कांग्रेस के इरादे साफ नही है। यह दल आपकी संपत्ति का आकलन करउसे हड़पने का प्रयास कर रही है। प्रधानमंत्री ने सबसे पहले ब्रम्हांनन्द की समाधि स्थल पर जाकर नमन किया। आगे सरकार बनने पर हरेक 70 साल के वृद्ध के लिये मुफ्त उपचार करने की व्यवस्था सरकार करेगी। बुंदेलखंड एक्सप्रेस के किनारे किनारे नये नये रोजगार स्थापित किये जायेगे। 42 मिनट के भाषण में पीएम ने बुंदेलखंड की पानी की समस्या पर ही स्पीच दी। सात मर्तवा पानी पिया।

झलकिया

दो बजकर 2 मिनट पर हैलीपेड पर उतरा पीएम मोदी का उड़न खटोला, दो बजकर 10 मिनट पर पीएम मोदी ने स्वामी ब्रह्मानंद महाराज की समाधि पर टेका माथा , दो बजकर 23 मिनट पर मंच पर पहुंचे पीएम मोदी, दो बजकर 24 मिनट पर हाथ हिलाकर मंच से लोगों का किया अभिनंदन , दो बजकर 33 मिनट पर पीएम मोदी ने बोलना शुरू किया , तीन बजकर 22 मिनट पर पीएम मोदी का उड़ा उड़न खटोला, भीषण गर्मी में पुलिस कर्मी पीने के पानी को इधर-उधर भटके।

आज शाम पांच बजे थम जाएगा प्रचार, जनसंपर्क में झोंकी ताकत

फतेहपुर। पांचवें चरण में फतेहपुर संसदीय सीट के होने वाले चुनाव के प्रचार में शुक्रवार और तेजी देखने को मिली। भाजपा, सपा और बसपा उम्मीदवारों के साथ दूसरे प्रत्याशियों में भी मतदाताओं के बीच पहुंचने की होड़ देखने को मिली। शनिवार, चुनाव प्रचार का आखिरी दिन होगा। घड़ी में शाम पांच बजते ही इस पर ब्रेक लग जाएगा। जिसके बाद उम्मीदवारों को निर्वाचन आयोग की गाइडलाइन के मुताबिक भाग्य विधताओं से रूबरू होने का मौका मिल सकेगा।

जिले में 20 में को चुनाव होना है। दलीय और निर्दलीय उम्मीदवार मिलाकर कल 15 प्रत्याशी मैदान में हैं। जैसे-जैसे चुनाव की घड़ी आ रही है। देश की सबसे बड़ी संसद के प्रतिनिधित्व का ख्वाब संजोए उम्मीदवारों की दिल की धड़कनें तेज होती जा रही है। प्रत्याशी, उनकी किस्मत का फैसला करने वाले मतदाताओं के बीच अपनी दावेदारी मजबूत बनाने को पहुंच रहे हैं। सभी की कोशिश है, जल्दी से जल्दी ज्यादा से ज्यादा वोटरों से संपर्क साधना क्योंकि शनिवार की शाम 5 बजे से चुनाव पर ब्रेक लग चुनाव प्रचार थम जाएगा। इसी कारण शुक्रवार को प्रचार अभियान में और रवानी दिखाई दी। उम्मीदवारों के काफिले एक गांव से दूसरे गांव का दौरा करते नजर आए। भाजपा सपा और बसपा समर्थकों के बीच प्रचार अभियान की होड़ देखने को मिली।

यही वजह रही कि प्रत्याशियों के साथ निकले समर्थक के परिजन उनके देर शाम घर वापस न लौटने पर फोन मिलाते नजर आए। जवाब मिलने पर कि वह नेताजी के साथ हैं, इस बात पर परिजन खामोश दिखाई दिए। शुक्रवार को प्रचार का समय दायरा बढ़ा दिया गया जो प्रचार वाहन शाम होने के साथ कार्यालय का रख कर लेते रहे।

क्विक न्यूज

स्ट्रांग रूम की निगरानी हेतु सम्बन्धित उम्मीदवार स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि को कर सकते हैं नियुक्त

कानपुर देहात। मुख्य निर्वाचन अधिकारी उप्र लखनऊ के द्वारा दिये गये निर्देशानुसार जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी आलोक सिंह ने बताया कि लोक सभा सामान्य निर्वाचन.2024 में 41.इटावा (अजा) के अर्न्तगत 207.सिकन्दरा विधानसभा क्षेत्र, 42.कन्नौज के अर्न्तगत 205.रसूलाबाद विधान सभा क्षेत्र एवं 44.अकबरपुर के अर्न्तगत 206.अकबरपुर रनिया विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र की पोल्ड ईवीएम/वीवी पैट अकबरपुर डिग्री कालेज, अकबरपुर के निर्धारित स्ट्रॅाग रूमों में रखी हुई हैं। उक्त स्ट्रांग रूम की निगरानी हेतु सम्बन्धित उम्मीदवार स्वयं अथवा अपने प्रतिनिधि को नियुक्त कर सकते हैं। ऐसे समस्त प्रतिनिधि अकबरपुर डिग्री कालेजए अकबरपुर के गेट के समीप बने कमरे में सीसीटीवी कैमरों का अवलोकन करते हुए निर्धारित टेन्ट में रह सकते हैं। उक्त सीसीटीवी कैमरों से समस्त स्ट्रांग रूमों का अवलोकन किया जा सकता है। उन्होंने समस्त निर्वाचन लडने वाले उम्मीदवारों से अनुरोध है कि वे अपने.अपने प्रतिनिधियों को नामित करते हुए उसकी सूचना जिला निर्वाचन कार्यालय एवं सम्बन्धित सहायक रिटर्निंग आफिसर को देने का कष्ट करें तथा नामित प्रतिनिधियों के पहचान पत्र सम्बन्धित सहायक रिटर्निंग आफिसर के माध्यम से निर्गत कराकर सम्बन्धित परिसर में प्रवेश कर सकते हैं।

कंटेनर की टक्कर से पंचायत मित्र की मौत

फर्रुखाबाद। बाइक से आ रहा पंचायत मित्र मार्ग दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे उपचार के लिए निजी वाहन से लोहिया अस्पताल में भर्ती किया गया। जहाँ परीक्षण के उपरांत चिकित्सक से मृत घोषित कर दिया। कन्नौज के जलालपुर पनवारा के ग्राम रतनापुर निवासी 37 वर्षीय जगविजय उर्फरिंकू पाल पुत्र जगदीश पाल गाँव में पंचायत मित्र के पद पर कार्यरत था। गुरुवार को वह अपाचे बाइक से मोहम्मदाबाद गया था। उसी दौरान थाना जहानगंज के ग्राम बहोरिकपुर तिराहे पर तेज रफ्तार कंटेनर नें उसको जोरदार टक्कर मार दी जिससे जगविजय गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे निजी वाहन से लोहिया अस्पताल लाया गया। जहाँ ईएमओ डा. अभिषेक चतुर्वेदी नें मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर मृतक की पत्नी करिश्मा, माँ सुदामा आदि का रो-रो कर बुरा हाल हो गया । मृतक के साले अनिल कुमार नें बताया कि मृतक के 12 वर्षीय पुत्र मयंक, 9 वर्षीय जानवी, 6 वर्षीय पुत्री श्रद्धा, 4 वर्षीय पुत्र अयंक है। मृतक 5 बहनों में अकेला भाई था। थानाध्यक्ष जहानगंज भोलेंद्र चतुर्वेदी नें बताया कि चालक और टेंकर को पकड़ लिया गया है। तहरीर मिलने पर मुकदमा दर्ज किया जायेगा।

सड़क दुर्घटनाओं ने ली तीन लोगों की जान

संडीला (हरदोई)। दो सड़क दुर्घटनाओं में तीन लोगों की दुखद मौत हो गयी। पहली दुर्घटना सेंट थेरेसा बाईपास पर स्थित गौशाला के पास हुई। यहां अज्ञात डंपर ने बाइक सवार दो युवकों को कुचल दिया। बताया जाता है कि ग्राम आबिदखेड़ा निवासी सचिन पुत्र किशन और नीरज पुत्र सोहनलाल औद्योगिक क्षेत्र के किसी इकाई में काम करते थे। काम करके रात लगभग 9़30 बजे वापस आ रहे थे। जब उनकी मोटरसाइकिल सेंट थेरेसा बाईपास पर गौशाला के पास पहुंची तो सामने से आ रहे किसी डंपर ने बाइक को टक्कर मार दीए जिससे सचिन की मौके पर ही मौत हो गयी जबकि नीरज गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे ट्रॉमासेंटर भेजा गया लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गयी। सचिन विवाहित था और उसके परिवार में पत्नी तथा तीन बच्चे हैं जबकि नीरज अविवाहित था। दोनों की अकाल मौत से दोनों के घरों में मातम पसरा हुआ है। दूसरी दुर्घटना ग्राम तिलुइयां कलां में हुई। बताया जाता है कि ग्राम निवासी 60 वर्षीय अशरफी लाल पुत्र लक्षमन अपने घर के बाहर सो रहे थे। रात लगभग 11़30 बजे अज्ञात ट्रक ने उन्हें कुचल दियाए जिससे उनकी मौत हो गयी। इस ट्रक का ग्रामीणों ने पीछा किया लेकिन ट्रक चालक ट्रक को लेकर भागने में सफल रहा। पुलिस ने शवों का पोस्टमॉर्टम कराकर उन्हें परिजन को सौंप दिया।

पुलिस ने दो टप्पेबाज महिलाओं को दबोचा

संडीला (हरदोई)। पुलिस ने दो टप्पेबाज महिलाओं को गिरफ्तार किया है। इनके पास से जेवर तथा नकदी बरामद की गयी है। पुलिस के अनुसार मुकबिर की सूचना पर पुरानी तहसील के पास दो संदिग्ध महिलाओं को हिरासत में लिया गया। इन महिलाओं के पास से कुछ जेवर तथा 5000 रुपए नकद बरामद हुए। पकड़ी गयी महिलाओं ने अपने नाम शिवानी पत्नी विनोद निवासी थाना अयोध्यापुर राजस्थान तथा नैनी पत्नी पप्पू निवासी कहरकी थाना भरतपुर राजस्थान बताया। इनके पास से नशीला पदार्थ भी बरामद हुआ है।

डीएम ने स्ट्रांग रूम का किया निरीक्षण, कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के दिए निर्देश

कानपुर देहात। लोकसभा सामान्य निर्वाचन को सकुशल, शांतिपूर्ण, निष्पक्ष रूप में संपन्न कराए जाने के दृष्टिगत जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी आलोक सिंह के द्वारा अकबरपुर डिग्री कॉलेज में बने स्ट्रांग रूम का स्थलीय निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने स्ट्रांग रूम की सुरक्षा व्यवस्थाए सीसीटीवी कैमरे आदि का जायजा लेकर आवश्यक दिशा निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए। उन्होंने कहा सुरक्षा व्यवस्था में किसी प्रकार की लापरवाही न होने पाए, वैध पास धारक को ही परिसर में प्रवेश दिया जाएए सीसीटीवी कैमरे शत प्रतिशत संचालित रहे, किसी भी बाहरी व्यक्ति का प्रवेश परिसर में न होने पाए। डीएम ने पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों को बैरीकेटिंग ठीक प्रकार से बनाएं जाने तथा किसी प्रकार की लापरवाही न किए जाने के निर्देश दिए। सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी अजीत पांडेय सहित सुरक्षा व्यवस्था में लगे पुलिसकर्मी आदि उपस्थित रहे।

अतिक्रमण के चलते राहगीरों का निकलना मुश्किल

मोहम्मदी। नगर की सडको के किनारे अतिक्रमण के चलते राहगीरों का निकलना मुश्किल हो गया है। बताते चलें कि पैदल चलने वाले राहगीर नहीं चल सकते हैं क्योंकि दुकानों से अधिक सामान व्यपारियों ने फुटपाथ पर रख कर कब्जा कर लिया है। एखोमचे पर चायए चाट पकौड़ी के होटल भी फुटपाथ पर ही खुले हैं। वाहन भी खड़े रहते है। सड़क से वाहनों का आना.जाना भी बना रहता है। इसलिए पैदल यात्री अपनी जान जोखिम में डाल सड़क से ही गुजरने को मजूबर है और हादसों के शिकार हो रहे हैं। अक्रिमण के कारण यह सड़क सिकुड़ कर पतली गली सरीखी लगने लगी है। कहीं कहीं तो फटपाथ के साथ.साथ सड़क ही विलुप्त हो गई। यह वह सड़क है जिस पर आएदिन पैदल यात्रियों को दुकानदारों द्वारा बेइज्जत भी किया जाता है। जरा सा सामान में वाहन लग भर जाने से लोग एक जुट हो पैदल यात्रियों की धुनाई तक कर डालते है। यह सड़क कस्बे को एक छोर से दूसरे छोर को जोड़ती है। इस लिय भी इस सड़क का महत्वपूर्ण रोड में शुमार होता है। नगर की उत्तर दिशा में पडने वाले दर्जनों गांव व मुहल्लों के लोग जरूरी कामों से इस रोड पर आना जाना बना रहता हैं छात्र छात्राओं का निकलना होता हैं फुटपाथ पर ग्रामीणों द्वारा अपने वाहन आड़े तिरछे कर खड़े कर समस्या को और भी बढ़ा दिया जाता है जिससे जाम की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। वहीं अधिकारियों को भी जाम की समस्या से दो चार होना पड जाता हैए लेकिन फुटपाथ पर कब्जा जमाए लोगों की सेहत पर कोई भी फर्क नहीं पड़ता है जैसे अतिक्रमणकारी आला अफसरों को चैलेंज दे रहे हो, लेकिन जिम्मेदार अधिकारी मौन धारण किए हुए है। वही आपको बताते चलें नगर के मुख्य चौराहों पर सीसीटीवी कैमरे कोई भी चलते नजर नहीं आ रहे हैं। जिससे कभी भी कोई भी दुर्घटना घट जाती सीसीटीवी कैमरे केवल खानापूर्ति के लिए लगे हुए हैं। कोई भी घटना घट जाती उसके बाद फिर सीसीटीवी कैमरे खंगाले जाते हैं मगर सीसीटीवी कैमरो में कुछ नहीं मिलता है आखिर कब चलेंगे सीसीटीवी कैमरे यह जनता में सोचनीय विषय बना हुआ है जिम्मेदार अधिकारियों पर उठ रहे सवालिया निशान कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

मतदान में लगे कार्मिकों की लापरवाही पर सीडीओ द्वारा संबंधित विभागाध्यक्ष को दिए कड़ी कार्यवाही के निर्देश

● 19 मई को जालौन लोकसभा भोगनीपुर विधानसभा की पार्टी होगी रवाना, अनुपस्थित पाए जाने पर हो सख्त कार्यवाही

कानपुर देहात। मतदान की पार्टी में अनुपस्थित कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की तलवार लटकी दिखी। जनपद में 13 मई को लोकसभा सामान्य निर्वाचन 2024 के दौरान ड्यूटी में लापरवाही करने वाले तथा अनुपस्थित रहने वाले एवं कुछ कर्मचारी द्वारा उपस्थिति की हाजिरी लगाकर रवाना हुई बस में न बैठने वाले कर्मचारियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करने का निर्देश संबंधित कार्यालयाध्यक्षों को मुख्य विकास अधिकारी द्वारा दिया गया है। अधिकारियोंध्कर्मचारियों में खंड शिक्षा अधिकारी मैथाए अमरौधा व रसूलाबाद तथा सेक्टर मजिस्ट्रेट की आख्या पर संबंधित कर्मचारियों के विरुद्ध कार्रवाई की जा रही है वेतन रोकने के साथ.साथ निर्वाचन अधिनियम में नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी।

जिला प्रशासन के सख्त रवैये से अपने दायित्वों पर लापरवाही दिखाने वाले कार्मिक जिसमें जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय को इन्टर कालेज की कार्मिक उर्मिला देवी, एकता कटियार, प्रकाशदीप, खण्ड शिक्षा कार्यालय झींझक के अभिषेक कुमार दीक्षित, अश्वनी कुमार अग्निहोत्री, खण्ड शिक्षा कार्यालय अकबरपुर की प्रतीक्षा, रजनी, अंशिका देवी व पूनम गुप्ता को, खण्ड शिक्षा कार्यालय संदलपुर से विनय प्रताप सिंह भदौरिया, खण्ड शिक्षा कार्यालय अमरौधा से प्रगति द्विवेदी, कृष्ण त्रिपाठी, नवनीत गुप्ताएगुंजन मल्होत्रा, प्रेमलता, सूचि मालवीय, वंदना सचान, शिखा सचान, श्रीकांत, किरण कटियार को एवं जिला पंचायतराज अधिकारी कार्यालय के सफाई कर्मी मिथुन कुमार, गंगा देवी, झल्लो, ममता देवी, रवि कुमार को व एलडीएम सहकारी बैंक के ज्ञानेंद्र वर्मा, अनुपम सिंह, कन्हैयालाल को एवं मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी कार्यालय की प्रियंका गोयल पशुधन प्रसार अधिकारी जो हस्ताक्षर करके पार्टी में नहीं गई को सेक्टर मजिस्ट्रेट की रिपोर्ट पर अनुपस्थित पाई गईए के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही किये जाने हेतु संबंधित कार्यालयाध्यक्षों को निर्देश निर्गत किये गए हैं। इसके अतिरिक्त आगामी 19 मई को माती कलेक्ट्रेट से जालौन लोकसभा भोगनीपुर विधानसभा की पार्टी रवाना होगी जिसमें जो भी कर्मचारी अनुपस्थित पाया जाएगा उसके विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराते हुए अनुशासनात्मक कार्यवाही सुनिश्चित की जाएगी।

ट्रैक्टर से छात्रा की मौत से ग्रामीणों ने ट्रैक्टर को किया आग के हवाले

कुरारा, (हमीरपुर)। थाना क्षेत्र के कुतुबपुर गांव के पास मौरम लेकर जा रहे टैक्टर ट्राली के चालक ने लापरवाही से गाड़ी चलाकर सड़क किनारे से चल रही स्कूटी सवार छात्रा को कुचल दिया। जिससे उसकी मौके पर मौत हो गई। चालक को पुलिस ने मौके से गिरफ्तार कर थाने में बैठाया है। अक्रोशित भीड़ ने टैक्टर ट्राली को आग के हवाले कर दिया जो कि मौके पर जल कर खाक हो गया। दमकल दस्ते ने दो घंटे बाद मौके पर जाकर आग पर काबू पाया। पुलिस के मुताबिक कुरारा के इंग्लिश मीडियम स्कूल से पढ़कर वापस अपने गांव जा रही स्कूटी सवार दो छात्राओ को कस्बे से मौरम लेकर जा रहे ट्रैक्टर ट्रॉली के चालक ने टक्कर मार दी जिससे दोनो सड़क पर गिर गई। जिसमे एक छात्रा ट्रैक्टर से बुरी तरह कुचल कर मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने घायल छात्रा शुभी सिंह पुत्री अर्जुन सिंह निवासी मिस्त्रीपुर को इलाज के लिए सीएचसी कुरारा भेज दिया जहां से प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल भेज दिया है। मृतक छात्रा कौशकी (7) कक्षा दो में पढ़ती थी। अपनी मां पूजा सिंह के साथ विद्यालय आती थी। पूजा सिंह इसी विद्यालय में शिक्षक है। मृतक के पिता अजीत सिंह मिस्त्रीपुर गांव स्थित आर्यावर्त बैंक में दैनिक वेतन कर्मचारी है। घटना की जानकारी मिलते ही गांव सहित आसपास के गांवों के हजारों लोग मौके पर एकत्र हो गए। भीड़ ने टैक्टर ट्राली को आग के हवाले कर दिया। जो जलकर खाक हो गया है। दमकल दस्ते ने दो घंटे बाद जाकर आग बुझाई। भीड़ ने सड़क मार्ग में जाम लगा दिया। तथा थाना प्रभारी योगेश तिवारी के समझाने पर तीन बजे जाम खुला। तथा शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। इस घटना से मृतक बच्ची के परिजनों का रोकर बुरा हाल है।

डीसीएम समान लदा होने पर जलकर हुआ नुकसान, दमकल ने आग पर पाया काबू

फर्रुखाबाद। सामान भरी डीसीएम में अचानक संदिग्ध हालत में भीषण आग लग गयी। देखते ही देखते आग ने बिकराल रुप ले लियास दमकल ने कड़ी मसक्कत के बाद आग पर काबू पाया सथाना कादरी गेट के कादरी गेट-लाल दरवाजा मार्ग निवासी पुनीत पुत्र रामदेव दुबे की ट्रांसफोर्ट है। शुक्रवार को कानपुर से किराना, मेडिकल आदि का सामान भरा था। डीसीएम रतनेश्वर महादेव मंदिर के पास सड़क किनारे खड़ी थी। सुबह लगभग 8.30 बजे डीसीएम में अचानक आग लग गयी। जिससे हड़कंप मच गया। पुनीत मौके पर आ गए उन्होंने दमकल को सूचना दी। जिसके बाद दमकल मौके पर पंहुंची और कड़ी मसक्कत के बाद आग पर काबू पाया। आग लगने के दौरान सड़क पर जाम लग गया।

बंदी रक्षक के मौत मामले की रिपोर्ट डीजी जेल को भेजी गई

फर्रुखाबाद। बीते दिन जिला जिला जेल के बंदी रक्षक की मौत के बाद जेल अधीक्षक पर बंदी रक्षकों के द्वारा लगाये गये गंभीर आरोप लगाये गये थे। उधर पुलिस नें शव का पोस्टमार्टम भी कराया। पोस्टमार्टम में ह्रदयगति रुकने से मौत होना बताया गया है। मामले की जाँच रिपोर्ट डीजी कारागार को भेजी गयी है। दरअसल जिला जेल में तैनात 57 वर्षीय बंदी रक्षक जगदीश प्रसाद पुत्र राम सहाय को सीने में दर्द की समस्या के चलते लोहिया अस्पताल में भर्ती किया गया था। जहाँ ईएमओ डॉ. अभय श्रीवास्तव ने मृत घोषित कर दिया था। साथी की मौत की खबर पर दर्जन भर से अधिक बंदी रक्षक मौके पर लोहिया अस्पताल पंहुचे और जेल अधीक्षक भीम सेन मुकुंद पर समय से अवकाश न देनें का आरोप लगाया था। बंदी रक्षकों का आरोप था कि उन्हें बीमारी में न ही परिजनों की बीमारी में अवकाश दिया जाता था। मृतक जगदीश भी काफी दिनों से अवकाश मांग रहे थे। लेकिन जब उनकी हालत बिगड़ी तो उन्हें लोहिया भेजकर भर्ती कराया गया।

पुलिस नें बंदी रक्षक जगदीश प्रसाद के शव का पोस्टमार्टम कराया। शव के पोस्टमार्टम में सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक पोस्टमार्टम में ह्रदयगति रुकनें से ही बंदी रक्षक की मौत होनें की पुष्टि हुई है।

सेंट्रल जेल के वरिष्ठ जेल अधीक्षक व प्रभारी डीआईजी पीएन पाण्डेय में मामले की जाँच कर रिपोर्ट डीजी कारागार को भेज दी है। जिला जेल अधीक्षक भीम सेन मुकुंद नें बताया कि बंदी रक्षकों का आरोप गलत है। बंदी की मौत से पूर्व किसी को कोई समस्या नही थी अब बंदी रक्षक की मौत के बाद बखेड़ा खड़ा किया जा रहा है। अवकाश सुरक्षा व्यवस्था प्रभावित न हो इस हिसाब से दी जाती है। प्रभारी डीआईजी प्रेम नाथ पाण्डेय नें बताया कि उन्होंने मामले की रिपोर्ट डीजी को भेज दी है।

पुलिस अधिकारियों/कर्मचारियों की ब्रीफिंग कर दिए दिशा निर्देश, हरी झंडी दिखाकर पुलिस को किया रवाना

संवाददाता। लखीमपुर खीरी

आज दिनांक 17.04.2024 को पुलिस अधीक्षक खीरी, गणेश प्रसाद साहा द्वारा आगामी लोकसभा चुनाव के पंचम, षष्टमए सप्तम चरण में क्रमश: जनपद गोंडा, सिद्धार्थनगर एवं कुशीनगर में होने वाले मतदान हेतु चुनाव ड्यूटी के लिए पुलिस लाइन खीरी में पुलिस फोर्स की ब्रीफिंग कर आवश्यक दिशा.निर्देश दिए गए। जनपद खीरी से पंचम चरण में निर्वाचन ड्यूटी हेतु 01 निरीक्षक, 63 उनि, 956 हे.का./ का0 (सशस्त्र) व 94 हे.का./का0 (नि:शस्त्र) व षष्टम चरण में 01 निरीक्षक, 51 उ0नि, 948 हे.का./ का0 (सशस्त्र) एवं सप्तम चरण में 01 निरीक्षक, 43 उ0निए 646 हे.का./का0 (सशस्त्र) को लगाया गया है। ब्रीफिंग के दौरान पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा पार्टियों को रवाना करने से पहले पुलिस लाइन ग्राउंड में समस्त पुलिसकर्मियों को एकत्र करके चुनाव आयोग द्वारा दिये गये दिशा निर्देशों से अवगत कराते हुए अनुशासन में रहकर अपनी.अपनी ड्यूटी को पूरी निष्ठा के साथ करने हेतु निर्देशित किया गया जिससे कि निष्पक्ष व निर्विघ्न मतदान संपन्न हो सके। साथ ही अत्यधिक गर्मी के मौसम के कारण अधिक से अधिक तरल व पौष्टिक आहार लेकर अपने आप को स्वस्थ रखने के संबंध में भी दिशा निर्देश दिए गएए साथ ही ड्यूटी हेतु रवाना होने वाले समस्त पुलिसकर्मियों को फल व पानी की बॉटल वितरित कराया गया।

हेमंत का चुनाव में प्रचार के लिए अंतरिम जमानत पर ईडी से जवाब मांगा

भाषा। नई दिल्ली

उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से कहा कि उन्हें कथित भूमि घोटाले से जुड़े धनशोधन मामले में लोकसभा चुनाव में प्रचार के लिए अंतरिम जमानत देने से पहले प्रथम दृष्टया स्वयं को संतुष्ट करने की जरूरत है। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने सोरेन को अंतरिम जमानत देने के सवाल पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को 20 मई तक अपना जवाब दाखिल करने और मामले में उनकी गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली उनकी याचिका पर संक्षिप्त जवाब देने को कहा।पीठ ने मामले को 21 मई को अवकाशकालीन पीठ के समक्ष सूचीबद्ध करते हुए कह कि अंतरिम जमानत देने से पहले, हमें खुद को संतुष्ट करने की जरूरत है। ईडी को अंतरिम जमानत के सवाल पर अपना जवाब दाखिल करने दीजिए। हम मामले पर अगले हफ्ते सुनवाई करेंगे। यह सबसे कम समय है, जो हम दे सकते हैं। सोरेन की ओर से अदालत में पेश वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने कहा कि यदि अंतरिम जमानत दी गई, तो झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) नेता दो जून को आत्मसमर्पण करेंगे। सिब्बल ने कहा,"मामले में मेरे (सोरेन) खिलाफ कोई सामग्री नहीं है। यदि अंतरिम जमानत नहीं दी गई तो चुनाव खत्म हो जाएंगे।

मामले में सोरेन की ओर से पेश सिब्बल और वरिष्ठ अधिवक्ता अरुणाभ चौधरी ने कहा कि झामुमो नेता सोरेन के पास मामले से संबंधित जमीन का कब्जा नहीं है और उनका इससे कोई लेना-देना नहीं है।मामले में ईडी की ओर से पेश हुए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एस वी राजू ने कहा कि सोरेन को बहुत पहले गिरफ्तार किया गया था और उन्होंने अपनी नियमित जमानत याचिका खारिज होने को चुनौती भी नहीं दी है।राजू ने जांच एजेंसी की ओर से जवाब दाखिल करने के लिए समय मांगा और दावा किया कि पूर्व मुख्यमंत्री सोरेन सीधे तौर पर मामले में लिप्त हैं।सिब्बल ने कहा, उन्हें (राजू को) सभी दस्तावेज दाखिल करने दीजिए, मैं पांच मिनट में दिखा सकता हूं कि याचिकाकर्ता का उक्त जमीन से कोई लेना-देना नहीं है। न्यायमूर्ति खन्ना ने सिब्बल से कहा कि कुछ ऐसी सामग्री हैं जिन पर जांच एजेंसी भरोसा कर रही है - कि एक व्यक्ति संबंधित भूमि पर रह रहा है, भूमि पर एक चारदीवारी का निर्माण किया गया है और ईडी ने इसकी तस्वीरें संलग्न की हैं, फाइल नोटिंग की तस्वीरें हैं और भूमि पर रहने वाले उक्त व्यक्ति के बयान हैं।

पीठ ने सिब्बल से पूछा, एक और परिस्थितिजन्य साक्ष्य है जिस पर जांच एजेंसी भरोसा कर रही है कि मामले में जांच शुरू होने के बाद, एक अन्य व्यक्ति गया और उसने जमीन का मूल मालिक होने का दावा किया। इन सामग्री पर आपका क्या कहना है?वरिष्ठ वकील ने कहा कि सिर्फ इसलिए कि किसी व्यक्ति ने कहा है कि जमीन मंत्रीजी की है, इसका मतलब यह नहीं है कि सोरेन जमीन के मालिक हैं। सिब्बल ने कहा,मैं अपनी लिखित दलील दाखिल करूंगा और इन सामग्री का खंडन करूंगा। उन्होंने कहा कि झारखंड की शेष 10 लोकसभा सीट के लिए मतदान अगले तीन चरणों में 20 मई, 25 मई और एक जून को होने वाला है। न्यायमूर्ति खन्ना ने कहा कि अदालत हर चीज पर विचार करेगी और संभवत: न्यायमूर्ति दत्ता वाली एक पीठ अगले सप्ताह गर्मी की छुट्टियों के दौरान बैठेगी और मामले पर सुनवाई करेगी। सोरेन ने झारखंड उच्च न्यायालय के तीन मई के आदेश को चुनौती दी है, जिसने ईडी द्वारा उनकी गिरफ्तारी के खिलाफ उनकी याचिका खारिज कर दी थी। उन्होंने लोकसभा चुनाव में प्रचार के लिए अंतरिम जमानत का अनुरोध भी किया है, जब तक कि अदालत उनकी गिरफ्तारी के खिलाफ उनकी याचिका पर फैसला नहीं सुना देती।

सोरेन ने 13 मई को दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से जुड़े धनशोधन मामले में शीर्ष अदालत के आदेश का हवाला देते हुए लोकसभा चुनाव में प्रचार के लिए अंतरिम जमानत का अनुरोध किया था। वकील प्रज्ञा बघेल के माध्यम से दायर अपनी अपील में झामुमो नेता ने कहा कि उच्च न्यायालय ने उनकी याचिका खारिज करके गलती की है। सोरेन फिलहाल न्यायिक हिरासत के तहत रांची की बिरसा मुंडा केंद्रीय जेल में बंद हैं।ईडी ने आरोप लगाया है कि सोरेन द्वारा करोड़ों रुपए मूल्य के भूखंड हासिल करने के लिए जाली या फर्जी दस्तावेजों की आड़ में डमी विक्रेता और खरीदार दिखाकर आधिकारिक रिकॉर्ड में हेरफेर के माध्यम से"भारी मात्रा में अपराध की आय" अर्जित की।सोरेन के खिलाफ जांच रांची में 8.86 एकड़ जमीन से संबंधित है, जिसे ईडी के अनुसार, उनके द्वारा अवैध रूप से हासिल किया गया था।तेरह मई को झारखंड की चार लोकसभा सीट- खूंटी, सिंहभूम, लोहरदगा और पलामू में मतदान हुआ था।

टीएमसी नेताओं के आवास पर छापेमारी

चुनाव बाद हिंसा मामले में सीबीआई को छह आरोपियों की तलाश

कोलकाता। सीबीआई ने 2021 में पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बाद हुई हिंसा में भाजपा के एक कार्यकर्ता की हत्या के मामले में शुक्रवार को राज्य में कई स्थानों पर छापे मारे। सीबीआई को मामले में तृणमूल कांग्रेस के कुछ नेताओं सहित छह फरार आरोपियों की तलाश है। अधिकारियों ने बताया कि जांच एजेंसी के तलाश अभियान का लक्ष्य उन छह आरोपियों का पता लगाना है जिनके खिलाफ एक विशेष अदालत ने गैर जमानती वारंट जारी किया है।

अदालत ने बुद्धदेब मैती, प्रदीप मंडल, देबब्रत पांडा, तापस बेज, अर्जुन कुमार मैती और बिक्रमजीत दास के खिलाफ वारंट जारी किया है।एक अधिकारी ने बताया कि सीबीआई की टीम ने 2021 में चुनाव बाद हुई हिंसा में भाजपा के एक कार्यकर्ता की हत्या की जांच के सिलसिले में पूर्वी मेदिनीपुर जिले के काथी में तृणमूल कांग्रेस के दो नेताओं के आवासों पर तलाशी ली।

सीबीआई के अधिकारियों की एक टीम ने मामले की जांच के सिलसिले में शुक्रवार तड़के काथी ब्लॉक नंबर तीन में तृणमूल नेता देबब्रत पांडा और एक ब्लॉक प्रमुख नंददुलाल मैती के आवास पर छापा मारा। जन्मेजय दोलुई की हत्या के मामले में दर्ज प्राथमिकी में पांडा, नंददुलाल के बेटे और 52 अन्य को नामजद किया गया है। भाजपा कार्यकर्ता दोलुई की 2021 के विधानसभा चुनाव के बाद हुई हिंसा में हत्या कर दी गई थी। सीबीआई के अधिकारी ने कहा कि 30 लोगों को हत्या के सिलसिले में पूछताछ के लिए बुलाया गया था लेकिन उनमें से कोई नहीं आया। उन्होंने कहा, हम इन लोगों के ठिकानों पर छापे मार रहे हैं। उनसे पूछताछ किए जाने की जरूरत है।

शिक्षकों के नियमितीकरण पर सरकार विचार करे : हाईकोर्ट

लखनऊ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ पीठ ने राज्य सरकार को निर्देश दिया है कि वह उप्र के विभिन्न प्रबंधकीय कॉलेजों में 1993 से 1996 के बीच नियुक्त दर्जनों शिक्षकों के नियमितीकरण पर विचार करे। न्यायमूर्ति प्रकाश सिंह की पीठ ने क्षेत्रीय स्तर की समितियों (आरएलसी) द्वारा पारित आदेशों को रद्द करने के बाद यह फैसला सुनाया, जिन्होंने इन शिक्षकों की सेवाओं को नियमित करने से इनकार कर दिया था। तीर्थराज सहित दर्जनों शिक्षकों ने क्षेत्रीय संयुक्त शिक्षा निदेशक की अध्यक्षता वाली आरएलसी के आदेशों को अदालत में चुनौती दी थी। सामग्री पर विचार करने के बाद, पीठ ने आरएलसी के आदेशों पर आपत्ति जताते हुए कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि इन्हें सरसरी तौर पर पारित किया गया है। याचिकाकर्ता दो दशकों से अधिक समय से काम कर रहे हैं, राज्य को उन्हें सुनवाई का पूरा अवसर देने के बाद कानून के अनुसार उनके नियमितीकरण पर विचार करने के लिए एक कल्याणकारी राज्य के रूप में कार्य करना चाहिए।

कोर्ट ने मतदान के आंकड़े 48 घंटे के भीतर जारी करने संबंधी याचिका पर निर्वाचन आयोग से जवाब मांगा

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने एक गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) की उस याचिका पर शुक्रवार को निर्वाचन आयोग से एक हफ्ते के अंदर जवाब मांगा, जिसमें लोकसभा चुनाव के प्रत्एक चरण का मतदान संपन्न होने के 48 घंटे के अंदर मतदान केंद्रवार मत प्रतिशत के आंकड़े आयोग की वेबसाइट पर अपलोड करने का निर्देश देने का अनुरोध किया गया है। प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) डी.वाई. चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जे.बी. पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ इस मुद्दे पर गैर सरकारी संगठन एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की याचिका पर सुनवाई के लिए शाम साढ़े छह बजे बैठी।सीजेआई ने कहा कि निर्वाचन आयोग को याचिका पर जवाब देने के लिए कुछ उचित समय दिया जाना चाहिए और इसे सात चरण के लोकसभा चुनाव के छठे चरण से एक दिन पहले 24 मई को ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान एक उचित पीठ के समक्ष सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया।इससे पहले दिन में, वकील प्रशांत भूषण ने एनजीओ की ओर से मामले का उल्लेख किया और याचिका को तत्काल सूचीबद्ध करने का अनुरोध किया।पिछले हफ्ते एनजीओ ने अपनी 2019 की जनहित याचिका में एक अंतरिम आवेदन दायर किया, जिसमें उसने निर्वाचन आयोग को यह निर्देश देने की अपील की कि सभी मतदान केंद्रों के फॉर्म 17 सी भाग-प्रथम (रिकॉर्ड किए गए मत) की स्कैन की गई पढ़ने योग्य प्रतियां मतदान के तुरंत बाद अपलोड की जाएं।

मणिपुर से बाहर जा रहे सिविल सेवा के प्रत्एक अभ्यर्थी को 3,000 रु प्रतिदिन दे राज्य सरकार: न्यायालय

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने मणिपुर सरकार को हिंसा ग्रस्त पर्वतीय जिलों के सिविल सेवा अभ्यर्थियों को 26 मई को संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की परीक्षा में शामिल होने के लिए राज्य के बाहर की यात्रा करने के वास्ते प्रतिदिन 3,000 रुपए अदा करने का निर्देश दिया है।

शाम छह बजकर 50 मिनट पर एक विशेष सुनवाई में, प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ और न्यायूमूर्ति जे बी पारदीवाला तथा न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने राज्य के पर्वतीय जिलों के उन सिविल सेवा अभ्यर्थियों की शिकायतों पर गौर किया, जिन्होंने सुरक्षा चिंताओं को लेकर मणिपुर के बाहर के परीक्षा केंद्रों का विकल्प चुना है। न्यायालय ने कहा, जो लोग वर्तमान में पर्वतीय जिलों में रह रहे हैं और यूपीएससी परीक्षा के लिए आवेदन किया है, उनमें से प्रत्एक अभ्यर्थी को प्रति दिन 3,000 रुपए का भुगतान किया जाए ताकि वे परीक्षा में शामिल होने के लिए राज्य के बाहर की यात्रा कर सकें। पीठ ने कहा, इस लाभ को प्राप्त करने के इच्छुक अभ्यर्थी इस आदेश में उल्लेख किए गए ईमेल पते पर वहां के नोडल अधिकारी को सूचित करे, जहां वे वर्तमान में रह रहे हैं। शीर्ष अदालत 140 छात्रों की ओर से मणिपुर के बाहर परीक्षा केंद्र देने की मांग से संबंधित याचिका पर सुनवाई कर रही है। कार्यवाही के दौरान, न्यायालय को यह बताया गया कि उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को उनमें से प्रत्एक अभ्यर्थी को।,500 रुपए देने के लिए कहा था, जिन्होंने मणिपुर के बाहर परीक्षा केंद्र का विकल्प चुना है।

प्रधान न्यायाधीश ने याचिका का निस्तारण करते हुए कहा, परिवहन की व्यवस्था करना व्यावहारिक नहीं था, ऐसे में भत्ता।,प्रधान न्यायाधीश ने याचिका का निस्तारण करते हुए कहा, परिवहन की व्यवस्था करना व्यावहारिक नहीं था, ऐसे में भत्ता।,500 रुपए से बढ़ा दिया गया है। हमारा विचार है कि उच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित राशि को बढ़ाकर 3,000 रुपए कर दिया जाए।

मणिपुर में, मई 2023 में हिंसा भड़कने के बाद से राज्य में 160 से अधिक लोगों की मौत हुई है और सैकड़ों अन्य घायल हुए हैं। यह हिंसा राज्य में तीन मई को भड़की थी, जब अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने की बहुसंख्यक मेइती समुदाय की मांग के विरोध में आदिवासी एकजुटता मार्च निकाला गया था।

ईडी ने एम्स में लावा के एमडी बनकर जांच कराने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने लावा इंटरनेशनल मोबाइल कंपनी के प्रबंध निदेशक (एमडी) बनकर एम्स में इकोकार्डियोग्राम जांच कराने के आरोप में शुक्रवार को एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।उन्होंने बताया कि नवल किशोर राम को तब पकड़ा गया जब वह मोबाइल फोन कंपनी लावा इंटरनेशनल लिमिटेड के एमडी हरिओम राय के नाम पर एम्स की ईसीएचओ प्रयोगशाला में अपनी इकोकार्डियोग्राम जांच करा रहा था। इकोकार्डियोग्राम हृदय की एक अल्ट्रासाउंड छवि है। इससे डॉक्टरों को हृदय संबंधी कई समस्याओं का निदान करने में मदद मिल सकती है।प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने राम के साथ-साथ राय, उनके बेटे प्रणय राय और कुछ अन्य लोगों के खिलाफ बृहस्पतिवार को पुलिस में मामला दर्ज किया था।राय को ईडी ने पिछले साल अक्टूबर में वीवो-इंडिया के खिलाफ मामले में धन शोधन के आरोप में गिरफ्तार किया था। उन्हें फरवरी में चिकित्सा आधार पर दिल्ली उच्च न्यायालय से तीन महीने की जमानत मिली थी।राय ने हाल में इस आधार पर अपनी चिकित्सा जमानत की अवधि बढ़ाने के लिए उच्च न्यायालय के समक्ष एक आवेदन दायर किया था कि वह हृदय संबंधी समस्याओं से पीड़ित हैं।इसके बाद अदालत ने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में उनकी हृदय संबंधी स्वास्थ्य जांच का आदेश दिया और निर्देश दिया कि रिपोर्ट बृहस्पतिवार को उसके समक्ष रखी जाए। एक सूत्र ने पीटीआई-भाषा को बताया कि ईडी अधिकारियों की एक टीम राय की मेडिकल जांच की निगरानी के लिए बृहस्पतिवार को एम्स पहुंची थी। वह हालांकि अपराह्न एक बजे तक उपस्थित नहीं हुए, जबकि इस अवधि के दौरान उन्हें तीन ईमेल भेजे गए थे। उनके बेटे ने एम्स में इंतजार कर रहे ईडी अधिकारियों को बताया कि राय अस्वस्थ हैं और जल्द से जल्द अस्पताल पहुंचेंगे।

जम्मू-कश्मीर: एसीबी ने भूमि घोटाले में दो राजस्व अधिकारियों सहित चार लोगों पर मुकदमा दर्ज किया

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के राजौरी जिले में भ्रष्टाचार रोधी ब्यूरो (एसीबी) ने भूमि के अवैध हस्तांतरण के लिए भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत दो राजस्व अधिकारियों सहित चार लोगों के खिलाफ शुक्रवार को मुकदमा दर्ज किया।एसीबी अधिकारियों ने बताया कि राजौरी के पूर्व तहसीलदार बलवंत सिंह, रेहतल के पूर्व पटवारी मोहम्मद रफीक के साथ-साथ लाभार्थी कंवल सिंह और मसूद अनवर के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। एक लिखित शिकायत के बाद एसीबी ने मामले में जांच शुरू की। शिकायत में आरोप लगाया कि बलवंत सिंह ने कंवल सिंह के साथ मिलकर 2010 में लाभार्थियों को अवैध रूप से एक संपत्ति का एकमात्र किराएदार घोषित करने की साजिश रची। यह जमीन दिवंगत जमींदार बृज लाल के नाम पर थी, जिसे लाभार्थियों को हस्तांतरित कर दिया गया जबकि जमीन के मालिक के कानूनी उत्तराधिकारियों का नाम दस्तावेज में शामिल नहीं किया गया। सत्यापन प्रक्रिया में यह खुलासा हुआ कि सिंह और रफीक ने आधिकारिक रिकॉर्ड में अनधिकृत प्रविष्टियां कर लाभार्थियों को अवैध रूप से भूमि हस्तांतरित की।एसीबी ने कहा कि आपराधिक साजिश और आधिकारिक पदों के दुरुपयोग से प्रेरित इन कार्यों ने व्यक्तिगत वित्तीय लाभ के लिए लाभार्थियों को अनुचित लाभ प्रदान किया। आरोपियों के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है।

भाजपा कार्यकर्ता की मौत की जांच एसआईटी करेगी

भुवनेश्वर। ओडिशा पुलिस ने राज्य में सत्तारूढ़ बीजू जनता दल (बीजद) के समर्थकों के साथ गंजाम जिले में हुई झड़प में एक भाजपा कार्यकर्ता की मौत की जांच के लिए शुक्रवार को एक विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया। अधिकारियों ने कहा कि अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (एडीजी) आर के शर्मा के नेतृत्व वाली एसआईटी 30 दिन के भीतर आरोपपत्र दाखिल करेगी। पुलिस के अनुसार, भाजपा के कार्यकर्ता की मौत के सिलसिले में नौ लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

याचिका पर केंद्र से जवाब मांगा

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने नए आपराधिक कानून के तहत वैवाहिक बलात्कार को अपवाद माने जाने को चुनौती देने वाली एक याचिका पर शुक्रवार को केंद्र को नोटिस जारी किया। प्रधान न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा की पीठ ने ऑल इंडिया डेमोक्रेटिक वुमन एसोसिएशन (एआईडीडब्ल्यूए) की याचिका पर नोटिस जारी किया और कहा कि इसे वैवाहिक बलात्कार को अपराध बनाने की मांग करने वाली अन्य याचिकाओं के साथ जुलाई में सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जाएगा। पीठ ने कहा, "यह एक संवैधानिक मुद्दा है। नए कानून के बाद भी यह ज्वलंत रहेगा। शीर्ष अदालत ने 16 जनवरी, 2023 को भारतीय दंड संहिता के उस प्रावधान के खिलाफ कुछ याचिकाओं पर केंद्र से जवाब मांगा था, जो पत्नी के वयस्क होने पर जबरन यौन संबंध के लिए अभियोजन से पति को सुरक्षा प्रदान करता है। भारतीय दंड संहिता की धारा 375 में दिए गए अपवाद के तहत, यदि पत्नी नाबालिग नहीं है तो पति द्वारा उसके साथ संभोग या यौन क्रिया किया जाना बलात्कार नहीं माना जाएगा।

भाजपा ने लद्दाख के 70 वर्षों के सपने को पूरा किया

भाषा। कारगिल

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के लद्दाख चुनाव प्रभारी विक्रम रंधावा ने कहा है कि भाजपा सरकार ने केंद्र शासित प्रदेश बनने के इसके 70 वर्ष के सपने को पूरा किया और लोकसभा चुनाव में क्षेत्र के लोग पार्टी को लगातार तीसरी बार जीत दिलाएंगे। उन्होंने कहा कि केंद्र शासित क्षेत्र में सड़कें वहां तक पहुंच गई हैं, जहां तक किसी ने सोचा भी नहीं था और लगभग हर घर में पानी पहुंच रहा है। उन्होंने विश्वास जताया कि क्षेत्र के लोगों के जीवन में आया यह बड़ा बदलाव वोट में तब्दील होगा। रंधावा ने पीटीआई-भाषा से कहा, लद्दाख की जनता देश के साथ है।

लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश के रूप में देखना लोगों का सपना था, जिसे (प्रधानमंत्री) नरेन्द्र मोदी ने 2019 में पूरा किया। निश्चित तौर पर हम इस मुद्दे के साथ जनता के बीच जा रहे हैं। आम चुनाव के पांचवें चरण में 20 मई को लद्दाख में मतदान होना है। केंद्र द्वारा अनुच्छेद 370 को निरस्त कर पूर्ववर्ती राज्य जम्मू कश्मीर को दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित कर दिया गया था। रंधावा ने कहा, अनुच्छेद 370 निरस्त किए जाने के बाद से पांच वर्षों में विकास के लिहाज से लद्दाख में भारी बदलाव हुआ है। यहां के लोग खुद कहते हैं कि सड़कें वहां तक पहुंच गईं, जहां तक सोचा भी नहीं था और जल जीवन मिशन के तहत हर घर में पानी पहुंच रहा है।

पेज 1 का शेष

मालीवाल ने...

मिलेंगे और अचानक सीएम के पीएस बिभव कुमार कमरे में घुस आये।एफआईआर में उन्होंने दावा किया कि उन्होंने बिना किसी उकसावे के चिल्लाना शुरू कर दिया और यहां तक ????कि मौखिक दुर्व्यवहार का भी सहारा लिया। मैं इस अचानक आक्रोश से स्तब्ध रह गई और प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उनसे कहा कि वह मुझसे इस तरह से बात करना बंद करें और सीएम को फोन करें। उन्होंने कहा, तुम्हारी हमारी बात न मानने की हिम्मत कैसे हुई? तुम हमारी बात कैसे नहीं मान सकती? तुम्हारी हैसियत इतनी कम है कि तुम हमें मना नहीं कर सकती। तुम एक नीच महिला हो, हम तुम्हें सबक सिखाएंगे।

मालीवाल ने कहा कि ये शब्द कहते-कहते वो मेरे ठीक सामने आकर खड़े हो गये। मेरी ओर से बिना किसी उकसावे के उन्होंने मुझे मारना शुरू कर दिया। मालीवाल ने आरोप लगाते हुए कहा, उसने मुझे कम से कम 7-8 बार थप्पड़ मारे जबकि मैं मदद के लिए चिल्लाती रही। मुझे बिल्कुल सदमा लगा और मैं सहायता के लिए चिल्लाती रही। खुद को बचाने की कोशिश में मैंने उन्हें अपने पैरों से दूर धकेल दिया। उसी समय उन्होंने मुझ पर हमला किया, जानबूझकर मेरी शर्ट ऊपर खींची, जिससे बटन खुल गए। उन्होंने एफआईआर में दावा किया, मैं गिर गई और मेरा सिर सेंटर टेबल पर लगा। मैं मदद के लिए चिल्लाती रही क्योंकि वह नहीं रुके और अपने पैरों से मेरी छाती, पेट और पेल्विक क्षेत्र पर लात मारने लगे। उन्होंने कहा, मुझे बहुत दर्द हो रहा था और मैंने उनसे रुकने की विनती की। मेरी मिन्नतों के बावजूद उसने मुझ पर हमला करना जारी रखा। मेरी शर्ट खींच ली गई और हमला जारी रहा। आखिरकार, मुझे सीएम आवास के बाहर ले जाया गया, जहां तेज दर्द के कारण मैं कुछ देर के लिए फर्श पर बैठी रही। पीसीआर पुलिस पहुंची, लेकिन मैं सदमे में थी और सिविल लाइंस में अपने पिछले आवास की ओर चल पड़ी। मैं रो रही थी और अपने पहले वाले आवास तक पहुंचने में कामयाब रही। मैं कुछ देर तक वहीं जमीन पर बैठी रही, जब तक कि सीएम आवास से मेरे साथ आए कुछ कर्मियों ने मेरे लिए ऑटो नहीं बुलाया। मैं उसमें बैठ गई और अपने घर की ओर चल पड़ी, क्योंकि मैं भयानक दर्द में थी, सदमे में थी और टूट गई थी, मालीवाल ने आगे कहा, किसी तरह, मैंने मामले की रिपोर्ट करने के लिए पीएस सिविल लाइंस तक पहुंचने की ताकत जुटाई। मैं वहां पहुंची और रोते हुए थानेदार को घटना की जानकारी दी। मुझे बहुत दर्द हो रहा था और गंभीर ऐंठन हो रही थी। मेरे मोबाइल पर मीडिया से भी कई कॉल आने लगीं। आघात, दर्द और घटना का राजनीतिकरण करने की मेरी अनिच्छा के कारण, मैं लिखित शिकायत दर्ज किए बिना पुलिस स्टेशन से चली गयी। मेरा सिर दर्द से फट रहा था, और मेरे हाथ और पैर बहुत दर्द कर रहे थे। एफआईआर में लिखा है, घटना के बाद से पिछले दिन मेरे लिए बेहद दुखद रहे हैं। यह मेरे जीवन के सबसे कठिन समय में से एक है। दर्द, आघात और उत्पीड़न मन को सुन्न कर देने वाला है। हमले के बाद से मेरे सिर और गर्दन में लगातार दर्द हो रहा है। मेरी बांहों में बहुत दर्द है और पेट में भी दर्द हो रहा है। मुझे चलने में भी दिक्कत हो रही है। मेरी स्थिति इस तथ्य से और भी बदतर हो गई है कि मैंने अपना सारा जीवन महिलाओं के मुद्दों के लिए काम किया है और लाखों महिलाओं को न्याय दिलाने में मदद की है।

ईडी ने ...

चुकी है। पिछले सप्ताह इसी तरह का आरोप पत्र ईडी ने भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) नेता एवं तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव की बेटी के.कविता एवं अन्य चार अन्य के खिलाफ दाखिल किया था। ईडी ने इससे पहले दिल्ली के मुख्यमंत्री को आबकारी नीति घोटाले का मुख्य साजिशकर्ता करार दिया था। एजेंसी ने आरोप लगाया कि उन्होंने दिल्ली सरकार के मंत्रियों, आप नेताओं और अन्य लोगों के साथ साठगांठ कर इसे अंजाम दिया। अतिरिक्त सॉलिसीटर जनरल एस.वी.राजू ने बृहस्पतिवार को उच्चतम न्यायालय में एक मामले की सुनवाई के दौरान कहा था, हमारे पास प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि केजरीवाल एक सात सितारा होटल में रुके थे, जिसके बिल का आंशिक भुगतान मामले के एक आरोपी ने किया था। राजू ने दावा किया कि केजरीवाल ने अब रद्द की जा चुकी दिल्ली आबकारी नीति को बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने आरोप लगाया कि आप के राष्ट्रीय संयोजक के रूप में केजरीवाल कथित घोटाले के लिए परोक्ष रूप से जिम्मेदार हैं।

कांग्रेस आई तो ...

कहा कि यूपी में जो %सफाई अभियान% योगी जी ने चलाया है, उसके कारण यहां निवेश का माहौल बना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस ने रातों-रात कर्नाटक में ठप्पा मारकर मुसलमानों को ओबीसी का आरक्षण दे दिया है। पीएम ने कहा कि मोदी कभी हिन्दू-मुसलमान नहीं करता, बल्कि इंडी गठबंधन के पापों को इतिहास बताता है। प्रधानमंत्री ने यहां अवधी में अपने भाषण की शुरुआत की और कहा कि 'हम आपके कर्जा मा डूब गयन' और इस कर्ज को और ज्यादा मेहनत करके चुकाउंगा। उन्होंने कहा कि पूरी दुनिया जानती है कि मोदी हैट्रिक लगाने जा रहा है। पीएम ने इंडी गठबंधन को ऊटपटांग खिचड़ी बताते हुए कहा कि ये लोग ताश के पत्तों की तरह बिखरना शुरू हो गये हैं। मोदी ने कहा कि समाजवादी शहजादे की नई बुआ बंगाल में बनी हैं, जो अब कह रही हैं वो इंडी गठबंधन को बाहर से समर्थन देंगी। प्रधानमंत्री ने कहा कि नई सरकार में मुझे गरीबों, युवाओं, महिलाओं और किसानों के लिए बहुत सारे बड़े फैसले लेने हैं। इसलिए मैं बाराबंकी और मोहनलालगंज के लोगों से आशीर्वाद मांगने आया हूं। आज आपके सामने एक तरफ देशहित के लिए समर्पित बीजेपी एनडीए का गठबंधन है। दूसरी तरफ देश में अस्थिरता पैदा करने के लिए इंडी गठबंधन मैदान में है। इनके सपनों की इंतहा देखिए, कांग्रेस के नेता ने कह दिया कि रायबरेली के लोग प्रधानमंत्री चुनेंगे। ये सुनते ही समाजवादी शहजादे का दिल टूट गया, बस आंसू नहीं निकले, मगर दिल के सारे अरमां बह गये। प्रधानमंत्री ने कहा कि इस ऊटपटांग खिचड़ी को आप लोग वोट देकर अपना वोट बर्बाद न करें। भाजपा का सांसद होगा तो दिल्ली और लखनऊ से योजनाएं लेकर आएगा। अगर इंडी गठबंधन का सांसद होगा तो उसका मापदंड होगा कि उसने मोदी को कितनी गाली दी। 5 साल मोदी को गाली नहीं, क्षेत्र का विकास करने वाला सांसद चाहिए। इसके लिए आपके पास एक ही विकल्प है ओनली कमल।

रायबरेली में...

सदस्य मौजूद थे। उन्होंने 20 साल तक सांसद के रूप में सेवा करने का मौका देने के लिए लोगों को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, मेरा सब कुछ आपका दिया हुआ है। इसलिए, भाइयों और बहनों, मैं आपको अपना बेटा दे रही हूं। आप इसे अपना समझें।उन्होंने कहा, मैंने राहुल और प्रियंका को वही सबक सिखाया जो इंदिरा गांधी और रायबरेली के लोगों ने मुझे सिखाया था। सभी का सम्मान करना, कमजोरों की रक्षा करना, लोगों के अधिकारों के लिए अन्याय के खिलाफ लड़ना। डरो मत, क्योंकि आपकी जड़ें संघर्ष और परंपराएँ बहुत गहरी हैं। सोनिया गांधी ने कहा, न केवल जीवन की कोमल यादें, बल्कि मेरे परिवार की जड़ें भी पिछले 100 वर्षों से इस मिट्टी से जुड़ी हुई हैं...मां गंगा जैसा पवित्र ये रिश्ता अवध और रायबरेली के किसानों के साथ है। इसकी शुरुआत एक आंदोलन से हुई और यह आज तक जारी है।अपनी सास और पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी, जो कि रायबरेली से सांसद थीं, के बारे में बात करते हुए सोनिया गांधी ने कहा, इंदिरा जी के दिल में रायबरेली के लिए एक विशेष स्थान था। काम करते हुए मैंने उन्हें करीब से देखा। आपसे बहुत स्नेह था।सोनिया गांधी पहली बार 2004 में रायबरेली से सांसद चुनी गईं और उन्होंने इस साल की शुरुआत तक इस सीट का प्रतिनिधित्व किया, जब उन्होंने राज्यसभा सदस्य के रूप में निर्वाचित होने पर इसे खाली कर दिया। रैली में मंच पर समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव समेत कांग्रेस और सपा के अन्य वरिष्ठ नेता भी मौजूद थे। अपनी मां के सामने बोलते हुए, राहुल गांधी ने कहा कि देश भर के युवाओं ने अपना मन बना लिया है कि वे नरेंद्र मोदी को नहीं चाहते और कहा कि 4 जून के बाद इंडिया गठबंधन की सरकार बनेगी। राहुल गांधी ने कहा, 4 जून के बाद नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे और इंडिया गठबंधन की सरकार बनेगी। वह सरकार जनता की होगी।राहुल गांधी ने भारतीय संविधान की प्रति उठाते हुए आरोप लगाया कि बीजेपी और आरएसएस के लोग इसे फाड़ना चाहते हैं। राहुल गांधी ने कहा, मैं बीजेपी और आरएसएस के लोगों से कहना चाहता हूं कि वे सपने न देखें क्योंकि कोई भी इस किताब का अंत नहीं कर सकता।उन्होंने कांग्रेस द्वारा अपने घोषणापत्र में किए गए वादों को दोहराया और महिलाओं और युवाओं के लिए वादा की गई योजनाओं को सूचीबद्ध किया।राहुल गांधी ने कहा, हमने गरीबों को मुफ्त राशन देने के लिए कानून बनाया। अभी आपको 5 किलो राशन मिल रहा है लेकिन सत्ता में आने पर हम 10 किलो मुफ्त राशन देंगे।

रामजन्म भूमि...

अनोखी स्मारिका दुकानें राम मंदिर मॉडल, भगवा झंडे और अन्य हिंदू यादगार वस्तुओं से सजी आधुनिक प्रतिष्ठानों में बदल गई हैं। भगवा राजनीति की प्रमुखता के बावजूद फैजाबाद लोकसभा सीट पर जाति की गतिशीलता महत्वपूर्ण बनी हुई है, जहां पांचवें चरण में 20 मई को मतदान होगा। प्रधानमंत्री मोदी ने 5 मई को एक रोड शो के साथ इस निर्वाचन क्षेत्र पर भाजपा के फोकस को रेखांकित किया, जिसमें लल्लू सिंह की लगातार तीसरी बार समर्थन किया गया।निर्वाचन क्षेत्र की आबादी में 26 फीसदी दलित हैं, जो मुख्य रूप से रावत, हरिजन और कोरी समुदायों से हैं। अनुभवी राजनेता और पार्टी के दलित चेहरे सपा उम्मीदवार अवधेश प्रसाद यहां से चुनाव लड़ रहे हैं। मिल्कीपुर विधानसभा क्षेत्र से सपा विधायक प्रसाद का 1977 में अपनी पहली विधानसभा जीत के बाद से एक लंबा राजनीतिक करियर रहा है। 2017 का विधानसभा चुनाव हारने के बाद प्रसाद ने 2022 में मिल्कीपुर सीट फिर से हासिल कर ली। इस बीच, पूर्व भाजपा नेता सच्चिदानंद पांडे बसपा के हैं उम्मीदवार, ब्राह्मण हितों का प्रतिनिधित्व करता है। स्थानीय पत्रकार वी एन दास ने कहा, यह मुकाबला दिलचस्प होने की संभावना है क्योंकि जाति एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उच्च जातियां मुख्य रूप से भाजपा का समर्थन करती हैं, जबकि दलित और मुस्लिम इंडिया ब्लॉक के उम्मीदवार का समर्थन कर सकते हैं।दिग्गज भाजपा नेता लल्लू सिंह अपनी सीट सुरक्षित करने के लिए एकीकृत हिंदू वोट पर भरोसा कर रहे हैं। कमला कांत के नेतृत्व में सिंह का अभियान राम पथ पर पार्टी के कार्यालय से चल रहा है। अपने मजबूत स्थानीय संबंधों और सामुदायिक कार्यक्रमों में उपस्थिति के बावजूद सिंह अपनी स्थिति बनाए रखने के लिए सक्रिय रूप से प्रचार कर रहे हैं।फैजाबाद निर्वाचन क्षेत्र की जाति संरचना में 26 फीसदी दलित (रावत, हरिजन, कोरी), 14 फीसदी मुस्लिम, 12फीसदी कुर्मी, 12फीसदी यादव, 12फीसदी ब्राह्मण, 6 फीसदी राजपूत, 4फीसदी वैश्य, 5 फीसदी केवट/मल्लाह/निषाद तथा 12 फीसदी अन्य ओबीसी शामिल हैं। यह विविध जनसांख्यिकीय आगामी चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। जैसे-जैसे अयोध्या का विकास जारी है धार्मिक महत्व और चुनावी राजनीति का प्रतिच्छेदन फैजाबाद लोकसभा सीट को 2024 के चुनावों में केंद्र बिंदु बनाता है।

बाकी चरणों में...

में एक ही स्थान पर होते हैं तो पृथ्वी के एक बड़े हिस्से में भीषण गर्मी होती है। इन चार ग्रहों की युति को समसप्तक योग कहा जाता है। प्रत्येक वर्ष नौतपा के दौरान सूर्य, मंगल, बुध और शनि की युति देखी जाती है। ऐसा माना जाता है कि नौतपा के दौरान होने वाली बारिश मानसून में कम बारिश का संकेत देती है। बिना बारिश वाले नौतपा का मतलब है मानसून के दौरान पर्याप्त बारिश। वाजपेयी ने कहा, 25 मई को दोपहर 3.17 बजे सूर्य के रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश के साथ ही नौतपा शुरू हो जाएगा। कृष्ण पक्ष की द्वितीया को सूर्य कृतिका से रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करेगा और 8 जून तक इसी नक्षत्र में रहेगा। इस अवधि के पहले 9 दिनों को नौतपा कहा जाता है। इस समय सूर्य की किरणें सीधी पृथ्वी पर पड़ेंगी लेकिन इस बार शुक्र और बृहस्पति तारे के अस्त होने के कारण उनका प्रभाव कम होगा।उन्होंने बताया कि देश के कुछ हिस्सों में बूंदाबांदी और कुछ जगहों पर तेज हवा और तूफान के साथ बारिश होने की संभावना है। वराहमिहिर के बृहत्संहिता पाठ में उल्लेख है कि ग्रहों के अस्त होने के कारण मौसम बदलता है। विज्ञान के अनुसार नौतपा के दौरान सूर्य की किरणें सीधी पृथ्वी पर आती हैं। जिसके कारण पृथ्वी का तापमान बहुत अधिक बढ़ जाता है। अधिक गर्मी के कारण मैदानी इलाकों में निम्न दबाव का क्षेत्र बनता है जो समुद्री लहरों को आकर्षित करता है, जिससे अच्छी बारिश होती है।धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, नौतपा के दौरान सूर्य देव की पूजा करने की परंपरा है।

अब आतंकवाद उन्हें ही निगल रहा है जो लंबे समय से इसका सहारा लेते आए हैं : जयशंकर

भाषा। नई दिल्ली

पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पास चीन की सैन्य मौजूदगी और सीमापार आतंकवादी गतिविधियों को पाकिस्तान के समर्थन के बीच विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को कहा कि समझौतों का अनादर और कानून के शासन की अवहेलना किए जाने के कारण एशिया में भूमि और समुद्र में नए तनाव पैदा हुए हैं। जयशंकर ने भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के एक कार्यक्रम में मुद्रा की ताकत पर भी बात की। उन्होंने यह भी कहा कि कि वैश्विक कूटनीति के तौर पर प्रतिबंधों की धमकी का किस प्रकार इस्तेमाल किया जा रहा है। जयशंकर का यह बयान ऐसे समय आया है जब कुछ ही दिन पहले भारत और ईरान के बीच चाबहार बंदरगाह पर समझौता होने के बाद अमेरिका ने प्रतिबंध लगाने की चेतावनी दी थी। जयशंकर ने यूक्रेन युद्ध के परिणामों, पश्चिम एशिया में हिंसा में वृद्धि और जलवायु घटनाओं, ड्रोन हमलों की घटनाओं, भू-राजनीतिक तनाव एवं प्रतिबंधों के मद्देनजर साजो-सामान संबंधी व्यवधान पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने सीआईआई की वार्षिक आम बैठक में कहा, दुनिया तीन एफ यानी फ्यूल, फूड, फर्टीलाइजर (ईंधन, भोजन और उर्वरक) के संकट से जूझ रही है। समझौतों का अनादर और कानून के शासन की अवहेलना किए जाने के कारण एशिया में भूमि और समुद्र में नए तनाव पैदा हुए हैं। जयशंकर ने कहा, आतंकवाद और अतिवाद ने उन्हें निगलना शुरू कर दिया है जो लंबे समय से इसका सहारा लेते आए हैं। कई मायनों में, हम वास्तव में एक तूफान से गुजर रहे हैं। उन्होंने कहा, भारत के लिए महत्वपूर्ण है कि वह खुद पर इसका कम से कम प्रभाव पड़ने दे और जहां तक संभव हो सके, दुनिया को स्थिर करने में योगदान दे। भारत प्रथम और वसुधैव कुटुंबकम का विवेकपूर्ण संयोजन हमारी छवि को विश्व बंधु के रूप में परिभाषित करता है। परोक्ष तौर पर चीन के संदर्भ में जयशंकर ने आर्थिक गतिविधियों को हथियार बनाए जाने और राजनीतिक दबाव डालने के लिए कच्चे माल तक पहुंच या यहां तक कि पर्यटन की स्थिरता का उपयोग राजनीतिक दबाव डालने के लिए किए जाने पर भी चिंता व्यक्त की।उन्होंने कहा,हमारी चिंताओं का एक अलग आयाम अत्यधिक बाजार हिस्सेदारी, वित्तीय प्रभुत्व और प्रौद्योगिकी ट्रैकिंग के संयोजन से उत्पन्न हुआ है। उनके बीच, उन्होंने वास्तव में किसी भी प्रकार की आर्थिक गतिविधि को हथियार बनने दिया है। हमने देखा है कि कैसे निर्यात और आयात, कच्चे माल तक पहुंच या यहां तक कि पर्यटन की स्थिरता का उपयोग राजनीतिक दबाव डालने के लिए किया गया है।

संविधान पीठ का फैसला कम संख्या वाली पीठों पर बाध्यकारी

भूमि से संबंधित मामले में उच्चतम न्यायालय ने की अहम टिप्पणी

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने भूमि से संबंधित एक मामले में अपने अप्रैल 2022 के फैसले को वापस लेते हुए कहा है कि संविधान पीठ का फैसला कम संख्या वाली पीठों पर बाध्यकारी होगा, जो विशेष रूप से हरियाणा के एक गांव के निवासी के लिए थी। 7 अप्रैल, 2022 के अपने आदेश में शीर्ष अदालत ने कहा था कि कोई पंचायत उस जमीन के स्वामित्व का दावा नहीं कर सकती जो हरियाणा में भूमि कानून के तहत वास्तविक मालिकों से उनकी अनुमेय सीमा से ज्यादा ली गई है। शीर्ष अदालत ने कहा था कि पंचायतें केवल उस भूमि का प्रबंधन और नियंत्रण कर सकती हैं जो मालिकों से ली गईं हैं और उस पर स्वामित्व का दावा नहीं कर सकतीं। न्यायालय ने कहा था, यहां इस बात पर गौर करना जरूरी है कि मालिकों की अनुमेय सीमा से आनुपातिक कटौती लागू करके मालिक से ली गई भूमि के मामले में, प्रबंधन और नियंत्रण केवल पंचायत में निहित है लेकिन प्रबंधन और नियंत्रण का ऐसा अधिकार अपरिवर्तनीय है और भूमि पुनर्वितरण के लिए मालिकों को वापस नहीं की जाएगी क्योंकि जिन सामान्य उद्देश्यों के लिए भूमि ली गई है उनमें न केवल वर्तमान आवश्यकताएं बल्कि भविष्य की आवश्यकताएं भी शामिल हैं। शीर्ष अदालत ने पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय की पूर्ण पीठ के फैसले के खिलाफ अपीलों के एक समूह पर फैसला सुनाया था, जिसने हरियाणा ग्राम सामान्य भूमि (विनियमन) अधिनियम 1961 की धारा 2 (जी) की उप-धारा 6 की वैधता की जांच की थी। उच्चतम न्यायालय ने अप्रैल 2022 के फैसले की समीक्षा की अपील करने वाली याचिका पर अपना यह फैसला सुनाया। बृहस्पतिवार को दिए गए एक फैसले में न्यायमूर्ति बी आर गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने कहा कि जब उच्च न्यायालय का फैसला 1966 में शीर्ष अदालत की संविधान पीठ द्वारा निर्धारित कानून पर आधारित था, तो समीक्षाधीन निर्णय में अदालत से कम से कम यह समझाने की उम्मीद की गई जाती है कि 1966 के फैसले पर भरोसा करने में उच्च न्यायालय गलत क्यों था। पीठ ने कहा यह बताने के लिए किसी कानून की आवश्यकता नहीं है कि संविधान पीठ का निर्णय कम संख्या वाली पीठों पर बाध्यकारी होगा।

मुंबई : सफाईकर्मी ने 150 ग्राम सोना सौंपा, सम्मानित किया गया

मुंबई। मुंबई मे एक सड़क की सफाई करते वक्त एक सफाईकर्मी को 150 ग्राम से ज्यादा सोना मिला, जिसे उसने पुलिस को सौप दिया। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी।अधिकारी के मुताबिक, सफाईकर्मी के इस कृत्य के लिए बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) ने शुक्रवार को उसे सम्मानित किया।बीएमसी के ग्रुप डी सफाई कर्मचारी सुनील कुंभार को 12 मई को कैनेडी पुल के निकट महर्षि कर्वे मार्ग पर सफाई करते समय 150 ग्राम सोना मिला था। कुंभार ने सोना सबसे पहले अपने सुपरवाइजर मुकस्म बलराम जाधव को दिया और फिर दोनो डीबी मार्ग थाने पहुंचे और पुलिस को सोना सौप दिया।

एसबीआई ऑटोमोटिव ऑपर्च्युनिटीज फंड लॉन्च

मुंबई। भारत के सबसे बड़े फंड हाउस, एसबीआई म्यूचुअल फंड ने ऑटोमोटिव और इससे जुड़ी व्यावसायिक गतिविधियों की थीम पर आधारित एक ओपन-एंडेड इक्विटी स्कीम, एसबीआई ऑटोमोटिव ऑपर्च्युनिटीज फंड लॉन्च करने की घोषणा की है। नया फंड ऑफर शुक्रवार, 17 मई, 2024 को खुलेगा और शुक्रवार, 31 मई, 2024 को बंद होगा।एसबीआई फंड्स मैनेजमेंट लिमिटेड के डिप्टी एमडी और संयुक्त सीईओ डी पी सिंह ने कहा, मुझे उन निवेशकों को एसबीआई ऑटोमोटिव अवसर निधि प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है जो अपने पोर्टफोलियो के सैटेलाइट हिस्से में एक विषयगत पेशकश जोड़ने के इच्छुक हैं। भारतीय ऑटोमोटिव उद्योग शीर्ष गियर में चल रहा है क्योंकि हमारा देश वाहनों के उत्पादन और ऑटो निर्यात के मामले में एक ताकत है जबकि हमारा बढ़ता घरेलू बाजार सुरक्षित और प्रीमियम वाहनों की मांग करता है। एसबीआई ऑटोमोटिव ऑपर्च्युनिटीज फंड के फंड मैनेजर तन्मय देसाई और श्री प्रदीप केसवन (विदेशी प्रतिभूतियों के लिए समर्पित फंड मैनेजर) होंगे।

मोटोरोला तकनीक का अभिनव प्रयोग कर रहा : नरसिम्हन

नई दिल्ली। मोटोरोला इंडिया के प्रबंध निदेशक टी एम नरसिम्हन ने कहा मोटोरोला एज 50 फ्यूजन को पेश करते हुए रोमांचित हैं, जो हमारे मूल्यवान ग्राहकों को अत्याधुनिक तकनीक और अभिनव समाधान प्रदान करने की हमारी प्रतिबद्धता में मील का पत्थर है। भारत के सबसे तेजी से बढ़ते एंड्रॉइड ब्रांड मोटोरोला ने अपनी प्रीमियम एज पोर्टफोलियो के नवीनतम संस्करण मोटोरोला एज 50 फ्यूजन को लॉन्च कर दिया है। मोटोरोला एज 50 फ्यूज़न ने अपने सेगमेंट की कई सर्वश्रेष्ठ सुविधाओं के साथ 25 हजार से कम कीमत वाले स्मार्टफोन सेगमेंट में हलचल मचा दी है। यह अपने प्राइमरी कैमरे में इस सेगमेंट का सबसे उन्नत सोनी.एलवायटीआई, 700सी सेंसर, स्मार्ट वॉटर टच तकनीक के साथ सेगमेंट का एकमात्र आईपी68 अंडरवाटर प्रोटेक्शन और कॉर्निंगो गोरिल्ला ग्लास 5 प्रोटेक्शन के साथ सेगमेंट का सबसे चमकीला 144हर्ट्ज़ 10.बिट पोलेड 3डी कर्व्ड डिस्प्ले पेश करता है।

मुजफ्फरनगर में ट्रक की चपेट में आकर दो युवकों की मौत

मुजफ्फरनगर (उप्र)। मुजफ्फरनगर जिले के नई मंडी थाना क्षेत्र मे एक ट्रक की चपेट मे आने से बाइक सवार दो युवको की मौत हो गई। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार नई मंडी थाना इलाके के भोपा रोड पर आज एक तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक सवार दो युवको को टक्कर मार दिया। थाना प्रभारी बबलू कुमार ने बताया कि दोनो घायलो को अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हे मृत घोषित कर दिया गया। उन्होने बताया कि दोनो की पहचान सिद्धबली पेपर मिल के कर्मचारी अंकित (22) और मोनू (26) के रूप मे हुई जो हादसे के समय मिल से अपने गांव लौट रहे थे। ट्रक चालक अपना ट्रक लेकर फरार हो गया। पुलिस ने शवो को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है।

चाबहार बंदरगाह परियोजना से अफगानिस्तान, मध्य एशिया को फायदा होगा : भारत

भाषा। नई दिल्ली

भारत ने शुक्रवार को कहा कि चाबहार बंदरगाह परियोजना पर नई दिल्ली और तेहरान के बीच दीर्घकालिक समझौते को लेकर संकीर्ण दृष्टिकोण नहीं रखा जाना चाहिए क्योंकि चारों ओर से जमीन से घिरे अफगानिस्तान, मध्य एशिया और पूरे क्षेत्र को इससे फायदा होगा। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जयसवाल की यह टिप्पणी भारत और ईरान द्वारा समझौते पर मुहर लगाने के बाद अमेरिका द्वारा प्रतिबंधों की चेतावनी दिए जाने के कुछ दिनों बाद आई है। भारत और ईरान ने सोमवार को 10 वर्षीय समझौते पर हस्ताक्षर किए जो चाबहार बंदरगाह पर भारतीय संचालन की सुविधा प्रदान करता है। चाबहार बंदरगाह के प्रति भारत की प्रतिबद्धता चारों ओर से जमीन से घिरे अफगानिस्तान और मध्य एशियाई देशों के लिए एक कनेक्टिविटी केंद्र के रूप में इसकी क्षमता का दोहन करना है। एक भारतीय कंपनी - इंडिया पोर्ट्स ग्लोबल लिमिटेड - 2018 से अंतरिम अनुबंध पर बंदरगाह का संचालन कर रही है।

पीओके में विरोध प्रदर्शन पाकिस्तान की संसाधनों की प्रणालीगत लूट की नीति का परिणाम: भारत

नई दिल्ली। भारत ने शुक्रवार को कहा कि पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) के कई हिस्सो मे देखा जा रहा विरोध प्रदर्शन इस्लामाबाद के जबरन और अवैध कब्जे वाले क्षेत्र से संसाधनो की प्रणालीगत लूट की पाकिस्तान की निरंतर चली आ रही नीति का स्वाभाविक परिणाम है। इसने यह भी कहा कि जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के संपूर्ण केंद्र शासित प्रदेश भारत के अभिन्न अंग थे, है, और हमेशा रहेंगे। पाकिस्तान गंभीर आर्थिक संकट से जूझ रहा है और भोजन, ईंधन तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतो को लेकर पीओके मे हिंसक विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने अपने साप्ताहिक संवाददाता सम्मेलन मे कहा, हमने पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर के कई इलाको मे विरोध प्रदर्शन की रिपोर्ट देखी है। वह पीओके मे विरोध प्रदर्शन पर एक सवाल का जवाब दे रहे थे। जायसवाल ने कहा, हमारा मानना है कि यह इन क्षेत्रो से संसाधनो की प्रणालीगत लूट की पाकिस्तान की निरंतर नीति का एक स्वाभाविक परिणाम है जो उसके जबरन और अवैध कब्जे मे है। उन्होने कहा, ऐसी शोषणकारी नीतियां स्थानीय लोगो को उनके अपने संसाधनो पर अधिकार और उनके लाभो से वंचित करती है।

हावड़ा में ममता बनर्जी और अभिषेक बनर्जी को जान से मारने की धमकी वाला पोस्टर लगा मिला

कोलकाता। पश्चिम बंगाल के हावड़ा जिले के उलुबेरिया में शुक्रवार को मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और उनके भतीजे अभिषेक बनर्जी को जान से मारने की धमकी वाला एक पोस्टर लगा मिला है। पुलिस ने यह जानकारी दी। सफेद कपड़े पर हरे रंग की स्याही से हाथ से लिखा गया यह पोस्टर उलुबेरिया के फुलेश्वर क्षेत्र में एक निर्माण स्थल से बरामद किया गया। इस क्षेत्र में 20 मई को लोकसभा चुनाव के लिए मतदान होगा। पोस्टर में बंगाली में लिखा था मैं मुख्यमंत्री ममता बनर्जी और अभिषेक को कार से टक्कर मारकर मार डालूंगा। इसके बाद सभी लोग दीए जलाएंगे। मेरे पास एक गुप्त पत्र है।यह पोस्टर ईंटों के ढेर पर लगा मिला। पुलिस अधिकारी ने बताया, अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो सका है कि गुप्त पत्र का क्या अर्थ है। यह एक शरारत भी हो सकती है।

बारामूला लोस सीट पर 25 हजार विस्थापित कश्मीरी पंडित मतदाता डाल सकेंगे वोट

भाषा। जम्मू

जम्मू-कश्मीर की बारामूला लोकसभा सीट के लिए पांचवे चरण में 20 मई को मतदान होगा और इस सीट के लिए देश के विभिन्न इलाकों में रह रहे 25 हजार से अधिक विस्थापित कश्मीर पंडित मतदान करने की अर्हता रखते हैं। बारामूला निर्वाचन क्षेत्र में मतदान की तैयारियां अंतिम दौर में है जहां के 17.32 लाख मतदाता 23 उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला करेंगे। कुल मतदाताओं में 8.59 लाख महिलाएं हैं। माना जा रहा है कि मुख्य मुकाबला पीपुल्स कांफ्रेंस के सज्जाद लोन और नेशनल कांफ्रेंस के उमर अब्दुल्ला के बीच होगा। सहायक निर्वाचन अधिकारी (विस्थापित) रियाज अहमद ने पीटीआई-भाषा को बताया, बारामूला लोकसभा क्षेत्र में 20 मई को होने वाले मतदान के लिए कुल 25,821विस्थापित कश्मीरी मतदाता के रूप में पंजीकृत हैं। इनमें से 12,747 पुरुष मतदाता और 13,074 महिला मतदाता हैं। उन्होंने बताया कि विस्थापितों के लिए कुल 26 मतदान केंद्र बनाए गए हैं जिनमें से 21 जम्मू में, चार दिल्ली में और एक मतदान केंद्र उधमपुर में स्थापित किया गया है। अहमद ने बताया कि निर्वाचन आयोग ने कश्मीरी विस्थापित मतदाताओं को मतदान केंद्र पर लाने और वासस ले जाने की व्यवस्था की है। सुविधा सुबह छह बजे से शाम छह बजे तक उपलब्ध रहेगी।उन्होंने कहा, परिवहन की व्यवस्था वहां मौजूद रहेगी जहां पर विस्थापितों की अधिक संख्या है।

भरतपुर: यूपी रोडवेज की बस आगे चल रहे ट्रेलर से टकराई, पांच महिलाओं की मौत

भाषा। जयपुर

राजस्थान के भरतपुर जिले में शुक्रवार को एक सड़क हादसे में पांच महिलाओं की मौत हो गई जबकि 12 अन्य लोग घायल हो गए। पुलिस के अनुसार शुक्रवार दोपहर यह हादसा उस समय हुआ जब उत्तर प्रदेश रोडवेज की एक बस आगे चल रहे ट्रेलर से टकरा गई।पुलिस उपनिरीक्षक ब्रजेन्द्र सिंह ने बताया कि हलैना महुआ राजमार्ग पर अलीगढ़ से जयपुर की ओर आ रही उत्तर प्रदेश रोडवेज की बस आगे चल रहे एक ट्रेलर से टकरा गई जिससे बस में सवार चार महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई जबकि बस में सवार 13 अन्य लोग घायल हो गए। उन्होंने बताया कि एक अन्य घायल महिला ने भरतपुर के सरकारी अस्पताल में उपचार के दौरान दम तोड़ दिया।

फिलहाल 12 घायलों का इलाज किया जा रहा है। एक घायल यात्री ने संवाददाताओं को बताया कि बस तेज गति से चल रही थी। बस चालक ट्रेलर को ओवरटेक करने की कोशिश कर रहा था, लेकिन समय रहते ब्रेक नहीं लगा सका और ट्रेलर से बस टकरा गई। हादसे में बस का अगला हिस्सा पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। भरतपुर जिला कलेक्टर अमित यादव और पुलिस अधीक्षक मृदुल कछावा घटनास्थल के अलावा सरकारी अस्पताल पहुंचे घायलों का हाल जाना।

छत्तीसगढ़: सुरक्षाबलों ने तीन बारूदी सुरंग की बरामद

गरियाबंद। छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले में सुरक्षाबलों ने तीन बारूदी सुरंग बरामद की है। पुलिस अधिकारियों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि जिले के शोभा थाना क्षेत्र के अंतर्गत गरीबा गांव के जंगल में सुरक्षाबलों ने तीन बारूदी सुरंग बरामद की है। छत्तीसगढ़ और उड़ीसा की सीमा पर स्थित शोभा थाना क्षेत्र में नक्सली गतिविधियों की सूचना पर पुलिस दल को कोदोमाली, इचरादि, गरीबा, सहबीनकछार गांव की ओर रवाना किया गया था। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षाबल के जवान जब क्षेत्र के गरीबा गांव के जंगल में थे तब सुरक्षाबलों को देखकर नक्सली वहां से भाग गए। इसके बाद सुरक्षाबलों ने जंगल से तीन-तीन किलोग्राम वजनी एक टिफिन बम, दो कुकर बम तथा अन्य सामान बरामद किया। सुरक्षाबलों ने बमों को नष्ट कर दिया है तथा नक्सलियों की खोज की जा रही है।

तीर्थयात्रा के सुचारु संचालन के लिए गंगोत्री यमुनोत्री में बनेगा मास्टरप्लान : धामी

भाषा। देहरादून

चारधाम यात्रा में उमड़ रही श्रद्धालुओं की अप्रत्याशित भीड़ के मद्देनजर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शुक्रवार को कहा कि भविष्य में तीर्थयात्रा के सुचारु संचालन के लिए गंगोत्री और यमुनोत्री में मास्टरप्लान बनाया जाएगा। चार धामों में श्रद्धालुओं की भारी संख्या के मद्देनजर व्यवस्थाओं की समीक्षा करने के लिए मुख्यमंत्री ने राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बृहस्पतिवार को एक बैठक की और उन्हें महत्वपूर्ण निर्देश दिए। सुबह उन्होंने एक बार फिर अधिकारियों के साथ बैठक की और फिर यमुनोत्री यात्रा का जायजा लेने के लिए उत्तरकाशी के बड़कोट पहुंचे।जायजा लेने के बाद संवाददाताओं से बातचीत में मुख्यमंत्री ने कहा कि ज्यादा संख्या में श्रद्धालु आ रहे हैं और पिछले वर्ष के मुकाबले यह संख्या लगभग दोगुनी हो गई है जिसके कारण कहीं-कहीं श्रद्धालुओं को रोकना भी पड़ रहा है। उन्होंने कहा, हर वर्ष श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ रही है। धामों की क्षमता से दोगुने लोग आ रहे हैं। निकट भविष्य में हम गंगोत्री और यमुनोत्री क्षेत्र के लिए मास्टर प्लान बनाएंगे जिससे वाहन खड़ा करने सहित सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान हो। धामी ने कहा कि मास्टरप्लान के तहत श्रद्धालुओं को वाहन खड़े करने की सुविधा के साथ-साथ सड़कों के बेहतर नेटवर्क की सुविधाएं मिलेंगी। उन्होंने कहा कि चारधाम यात्रा बहुत महत्वपूर्ण है, यह गंगोत्री और यमुनोत्री क्षेत्र के स्थानीय लोगों सहित पूरे उत्तराखंड के लिए जीवनरेखा है। इस दौरान धामी ने बसों तथा अन्य माध्यमों से आ रहे श्रद्धालुओं से बातचीत की तथा यात्रा व्यवस्थाओं के बारे में उनकी प्रतिक्रिया जानी।

Indiabulls Enterprises Limited

(CIN: U71290HR2019PLC077579)

Extract of Consolidated Audited Financial Results for the quarter and year ended 31 March 2024

(Rs. in Crores)

Particulars	Quarter ended 31-Mar-24 (Refer note- 3)	Quarter ended 31-Dec-23 Unaudited	Quarter ended 31-Mar-23 (Refer note- 3)	Year ended 31-Mar-24 Audited	Year ended 31-Mar-23 Audited
Total Income from operations	14.67	15.72	17.95	58.76	87.97
Net (Loss)/Profit for the period (before Tax, minority interest and Share of Profit / (Loss) of associates, Exceptional and/or Extraordinary items)	(18.81)	(1.70)	(2.18)	(25.20)	14.75
Net (Loss)/Profit for the period (before Tax, minority interest and Share of Profit / (Loss) of associates (after Exceptional and/or Extraordinary items))	(18.81)	(1.70)	(11.24)	(25.20)	5.69
Net (Loss)/Profit for the period (after Tax, minority interest and Share of Profit / (Loss) of associates (after Exceptional and/or Extraordinary items))	(18.36)	(1.84)	(11.92)	(25.24)	4.13
Total Comprehensive Income for the period [Comprising Profit / (Loss) for the period (after tax) and Other Comprehensive Income (after tax)]	(18.92)	(1.84)	(11.65)	(25.33)	4.59
Equity share capital	39.67	39.67	39.67	39.67	39.67
Reserves (excluding revaluation reserve) as shown in the audited Balance Sheet				206.07	231.41
Earnings per share (EPS) of Rs.2 each from continuing operations					
- Basic (Amount in Rs.)	(0.95)	(0.11)	(0.55)	(1.37)	0.11
- Diluted (Amount in Rs.)	(0.95)	(0.11)	(0.55)	(1.37)	0.11
Earnings per share (EPS) of Rs.2 each from discontinued operations					
- Basic (Amount in Rs.)	0.02	0.02	(0.05)	0.10	0.09
- Diluted (Amount in Rs.)	0.02	0.02	(0.05)	0.10	0.09

Notes:

1) The above results have been reviewed by the Audit Committee and subsequently approved at the meeting of the Board of Directors held on 17 May 2024.

2) **Key Standalone Financial Information:** (Rs. in Crores)

Particulars	Quarter ended 31-Mar-24 (Refer note- 3)	Quarter ended 31-Dec-23 Unaudited	Quarter ended 31-Mar-23 (Refer note- 3)	Year ended 31-Mar-24 Audited	Year ended 31-Mar-23 Audited
Total Income	12.43	13.39	14.54	48.43	84.71
(Loss)/Profit before Tax	(17.88)	(4.39)	(382.15)	(33.00)	(368.56)
Net Loss/Profit after Tax	(17.95)	(4.03)	(381.24)	(33.39)	(383.46)

3) Figures for the quarters ended 31 March 2024 and 31 March 2023 represent the balancing figures between the audited figures for the full financial year and published reviewed year to date figures upto third quarter of the respective financial year.

4) The above is an extract of the detailed format of quarterly / annual financial results filed with the stock exchanges under Regulation 33 of the SEBI (Listing and Other Disclosure Requirements) Regulations, 2015. The full format of the Quarterly / annual Financial Results are available on the Company's website (https://www.indiabullsenterprises.com) and on the website of BSE (https://www.bseindia.com) and NSE (https://www.nseindia.com).

Registered Office: 5th Floor, Plot No. 108, IT Park, Udyog Vihar, Phase-1 Gurugram, Haryana 122016

For and on behalf of Board of Directors

Vijay Kumar Agarwal
Executive Director
DIN 08329352

Place : Gurugram
Date : 17 May 2024

Yaari Digital Integrated Services Limited

(Formerly "Yaarii Digital Integrated Services Limited")

(CIN: L51101HR2007PLC077999)

Extract of Consolidated Audited Financial Results for the quarter and year ended 31 March 2024

(Rs. in Crores)

Particulars	Quarter ended 31-Mar-24 (Refer note- 3)	Quarter ended 31-Dec-23 Unaudited	Quarter ended 31-Mar-23 (Refer note- 3)	Year ended 31-Mar-24 Audited	Year ended 31-Mar-23 Audited
Total Income from Operations	0.28	2.57	-	3.15	185.90
Net Profit / (Loss) for the period (before Tax, Minority Interest and Share of Profit / (Loss) of Associate, Exceptional and/or Extraordinary items)	(6.70)	(3.67)	(70.48)	(21.61)	84.69
Net Profit / (Loss) for the period (before Tax, Minority Interest and Share of Profit / (Loss) of Associate (after Exceptional and/or Extraordinary items))	(6.70)	(3.67)	(70.48)	(21.61)	84.69
Net Profit / (Loss) for the period after Tax, Minority Interest and Share of Profit / (Loss) of Associate (after Exceptional and/or Extraordinary items)	(6.70)	(3.67)	(70.83)	(21.61)	94.85
Total Comprehensive Income for the period [Comprising Profit / (Loss) for the period (after tax) and Other Comprehensive Income (after tax)]	(7.34)	(6.13)	(90.85)	(12.31)	58.58
Equity Share Capital	19.74	19.74	19.74	19.74	19.74
Reserves (excluding Revaluation Reserve) as shown in the audited Balance Sheet				(253.50)	(242.79)
Earnings per Share (EPS) before extraordinary items					
- Basic (Amount in Rs.)	(0.67)	(0.37)	(7.06)	(2.15)	9.44
- Diluted (Amount in Rs.)	(0.67)	(0.37)	(7.06)	(2.15)	9.44
Earnings per Share (EPS) after extraordinary items					
- Basic (Amount in Rs.)	(0.67)	(0.37)	(7.06)	(2.15)	9.44
- Diluted (Amount in Rs.)	(0.67)	(0.37)	(7.06)	(2.15)	9.44

Notes:

1) The above results have been reviewed by the Audit Committee and subsequently approved at the meeting of the Board of Directors held on 17 May 2024.

2) **Key Standalone Financial Information:** (Rs. in Crores)

Particulars	Quarter ended 31-Mar-24 (Refer note- 3)	Quarter ended 31-Dec-23 Unaudited	Quarter ended 31-Mar-23 (Refer note- 3)	Year ended 31-Mar-24 Audited	Year ended 31-Mar-23 Audited
Total Income	0.37	2.87	32.48	3.57	529.69
Profit/(Loss) before Tax	(14.36)	(8.05)	(39.41)	(43.37)	412.77
Net Profit/(Loss) after Tax	(14.36)	(8.05)	(39.66)	(43.37)	412.99

3) Figures for the quarters ended 31 March 2024 and 31 March 2023 represent the balancing figures between the audited figures for the full financial year and published reviewed year to date figures upto third quarter of the respective financial year.

4) The above is an extract of the detailed format of Quarterly/ Annual Financial Results filed with the Stock Exchanges under Regulation 33 of the SEBI (Listing and Other Disclosure Requirements) Regulations, 2015. The full format of the Quarterly/ Annual Financial Results are available on the Company's website (https://www.yaari.com) and on the website of BSE (https://www.bseindia.com) and NSE (https://www.nseindia.com).

Registered Office: 5th Floor, Plot No. 108, IT Park, Udyog Vihar, Phase-1 Gurugram, Haryana 122016

By order of the Board of Directors
For Yaari Digital Integrated Services Limited

Supriya Bhatnagar
Director
DIN: 08731453
duly authorised by the Board of Directors

Place : Gurugram
Date : 17 May 2024

दक्षिण अफ्रीका की युद्ध विराम की अपील

इजराइल आईसीजे में नरसंहार के आरोपों का जवाब देगा

एपी। हेग (नीदरलैंड)

दक्षिण अफ्रीका द्वारा गाजा में तत्काल संघर्ष विराम के लिए संयुक्त राष्ट्र की शीर्ष अदालत में अपील किए जाने के बाद इजराइल अब शुक्रवार को अदालत में नरसंहार के आरोपों का जवाब देगा।

दक्षिण अफ्रीका ने इजराइल पर नरसंहार का आरोप लगाते हुए अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) में दिसंबर में याचिका दायर की थी जिसके बाद बृहस्पतिवार को अदालत ने गाजा में जारी संघर्ष को लेकर तीसरी बार सुनवाई की।

बृहस्पतिवार को दक्षिण अफ्रीका ने अदालत को बताया कि गाजा में स्थिति एक नए और भयावह चरण पर पहुंच गई है।

दक्षिण अफ्रीका ने 15 न्यायाधीशों की पीठ से तत्काल कार्वाई की अपील की।

नीदरलैंड में दक्षिण अफ्रीका के राजदूत वुसिमुजी मदोन्सेला ने न्यायाधीशों की पीठ से अपील कि वे इजराइल को गाजा पट्टी से पूरी तरह और बिना शर्त हटने का आदेश दें।

दक्षिण अफ्रीका ने इजराइल की जांच के लिए आईसीजे से चार अनुरोध किए हैं। हालिया अनुरोध के अनुसार, दक्षिण अफ्रीका का कहना है कि रफह में इज़राइल की सैन्य घुसपैठ से गाजा में फलस्तीन के लोगों के अस्तित्व के लिए खतरा है। इस साल की शुरुआत में सुनवाई के दौरान इजराइल ने गाजा में नरसंहार के आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया था और कहा था कि वह हर संभव प्रयास करता है कि आम नागरिकों को कोई नुकसान नहीं हो और वह केवल हमास के आतंकवादियों को निशाना बना रहा है। जनवरी में न्यायाधीशों ने इजराइल को आदेश दिया था कि वह गाजा में लोगों की मौत, विनाश और नरसंहार की किसी भी घटना को रोकने के लिए हरसंभव प्रयास करे लेकिन पीठ ने सैन्य हमले को रोकने का आदेश नहीं दिया था। न्यायालय ने पहले ही पाया है कि इजराइल के सैन्य अभियानों के कारण गाजा में फलस्तीन के लोगों को वास्तव में खतरा है। दक्षिण अफ्रीका की कानूनी टीम के सदस्य अधिवक्ता ब्लिन नी घ्रालैघ ने कहा, "यह न्यायालय के पास कार्वाई करने का संभवत: आखिरी मौका है।दक्षिण अफ्रीका के कानूनी दल के सदस्य वकील ब्लिन नी घ्रालैघ ने कहा, न्यायालय ने पहले ही माना है कि इजराइल के सैन्य अभियानों के कारण गाजा में फलस्तीन के लोगों को वास्तव में खतरा है। यह न्यायालय के पास कार्यवाही करने का संभवत: आखिरी मौका है। इस साल की शुरुआत में सुनवाई के दौरान इजराइल ने गाजा में नरसंहार के आरोपों को सिरे से खारिज कर दिया था और कहा था कि वह हर संभव प्रयास करता है कि आम नागरिकों को कोई नुकसान नहीं हो और वह केवल हमास के आतंकवादियों को निशाना बना रहा है। दक्षिण अफ्रीका की ओर से पेश वकील वॉन लोवे ने कहा,"रफह में इजराइल की कार्वाई गाजा के विनाश की दिशा में अंतिम चरण हैं।नई याचिका में कहा गया कि हेग स्थित अदालत के पिछले आदेश गाजा के लोगों के लिए एकमात्र शरणस्थल पर बर्बर सैन्य हमले को रोकने के लिए पर्याप्त नहीं थे।

संयुक्त राष्ट्र, भारतीय दूतावास, इजराइल सरकार के अधिकारियों ने कर्नल काले को दी श्रद्धांजलि

भाषा। तेल अवीव

गाजा में जान गंवाने वाले भारतीय सेना के पूर्व अधिकारी कर्नल वैभव अनिल काले को यहां स्थित भारतीय दूतावास के साथ-साथ संयुक्त राष्ट्र और इजराइल सरकार के अधिकारियों ने शुक्रवार को श्रद्धांजलि दी।

काले (46) सोमवार को सुबह संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा एवं संरक्षा विभाग (यूएनडीएसएस) के अन्य कर्मचारियों के साथ वैश्विक संस्था के वाहन में रफह स्थित यूरोपियन हॉस्पिटल जा रहे थे, तभी वह हमले की चपेट में आ गए और उनकी जान चली गई। हमले में जॉर्डन से संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा एवं संरक्षा विभाग का एक कर्मचारी घायल हुआ है। भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर पोस्ट किया कि कर्नल काले के पार्थिव शरीर को भारत ले जाया जा रहा है।

दूतावास ने श्रद्धांजलि कार्यक्रम की कुछ तस्वीरें पोस्ट करते हुए कहा, दूतावास के अधिकारियों के साथ-साथ इजराइल के विदेश मंत्रालय, इजराइल रक्षा बल और यूएनडीएसएस तथा संयुक्त राष्ट्र के अन्य संगठनों के अधिकारियों ने कर्नल वैभव अनिल काले (सेवानिवृत्त) को श्रद्धांजलि दी।

भारतीय सेना से 2022 में, समय पूर्व सेवानिवृत्ति लेने वाले कर्नल काले दो महीने पहले संयुक्त राष्ट्र के सुरक्षा एवं संरक्षा विभाग में सुरक्षा समन्वय अधिकारी नियुक्त किए गए थे। उन्होंने कश्मीर में 11 जम्मू-कश्मीर राइफल्स की कमान संभाली थी।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस के उप प्रवक्ता फरहान हक ने मंगलवार को संवाददाता सम्मेलन में कहा था, हम भारत की सरकार और लोगों के प्रति खेद और संवेदना व्यक्त करते हैं।

उन्होंने कहा, हम भारत द्वारा दिए गए योगदान की सराहना करते हैं। गुतारेस ने भी काले के परिवार के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने तत्काल मानवीय संघर्ष विराम और सभी बंधकों की रिहाई किए जाने की अपील की।

उन्होंने कहा कि गाजा में अब तक संयुक्त राष्ट्र के 190 से अधिक कर्मचारी मारे गए हैं।

सहायता सामग्री लेकर गाजा पट्टी में पहुंचे ट्रक: अमेरिकी सेना

भाषो। वाशिंगटन

युद्धग्रस्त गाजा पट्टी में अमेरिका द्वारा हाल में बनाए गए एक तैरते पोतघाट के जरिए राहत सामग्री लेकर ट्रक पहली बार शुक्रवार को संकटग्रस्त इलाके में पहुंचे। इजराइल ने गाजा में जारी भीषण युद्ध के बीच जमीनी सीमा पर प्रतिबंध लगा दिए है जिसके कारण लोगों तक खाद्य एवं अन्य आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति बाधित हो गई थी।

अमेरिकी सैन्य अधिकारियों का अनुमान है कि इस पोतघाट के जरिए गाजा पट्टी में एक दिन में 150 ट्रक ले जाए जा सकते हैं। इस बीच, इजराइल ने दक्षिणी शहर रफह में हमास के खिलाफ सात महीने से जारी लड़ाई को और तेज कर दिया है।

अमेरिका और सहायता समूहों ने साथ ही इस बात को लेकर सचेत किया कि इस पोतघाट परियोजना को जमीनी मार्ग से आपूर्ति पहुंचाए जाने का विकल्प नहीं माना जा सकता। उनका कहना है कि जमीनी मार्ग के जरिए ही गाजा में आवश्यक भोजन, पानी और ईंधन पहुंचाया जा सकता है। युद्ध से पहले, औसतन प्रतिदिन 500 से अधिक ट्रक गाजा में प्रवेश करते थे।

हमास द्वारा पिछले साल सात अक्टूबर को इजराइल में घुसकर किए गए हमले के बाद से इजराइल ने गाजा की नाकेबंदी कर दी है। इसकी वजह से ट्रकों का परिचालन करने के लिए ईंधन की कमी, आतंकवादी हमले, सामरिक बाधाएं बनी हुई है।

हमास ने सात अक्टूबर को इजराइल पर हमला किया था और इस हमले में।,200 लोग मारे गए थे तथा 250 लोगों को बंधक बना लिया गया था। इस हमले के जवाब में इजराइल ने भी गाजा में हमास पर हमला किया।

स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों का कहना है कि इजराइल के हमले में गाजा पट्टी में 35,000 से अधिक फलस्तीनी मारे गए हैं।

सहायता एजेंसियों का कहना है कि दक्षिणी गाजा में खाने-पीने की चीजें खत्म हो रही हैं और ईंधन का भंडार तेजी से कम हो रहा है, जबकि अमेरिकी अंतरराष्ट्रीय विकास एजेंसी और विश्व खाद्य कार्यक्रम का कहना है कि गाजा के उत्तर में पहले ही अकाल की स्थिति उत्पन्न हो चुकी है।

सैनिकों ने बृहस्पतिवार को तैरते पोतघाट स्थापित करने का काम पूरा कर लिया और अमेरिकी सेना के मध्य कमान ने कहा कि शुरुआती सहायता शुक्रवार सुबह नौ बजे गाजा पहुंची। इसमें कहा गया है कि ऑपरेशन में कोई भी अमेरिकी सैनिक तट पर नहीं गया।

कमान ने कहा, समुद्री गलियारे के माध्यम से गाजा में फलस्तीनी नागरिकों को अतिरिक्त सहायता देने का यह एक सतत, बहुराष्ट्रीय प्रयास है जो प्रकृति में पूरी तरह से मानवीय है, और इसमें कई देशों और मानवीय संगठनों द्वारा दान की गई सहायता वस्तुएं शामिल होंगी।

पेंटागन (अमेरिकी रक्षा मंत्रालय) ने कहा कि वितरण प्रक्रिया में उसकी ओर से किसी प्रकार की सहायता की उम्मीद नहीं है। इसका समन्वय संयुक्त राष्ट्र द्वारा किया जा रहा है। संयुक्त राष्ट्र ने हालांकि, कहा कि जमीनी रास्ते से की जाने वाली ईंधन आपूर्ति लगभग बंद है और इससे गाजा के लोगों तक सहायता पहुंचाना बेहद मुश्किल हो जाएगा।

संयुक्त राष्ट्र के उप प्रवक्ता फरहान हक ने कहा, हमें ईंधन की सख्त जरूरत है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि राहत सामग्री समुद्र के रास्ते आ रही है या जमीन के, लेकिन बिना ईंधन यह लोगों तक नहीं पहुंचेगा।

पेंटागन की प्रवक्ता सबरीना सिंह ने कहा कि अमेरिका, इजराइल से की जाने वाली हर बातचीत में ईंधन का मुद्दा उठाता है।

रूस ने ब्रिटेन के रक्षा अताशे को निष्कासित किया

एपी। मॉस्को

ब्रिटेन में रूस के रक्षा अताशे को जासूसी के आरोपों में इस महीने की शुरुआत में बर्खास्त किए जाने के जवाब में रूस ने भी बृहस्पतिवार को ब्रिटेन के रक्षा अताशे को अवांछनीय व्यक्ति घोषित किया और देश छोड़ने के लिए एक सप्ताह का समय दिया। रूस के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि उसने बृहस्पतिवार को मॉस्को में ब्रिटिश दूतावास के एक प्रतिनिधि को तलब किया और लंदन से रूस के रक्षा अताशे को निष्कासित करने के बेबुनियाद फैसले पर कड़ा ऐतराज जताया। बयान में कहा गया, हम इस कदम को स्पष्ट रूप से रूस के प्रति ईर्ष्या रखने की प्रकृति वाली राजनीति से प्रेरित कार्वाई के रूप में लेते हैं जिससे द्विपक्षीय संबंधों को अपूरणीय क्षति हो रही है।

ब्रिटेन ने आठ मई को रूसी रक्षा अताशे पर अघोषित सैन्य खुफिया अधिकारी होने का आरोप लगाया और दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों को लेकर राजनयिक को देश से निष्कासित करने की घोषणा की।

भारत की तकनीकी सहायता बेहद अहम: राष्ट्रमंडल प्रमुख

भाषा। लंदन

राष्ट्रमंडल महासचिव पेट्रीसिया स्कॉटलैंड ने कहा है कि इस वैश्विक संस्था के लिए भारत की तकनीकी सहायता अत्यंत महत्वपूर्ण है और यह कई विकासशील देशों को विकास संबंधी चुनौतियों से निपटने की आशा प्रदान करती है।

स्कॉटलैंड ने लंदन में राष्ट्रमंडल के सदस्य देशों के शिक्षा मंत्रियों की बैठक के 22वें सत्र की मेजबानी के दौरान यह बात कही।

उन्होंने राष्ट्रमंडल के साथ तकनीकी विकास के तरीकों को साझा करने की भारत की इच्छा का स्वागत किया और संगठन के शैक्षिक लक्ष्यों के प्रति अधिक प्रतिबद्धता की उम्मीद जताई।

राष्ट्रमंडल महासचिव ने लंदन में राष्ट्रमंडल सचिवालय मार्लबोरो हाउस मुख्यालय में बृहस्पतिवार को शुरू हुई दो दिवसीय बैठक में अपने संबोधन में मंत्रियों से शिक्षा तक पहुंच में बाधा डालने वाली चुनौतियों को खत्म करने, प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने और जीवन भर सीखने के लिए प्रोत्साहित होने को कहा।

स्कॉटलैंड ने कहा, भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि वह अपने तकनीकी विकास को अपने राष्ट्रमंडल परिवार के साथ साझा करने और इसे ओपन-सोर्स तरीके से साझा करने को तैयार है।

उन्होंने कहा, कई विकासशील देशों को इससे आशा जागी है क्योंकि तकनीकी विकास उन विकासात्मक चुनौतियों से आगे निकलने में सक्षम बनाता है जिनका भारत पहले ही सामना कर चुका है और जिनसे आगे निकल चुका है... उन्होंने हमारे साथ अब तक जो साझा किया है, उसके लिए मैं भारत सरकार को धन्यवाद देना चाहती हूं।

सम्मेलन में मुख्य वक्ता समाज सुधारक एवं नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी थे। सत्यार्थी ने पिछले 15-20 वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में भारत की प्रगति पर प्रकाश डाला और राष्ट्रमंडल देशों के बच्चों के लिए समानुभूति मेधा का प्रस्ताव रखा।

उन्होंने कहा समानुभूति मेधा निस्वार्थ, उचित और समस्याओं को हल करने वाली है। समस्या का समाधान करने वालों और समस्या से पीड़ित लोगों के बीच किसी प्रकार का कोई संपर्क नहीं होना गंभीर बात है। शिक्षा मंत्री और शिक्षा क्षेत्र यह सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं कि हमारे बच्चे समानुभूति मेधा विकसित करें और बढ़ते विभाजन और भेदभावपूर्ण प्रथाओं को कम कर सकें।

अमेरिका और दक्षिण अफ्रीका के संयुक्त हवाई अभ्यास के बीच उत्तर कोरिया ने बैलिस्टिक मिसाइल दागी

एपी। सियोल

दक्षिण कोरिया और अमेरिका द्वारा लड़ाकू विमानों का संयुक्त अभ्यास किए जाने के एक दिन बाद उत्तर कोरिया ने शुक्रवार को अपने पूर्वी तट की ओर एक बैलिस्टिक मिसाइल दागी। दक्षिण कोरिया की सेना ने यह जानकारी दी।

उत्तर कोरिया अमेरिका और दक्षिण कोरिया के संयुक्त सैन्य अभ्यास को अपनी सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा मानता है।

दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ ने एक बयान में बताया कि उत्तर कोरिया ने शुक्रवार को अपने पूर्वी तट की ओर एक बैलिस्टिक मिसाइल दागी लेकिन उसने इस प्रक्षेपण के बारे में कोई और जानकारी नहीं दी। उसने यह भी नहीं बताया कि मिसाइल ने कितनी दूरी तय की।

अमेरिका एवं दक्षिण कोरिया के साथ कूटनीति में गतिरोध के बीच उत्तर कोरिया ने हालिया महीनों में हथियारों का परीक्षण बढ़ा दिया है और वह अपनी सैन्य क्षमताओं का विस्तार जारी रखे हुए है। पर्यवेक्षकों के अनुसार, उत्तर कोरिया का मानना है कि यदि उसका शस्त्रागार मजबूत होगा तो वह वार्ता बहाल होने की स्थिति में अमेरिका से अधिक छूट हासिल कर सकेगा।

दक्षिण कोरिया के मध्य क्षेत्र में बृहस्पतिवार को किए गए संयुक्त हवाई अभ्यास में दो दक्षिण कोरियाई एफ-35ए लड़ाकू विमानों और दो यूएसएफ-22 रैप्टर विमानों ने हिस्सा लिया था। उत्तर कोरिया अत्याधुनिक अमेरिकी विमानों की तैनाती को लेकर बेहद संवेदनशील है।

नेपाल के प्रधानमंत्री प्रचंड सोमवार को चौथी बार विश्वास मत हासिल करेंगे

भाषा। काठमांडू

नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचंड 20 मई को संसद में विश्वास मत हासिल करेंगे। यह उनके पद संभालने के 18 महीने के भीतर चौथा विश्वास मत होगा। एक गठबंधन सहयोगी द्वारा उनकी सरकार से समर्थन वापस लेने के कुछ दिनों बाद उन्हें विश्वास मत का सामना करना पड़ रहा है।

प्रचंड नेपाल की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी सेंटर) से संबंध रखने पूर्व गुरिल्ला नेता हैं और उनकी पार्टी प्रतिनिधि सभा (एचओआर) में तीसरी सबसे बड़ी पार्टी है।

विश्वास मत हासिल करने का निर्णय 13 मई को उपेन्द्र यादव के नेतृत्व वाली जनता समाजवादी पार्टी नेपाल (जेएसपी) द्वारा पार्टी में विभाजन के बाद सरकार से अपना समर्थन वापस लेने के बाद किया गया है। यादव ने उपप्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था और उनकी पार्टी सरकार से बाहर हो गई थी।

प्रतिनिधि सभा के सहायक प्रवक्ता दशरथ धमाला के अनुसार, "प्रधानमंत्री नेपाल के संविधान के अनुच्छेद 100 खंड 2 के मुताबिक विश्वास मत हासिल कर रहे हैं।

धमाला ने कहा कि प्रधानमंत्री कार्यालय और मंत्रिपरिषद ने पहले ही इस मामले के संबंध में संसद सचिवालय को सूचित करते हुए एक पत्र भेजा है। प्रधानमंत्री जिस पार्टी का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं अगर वह विभाजित हो जाती है या गठबंधन सरकार का कोई सदस्य समर्थन वापस ले लेता है तो प्रधानमंत्री को 30 दिनों के भीतर विश्वास मत हासिल करना होता है।

प्रचंड ने 25 दिसंबर 2022 को पद संभाला था, जिसके बाद डेढ़ साल के भीतर यह उनका चौथा विश्वास मत होगा।

नई सरकार को विश्वास मत जीतने के लिए 275 सदस्यीय प्रतिनिधि सभा में कम से कम 138 वोटों की आवश्यकता है।

इससे पहले 13 मार्च को प्रधानमंत्री दाहाल ने लगातार तीसरा विश्वास मत जीता था।

टेक्सास में पुल से टकराई ईंधन ले जा रही नौका, 2000 गैलन तेल गिरने की आशंका

एपी। गालवेस्टर (अमेरिका)

अमेरिका में टेक्सास के गैलवेस्टन के पास ईंधन ले जा रही एक नौका के पुल से टकरा जाने के कारण 2,000 गैलन तेल के पानी में गिर जाने की आशंका है। अमेरिकी तटरक्षक बल यूएस कोस्ट गार्ड ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी।

तटरक्षक बल ने बताया कि टगबोट (नौकाओं को खींचने या धक्का देने के लिए इस्तेमाल होने वाली नौका) से अलग होने के बाद बुधवार को पेलिकन आइलैंड कॉजवे पुल के एक खंभे से टकरा गई जिसके कारण पुल आंशिक रूप से ढह गया और गैलवेस्टन को पेलिकन द्वीप से जोड़ने वाली एकमात्र सड़क कट गई।

मार्टिन मरीन के उपाध्यक्ष रिक फ्रीड ने संवाददाता सम्मेलन में बताया कि पोत में 30,000 बैरल तेल रखने की क्षमता है लेकिन जब यह पुल से टकराया तो उसमें 23,000 बैरल तेल था। कोस्ट गार्ड के कैप्टन कीथ डोनोह्यू ने कहा, हमें पूरा विश्वास है कि हमने शुरू में जो अनुमान लगाया था, पानी में उससे कम तेल गिरा है।

उन्होंने कहा, हमने 605 गैलन से अधिक तैलीय पानी का मिश्रण निकाल लिया है। साथ ही नाव के ऊपर से अतिरिक्त 5,640 गैलन तैलीय उत्पाद बरामद कर लिया है जो पानी में नहीं गया था।

यूएस कोस्ट गार्ड ने बताया कि पानी में 2,000 गैलन तेल गिरने की आशंका है।

फ्रांस की पुलिस ने यहूदियों के प्रार्थना स्थल पर हमले की योजना बना रहे संदिग्ध को मार गिराया

एपी। पेरिस

फ्रांस की पुलिस ने नॉरमैंडी शहर के रूएन में यहूदियों के एक प्रार्थना स्थल में आग लगाने का षड्यंत्र रच रहे एक सशस्त्र संदिग्ध को शुक्रवार तड़के गोली मार दी जिससे उसकी मौत हो गई। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

अधिकारियों के मुताबिक, संदिग्ध व्यक्ति के पास एक चाकू और धातु की एक छड़ थी। देश के गृह मंत्री गेराल्ड डर्मेनिन ने सोशल मीडिया साइट एक्स के माध्यम से जानकारी दी कि सशस्त्र व्यक्ति को मार गिराया गया।

उन्होंने कहा, रूएन में राष्ट्रीय पुलिस अधिकारियों ने आज सुबह एक हथियारबंद व्यक्ति को मार गिराया जो शहर में यहूदियों के प्रार्थना स्थल में जाहिर तौर पर आग लगाना चाहता था। मैं तुरंत कार्वाई करने और अधिकारियों के साहस के लिए उन्हें बधाई देता हूं।

राष्ट्रीय पुलिस के मुताबिक, अधिकारियों को शुक्रवार की सुबह सतर्क किया गया कि प्रार्थना स्थल से धुआं उठ रहा है और जब वे वहां पहुंचे तो उनका सामना एक व्यक्ति से हुआ।

राष्ट्रीय पुलिस सूचना सेवा ने बताया कि वह व्यक्ति चाकू और धातु की छड़ लेकर अधिकारियों की ओर बढ़ा, तभी एक अधिकारी ने गोली चला दी और उस व्यक्ति को गंभीर रूप से घायल कर दिया।

रूएन के मेयर निकोलस माएर-रॉसिग्नोल ने कहा कि ऐसा माना जाता है कि वह व्यक्ति एक कूड़ेदान पर चढ़ गया और प्रार्थना स्थल के अंदर पेट्रोल बम फेंक दिया, जिससे आग लग गई और प्रार्थना स्थल को गंभीर क्षति हुई।

शी और पुतिन ने व्यापार और सांस्कृतिक आदान प्रदान पर की चर्चा

एपी। बीजिंग

रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने शुक्रवार को चीन की अपनी राजकीय यात्रा के दौरान व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर ध्यान केंद्रित किया।

इस यात्रा की शुरुआत बीजिंग के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों की मजबूती को रेखांकित करते हुए चीन के नेता शी चिनफिंग के साथ शिखर सम्मेलन से हुई।

इस शिखर सम्मेलन में दोनों देशों के बीच असीमित साझेदारी को भी दोहराया गया जो पश्चिमी देशों के साथ उनके बढ़ते तनाव के बीच गहरी हो रही है।

पुतिन उत्तरपूर्वी शहर हार्बिन में चीन-रूस एक्सपो में भाग लेंगे और हार्बिन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में छात्रों से मिलेंगे। हार्बिन चीन के हेलोंगशियान प्रांत की राजधानी है जहां किसी समय बड़ी संख्या में रूसी प्रवासी रहते थे। यद्यपि पुतिन की यात्रा प्रतीकात्मक अधिक है और इसमें ठोस प्रस्ताव कम हैं, फिर भी दोनों देश एक स्पष्ट संदेश भेज रहे हैं।

स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय के हूवर इंस्टीट्यूट के रिसर्च फैलो जोसेफ टोरीगियन ने कहा कि इस समय वे पश्चिम को बता रहे हैं कि वे जब चाहें तब एक दूसरे के साथ खड़े हो सकते हैं।

बृहस्पतिवार को शिखर सम्मेलन में पुतिन ने यूक्रेन में युद्ध को समाप्त करने के लिए चीन के प्रस्तावों के लिए शी को धन्यवाद दिया जबकि शी ने कहा कि चीन यूरोप में जल्द शांति और स्थिरता लौटने की उम्मीद करता है और वह इस दिशा में सकारात्मक भूमिका निभाना जारी रखेगा।

उन्होंने एशिया और प्रशांत क्षेत्र में अमेरिकी सैन्य गठजोड़ की तैनाती की आलोचना की।

रूस के राष्ट्रपति पुतिन यूक्रेन पर आक्रमण के कारण विश्व स्तर पर अलग-थलग पड़ गए हैं। चीन के अमेरिका के साथ तनावपूर्ण संबंध हैं। उसे रूस को हथियार उत्पादन के लिए आवश्यक प्रमुख घटकों की आपूर्ति जारी रखने को लेकर दबाव का सामना करना पड़ रहा है।

रूस द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण करने के बाद से रूस चीन पर अधिक निर्भर हो गया है क्योंकि पश्चिमी प्रतिबंधों से वह दबाव में है। पिछले वर्ष दोनों देशों के बीच व्यापार बढ़कर 240 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया क्योंकि चीन ने अपने पड़ोसी को पश्चिमी प्रतिबंधों से निपटने में मदद की है।

यूरोपीय नेताओं ने चीन पर दबाव डाला है कि वह रूस से यूक्रेन पर आक्रमण समाप्त करने के लिए कहे। हालांकि इसका कोई खास फायदा नहीं हुआ है।

पूरन की आतिशी पारी से एलएसजी के 214 रन

मुंबई इंडियंस के खिलाफ मुकाबला

भाषा। मुंबई

निकोलस पूरन की 29 गेंद में 75 रन की ताबड़तोड़ पारी के दम पर लखनऊ सुपरजायंट्स (एलएसजी) ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) टी20 मैच में शुक्रवार को यहां मुंबई इंडियंस के खिलाफ छह विकेट पर 214 रन बनाए। पूरन ने अपनी पारी में पांच चौके और आठ छक्के जड़ने के अलावा कप्तान लोकेश राहुल (55) के साथ 44 गेंद में 109 रन की साझेदारी कर टीम को मुश्किल परिस्थिति से बाहर निकाला। राहुल ने 41 गेंद की पारी में तीन चौके और इतने ही छक्के लगाए। आखिरी ओवरों में आयुष बडोनी (10 गेंद में नाबाद 22) और कृणाल पंड्या (सात गेंद में नाबाद 12) ने सातवें विकेट के लिए 17 गेंदों में 36 रन की अटूट साझेदारी कर टीम को बड़े स्कोर तक पहुंचाया। मुंबई के लिए नुवान तुषारा ने 28 रन देकर तीन जबकि पीयूष चावला ने 29 रन देकर तीन विकेट लिए। टीम के बाकी सभी गेंदबाज काफी महंगे साबित हुए। तुषारा ने पहले ओवर में देवदत्त पडीक्कल को खाता खोले बगैर पगबाधा किया। मार्कस स्टोइनिस ने अंशुल कंबोज के खिलाफ तीन चौके लगाकर दबाव कम किया तो वहीं कप्तान लोकेश राहुल ने पीयूष चावला का छठे ओवर में स्वागत दो छक्के से किया। इस अनुभवी गेंदबाज ने हालांकि इसी ओवर में स्टोइनिस को पगबाधा कर मुंबई को बड़ी सफलता दिलाई। पावरप्ले के बाद टीम का स्कोर दो विकेट पर 49 रन था। चावला ने 10वें ओवर में हुड्डा की नौ गेंद में 11 रन की पारी को खत्म किया। पूरन के क्रीज पर आने के बाद एलएसजी की रनगति ने रफ्तार पकड़ी। एक छोर से राहुल दौड़कर रन चुराने पर ध्यान दे रहे थे तो वही पूरन कंबोज के अगले दो ओवरो में तीन छक्के और दो चौके जड़कर रन गति को तेज किया। उन्होंने 13वें ओवरों में 22 रन बटोरने के बाद अगले ओवर में हार्दिक पंड्या के खिलाफ दो छक्के जड़ दिए।उन्होंने अर्जुन के खिलाफ लगातार दो छक्के लगाकर 19 गेंद में अपना अर्धशतक पूरा किया। अर्जुन चोटिल होने के बाद आगे गेंदबाजी नहीं कर सके और उनकी जगह ओवर पूरा करने आए नमन धीर के खिलाफ पूरन और राहुल ने छक्के जड़े जिससे एलएसजी ने 15वें ओवर में 29 रन बटोरे। राहुल ने रोमारियो शेपर्ड के खिलाफ चौका लगाकर 37 गेंद में अपना पचासा पूरा किया। तुषारा ने 17वें ओवर की आखिरी दो गेंदों पर पूरन और अरशद खान (शून्य) को चलता किया तो वहीं चावला ने अगले ओवर की पहली गेंद पर राहुल की संयमित पारी को खत्म किया जिससे एलएसजी ने लगातार तीन गेंदों पर तीन विकेट गंवाए। बडोनी और कृणाल ने रन गति को कम नहीं होने दिया। बडोनी ने आखिरी ओवर में रोमारियो शेफर्ड के खिलाफ दो छक्के और एक चौका लगाया।

स्कोरबोर्ड

एलएसजी पारी: लोकेश का तुषारा बो चावला 55, पड्डीक्कल पगबाधा तुषारा 00,स्टोइनिस पगबाधा चावला 28,हुड्डा का वढ़ेरा बो चावला 11, पूरन का सूर्यकुमार बो तुषारा 75, अरशद का वढ़ेरा बो तुषारा 00,बडोनी नाबाद 22, कृणाल नाबाद 07,**अतिरिक्त:** 11,**कुल योग:** (20 ओवर मे छह विकेट पर) 214 रन,**विकेट पतन:**1-1, 2-49, 3-69, 4-178, 5-178, 6-178,**गेंदबाजी:** तुषारा 4-0-28-3,अर्जुन 2.2-0-22-0,कंबोज 3-0-48-0,चावला 4-0-29-3,वढेरा 2-0-13-0,हार्दिक 2-0-27-0,नमन0.4-0-17-0,शेफर्ड 2-0-30-0

आखिरी प्लेआफ स्थान के लिए आरसीबी और सीएसके में टक्कर

बारिश की आशंका

भाषा। बेंगलुरू

लगातार पांच जीत दर्ज कर चुकी रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू आईपीएल प्लेआफ में चौथी टीम के निर्धारण के लिए शनिवार को यहां करो या मरो के मुकाबले में पांच बार की चैम्पियन चेन्नई सुपर किंग्स के सामने होंगी लेकिन इस मैच पर मौसम की गाज गिरने की आशंका भी है। हैदराबाद में सनराइजर्स हैदराबाद और गुजरात टाइटंस का मैच बारिश में धुलने के कारण अब कोलकाता नाइट राइडर्स और राजस्थान रॉयल्स के बाद सनराइजर्स प्लेआफ में पहुंच गई है। अब सिर्फ एक स्थान के लिए रस्साकशी है और दो टीमें सीएसके तथा आरसीबी दौड़ में हैं। बेहतर रनरेट और अधिक अंक (13 अंक और 0 . 528 रनरेट) होने से चेन्नई का दावा मजबूत है। इस मैदान पर वह आठ मैचों में आरसीबी से एक ही बार हारी है। वहीं आरसीबी के 12 अंक है और उसका नेट रनरेट 0 . 387 है। मौसम विभाग ने कल बारिश की भविष्यवाणी की है। अगर मैच नहीं हो पाता है तो चेन्नई प्लेआफ में पहुंच जाएगी। वहीं आरसीबी को कम से कम 18 रन से या 11 गेंद बाकी रहते जीत दर्ज करनी होगी। आरसीबी इस समय सबसे शानदार फॉर्म में हैं। छह मैचों की हार का सिलसिला तोड़ने के बाद उसने लगातार पांच जीत दर्ज की है। आरेंज कैपधारी विराट कोहली जबर्दस्त फॉर्म में हैं और पिछले पांच में से तीन मैचों में अर्धशतक जड़ चुके हैं। कप्तान फाफ डु प्लेसी से अच्छी पारी की उम्मीद होगी जो पिछले दो मैचों में दोहरे अंक तक नहीं पहुंच सके। मध्यक्रम में रजत पाटीदार और कैमरन ग्रीन अच्छा खेल रहे हैं। महिपाल लोमरोर और दिनेश कार्तिक भी बल्लेबाजों की ऐशगाह चिन्नास्वामी स्टेडियम की पिच का फायदा उठाना चाहेंगे। आरसीबी के गेंदबाजों में यश दयाल ने इस सत्र में सबसे ज्यादा विकेट लिए हैं। लॉकी फर्ग्युसन , मोहम्मद सिराज, ग्रीन और स्वप्निल सिंह के सामने कड़ी चुनौती है। चेन्नई के लिए कप्तान रूतुराज गायकवाड़ ने इस सत्र में सबसे ज्यादा रन बनाए हैं और उनसे इस लय को कायम रखने की उम्मीद है। सलामी बल्लेबाज रचिन रविंद्र ने भी उपयोगी पारियां खेली है। पिछली चार पारियों में नाकाम रहे शिवम दुबे से भी अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है।

अदिति अशोक की मिजुहो अमेरिका ओपन में निराशाजनक शुरुआत

जर्सी सिटी (अमेरिका)। भारतीय गोल्फर अदिति अशोक मिजुहो अमेरिका ओपन के शुरुआती दौर में चार ओवर 76 का निराशाजनक कार्ड खेलने के बाद संयुक्त रूप से 99वें स्थान पर है।अदिति इस एलपीजीए प्रतियोगिता के पहले दौर में दो बर्डी के मुकाबले छह बोगी कर बैठी और इस प्रदर्शन के बाद उनके कट में जगह बनाने पर खतरा मंडरा रहा है। कोरिया की सो मी ली छह अंडर 66 के कार्ड के साथ तालिका में शीर्ष पर है।

ब्राजील में होगा 2027 फीफा महिला फुटबॉल विश्व कप

बैंकॉक। ब्राजील में 2027 महिला फुटबॉल विश्व कप होगा चूंकि फीफा के पूर्णकालिक सदस्यों ने बेल्जियम, नीदरलैंड और जर्मनी के संयुक्त प्रस्ताव पर दक्षिण अमेरिकी देश को तरजीह दी है। फीफा कांग्रेस ने ब्राजील के पक्ष में 119 वोट दिए जबकि संयुक्त यूरोपीय बोली को 78 वोट मिले। अमेरिका और मैक्सिको ने संयुक्त प्रस्ताव पिछले महीने वापिस ले लिया था जबकि दक्षिण अफ्रीका ने नवंबर में अपनी दावेदारी वापिस ले ली थी।

दक्षिण अफ्रीका श्रृंखला से सबक लेकर प्रो लीग के लिए तैयार नई कप्तान सलीमा

बेंगलुरू। भारतीय महिला हॉकी टीम की नई कप्तान सलीमा टेटे दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू श्रृंखला से सबक लेकर बुधवार से बेल्जियम के एंटवर्प में शुरू हो रहे एफआईएच प्रो लीग के यूरोपीय चरण में नए सिरे से शुरूआत करना चाहेंगी। पूर्व कप्तान सविता पूनिया के साथ भारत ने भुवनेश्वर और राउरकेला मे प्रो लीग के पहले चरण मे आठ मैचों मे दो ही जीत दर्ज की और नौ टीमो मे छठे स्थान पर खिसक गई। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दोस्ताना श्रृंखला से पहले सलीमा को टीम की कमान सौंपी गई जबकि नवनीत कौर को उपकप्तान बनाया गया।

शारजाह मास्टर्स शतरंज में निकोलस थियोडोरोउ से हारे अर्जुन एरिगेसी

शारजाह। भारतीय ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगेसी शारजाह मास्टर्स शतरंज टूर्नामेंट के दूसरे दौर मे यूनान के निकोल थियोडोरोउ से हार गए। उन्होंने हालांकि तीसरे दौर में स्विटजरलैंड के निकोलाइ कोचेरवा को हराया और लाइव रेटिंग मे आठवें स्थान पर बने हुए है। भारत के अरविंद चिदंबरम ने अजरबैजान के मुरादली मुहम्मद को हराया।

डोप परीक्षण में विफल होने पर खिलाड़ियों के समान कोच को भी सजा

नई दिल्ली। भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) ने शुक्रवार को डोपिंग के बढ़ते मामलो से निपटने के मामले मे नीतिगत बदलाव करते हुए खिलाड़ियों के बराबर कोच को भी सजा देने की घोषणा की। इस नीतिगत बदलाव का मकसद कोच को डोपिंग के प्रति जवाबदेह बनाना है। एएफआई को उम्मीद है कि यह स्वच्छ खेलों की संस्कृति बनाने में मददगार होगा और इससे यह संदेश भी जाएगा कि डोपिंग को किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नही किया जाएगा। एएफआई अध्यक्ष आदिल सुमरिवाला ने एएफआई की कार्यकारी परिषद की बैठक के बाद मीडिया से कहा, अगर कोई एथलीट डोपिंग मे पाया जाता है और उसे सजा दी जाती है, तो उनके कोच को भी एएफआई से समान सजा मिलेगी। कोच भी उतना ही जिम्मेदार होगा क्योंकि डोपिंग का यह पूरा मामला नियंत्रण से बाहर हो गया है। अब समय आ गया है ऐसे लोगों की पहचान की जाए और उन्हें शर्मिंदा किया जाए और उनके खिलाफ कार्वाई की जाए। एनआईएस डिप्लोमा धारकों सहित सभी कोचों को एएफआई के साथ पंजीकरण करना होगा।

संन्यास का फैसला अंतर्मन की आवाज पर लिया : छेत्री

भाषा। नई दिल्ली

भारतीय फुटबॉल कप्तान सुनील छेत्री ने शुक्रवार को कहा कि अगले महीने कुवैत के खिलाफ विश्व कप क्वालीफायर के बाद संन्यास का फैसला उन्होंने अंतर्मन की आवाज पर लिया और घरेलू सर्किट पर अपने उत्तरदायित्व पूरे करने के बाद वह ब्रेक लेना चाहेंगे। 39 वर्ष के छेत्री ने कुवैत के खिलाफ छह जून को फीफा विश्व कप क्वालीफाइंग मैच के बाद अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल को अलविदा कहने का फैसला लिया है। इसके साथ ही 19 बरस के उनके सुनहरे कैरियर पर भी विराम लग जाएगा जिसमें उन्होंने 150 अंतरराष्ट्रीय मैच खेल भारत के लिए सर्वाधिक 94 गोल किए। छेत्री ने वर्चुअल बातचीत में कहा , संन्यास का फैसला शारीरिक कारणों से नहीं लिया। मैं अभी भी फिट हूं, दौड़ रहा हूं , डिफेंड कर रहा हूं, मेहनत करना मुश्किल नहीं है। यह फैसला मानसिक पहलू को ध्यान में रखकर लिया। उन्होंने हालांकि मानसिक स्वास्थ्य के मसले पर विस्तार से कुछ नहीं कहा। मौजूदा दौर में विभिन्न खेलों में यह खिलाड़ियों के बीच चिंता का विषय बना हुआ है। छेत्री ने कहा , मैं खुद से लड़ रहा था। समग्र रूप से सोचने की कोशिश कर रहा था और अचानक यह फैसला लिया। एक साल बेंगलुरू एफसी के लिए खेलूंगा। घरेलू फुटबॉल कब तक खेलूंगा , पता नहीं। उसके बाद ब्रेक लूंगा। यह पूछने पर कि बतौर खिलाड़ी कैरियर खत्म होने पर क्या वह कोचिंग के बारे में सोचेंगे, छेत्री ने कहा , मैं कभी ना नहीं कहूंगा। ब्रेक के दौरान इस पर सोचूंगा लेकिन अभी यह मेरे एजेंडे में प्राथमिकता नहीं है। छेत्री का इंडियन सुपर लीग टीम के साथ अनुबंध अगले साल तक है। बाईचुंग भूटिया के बाद भारतीय फुटबॉल के ध्वजवाहक रहे छेत्री ने कहा कि उन्होंने फैसला लेने से पहले कोच इगोर स्टिमक से बात की। मैं स्टिमक के पास गया और इस फैसले के बारे में बताया। वह मेरी बात समझ गए। कोच के अलावा उन्होंने भारत के स्टार क्रिकेटर विराट कोहली से भी इस पर बात की। वह मेरे काफी करीब है और मुझे समझता है।

जब छेत्री ने संन्यास के ऐलान से पहले दोस्त विराट कोहली को बताया ...

बेंगलुरू। भारतीय कप्तान सुनील छेत्री जब फुटबॉल से विदा लेने के अपने फैसले के बारे मे घोषणा करने की सोच रहे थे तो उन्हें बखूबी पता था कि ऐसा एक इंसान है जो उनकी स्थिति को समझेगा और उनके दोस्त विराट कोहली ने भी उन्हें निराश नही किया। भारत के लिए सर्वाधिक 150 मैच खेलकर सबसे ज्यादा 94 गोल कर चुके छेत्री ने बृहस्पतिवार को ऐलान किया कि वह कोलकाता मे छह जून को कुवैत के खिलाफ मैच के बाद संन्यास लेगे। छेत्री ने कहा कि यह फैसला उन्होने अंतर्मन की आवाज पर लिया है। उन्होंने इसकी सार्वजनिक घोषणा करने से पहले कोहली को इसके बारे मे बताया। छेत्री ने भुवनेश्वर से आनलाइन मीडिया संवाद मे कहा , मैने फैसला लेने से पहले विराट कोहली से बात की। वह मेरे काफी करीब है। मैने उससे बात की क्योंकि वह इसे समझ सकता था। उन्होंने कहा , खेल के उतार चढाव, संन्यास। मुझे पता था कि वह समझेगा। इससे पहले शुक्रवार को कोहली ने आईपीएल मे अपनी टीम रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के एक्स पेज पर शॉर्ट वीडियो इंटरव्यू मे कहा , छेत्री महान खिलाड़ी है। उसने मुझे मैसेज करके बताया था कि वह संन्यास लेने जा रहा है। मुझे लगता है कि वह इस फैसले से संतोष महसूस कर रहा है। उन्होंने कहा , पिछले कुछ साल मे हम काफी करीब आए और मै उसे शुभकामनाएं देता हूं। वह बहुत प्यारा इंसान है। छेत्री ने जब 2018 मे मुंबई मे हीरो कप मैच के दौरान प्रशंसकों से भारतीय फुटबॉल टीम की हौसलाअफजाई की भावनात्मक अपील की थी, तब कोहली उनका साथ देने सबसे पहले आगे आने वालो मे थे। कोहली ने 2022 मे छेत्री के जन्मदिन पर कहा था , इस दोस्ती के लिए बहुत शुक्रगुजार हूं कप्तान। कोहली ने यह भी बताया कि उनकी बेटी वामिका बल्ला घुमाने लगी है लेकिन उन्होंने कहा कि वह अपने बच्चों पर कभी भी क्रिकेट खेलने के लिए दबाव नही बनाएंगे। मेरी बेटी ने बल्ला उठाया और उसे घुमाने मे मजा आ रहा है लेकिन आगे क्या बनना है, यह उसका फैसला होगा।

बांग्लादेश से एक जून को टी20 विश्व कप अभ्यास मैच खेलेगा भारत

भाषा। दुबई

भारतीय टीम एक जून को अमेरिका में बांग्लादेश के खिलाफ टी20 विश्व कप का अभ्यास मैच खेलेगी। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने शुक्रवार को यह ऐलान किया। मैच का आयोजन स्थल और समय अभी तय नहीं किया गया है। विश्व कप में भाग ले रही 20 टीमों में से 17 27 मई से एक जून तक अमेरिका और त्रिनिदाद एवं टोबैगो में अभ्यास मैच खेलेंगी। दक्षिण अफ्रीका टीम 29 मई को फ्लोरिडा में टीम के भीतर ही अभ्यास मैच खेलेगी। गत चैम्पियन इंग्लैंड और उपविजेता पाकिस्तान के अलावा सेमीफाइनल खेलने वाली न्यूजीलैंड कोई अभ्यास मैच नहीं खेलेंगी। पाकिस्तान और इंग्लैंड 22 मई से इंग्लैंड में चार मैचों की द्विपक्षीय श्रृंखला खेल रहे हैं। वहीं पाकिस्तान में पांच मैचों की टी20 श्रृंखला खेलकर कीवी टीम आठ जून को अफगानिस्तान के खिलाफ विश्व कप का पहला मैच खेलेगी। अभ्यास मैचों को टी20 का दर्जा हासिल नहीं है लिहाजा टीमें सभी 15 खिलाड़ियों को उतार सकती हैं।

कोरिया में अभ्यास करेंगी तीरंदाज दीपिका

नई दिल्ली। भारत की अनुभवी तीरंदाज दीपिका कुमारी अगले महीने तुर्किए के अंताल्या में होने वाले आखिरी ओलंपिक विश्व क्वालीफाइंग टूर्नामेंट से पहले दक्षिण कोरिया में अभ्यास करेंगी। पिछले महीने शंघाई मे विश्व कप मे रजत पदक जीतने के बाद दीपिका को टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना (टॉप्स) मे फिर से शामिल किया गया है। वह भारतीय महिला टीम का हिस्सा है जो पेरिस ओलंपिक का कोटा हासिल करने का प्रयास करेंगी। वह 13 दिन तक किम तीरंदाजी स्कूल मे अभ्यास करेंगी और 14 जून से अंताल्या मे होने वाले क्वालीफायर के लिए रवाना होंगी। टॉप्स के तहत मंत्रालय उनके हवाई किराए, रहने खाने, अभ्यास और स्थानीय आवागमन का खर्च उठाएगा। मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) ने तीरंदाजी पुरूष और महिला टीमों को फिजियोथेरेपी उपकरण खरीदने के लिए भी वित्तीय सहायता मंजूर की है। इसके अलावा प्रवीण जाधव को तीरंदाजी उपकरण खरीदने और निशानेबाज रेइजा ढिल्लों को भारत में 11 दिन तथा इटली मे एक सप्ताह अभ्यास को भी मंजूरी दे दी है। ट्रैप निशानेबाज राजेश्वरी कुमारी की विजन एंड आई ट्रेनिंग कोच की गुजारिश भी मान ली गई है।

वर्ल्ड चैंपियंस एडिशन की मांग

मुंबई। भारत के सबसे भरोसेमंद और पसंदीदा स्मार्टफोन ब्रांड, शाओमी ने विश्व में रेडमी नोट 13 सीरीज के 15 मिलियन से ज्यादा स्मार्टफोन बेचने की बड़ी उपलब्धि हासिल की है। इस भारी सफलता की खुशी में शाओमी ने सीरील के लिए कीमतों में भारी कमी की घोषणा की है, और अर्जेंटीना फुटबॉल एसोसिएशन (एजीए) के साथ गठबंधन में एक इंडिया एक्सक्लुसिव रेडमी 13 प्रो+ 5जी वर्ल्ड चैंपियंस एडिशन पेश किया है। शाओमी ने अपनी संपूर्ण श्रृंखला के लिए बेहतरीन मूल्यों की घोषणा की है। अब रेडमी नोट 13 सीरीज 5जी 15,499 रुपये के शुरुआती मूल्य में उपलब्ध होगी। शाओमी का उद्देश्य नोट सीरी? की सर्वश्रेष्ठ टेक्नोलॉजी ज्यादा से ज्यादा ग्राहकों तक पहुँचाना है। 8जीबी, 256जीबी के लिए 17,499 रुपये और 12जीबी 256जीबी के लिए 19,499 रुपये के प्रभावी मूल्य में उपलब्ध होगा।ये स्मार्टफोन मी.कॉम, अमेजन, फ्लिपकार्ट, शाओमी होम और शाओमी रिटेल पर सभी बैंक ऑफरों के साथ उपलब्ध होंगे।भारत में अपनी 10वीं वर्षगाँठ मनाने से पहले, शाओमी ने अर्जेंटीना फुटबॉल एसोसिएशन (एएफए) के साथ गठबंधन में एक इंडिया-एक्सक्लुसिव स्मार्टफोन, रेडमी नोट 13 प्रो, 5जी वर्ल्ड चैंपियंस एडिशन पेश किया है।

आईकू गेमिंग पर भी देगा जोर

लखनऊ । उत्तर प्रदेश में अपनी पकड़ मजबूत करने के लिए, हाई-परफॉर्मेंस स्मार्टफोन ब्रांड आईकू ने आज लखनऊ में अपना बिल्कुल नया फुल डे, फुली लोडेड स्मार्टफोन - आईकू जेड 9 पेश किया। यह सीमलेस गेमिंग एक्सपीरियंस के लिए तैयार किया गया है, इसमें सीमलेस गेमप्ले के लिए सुपर गेम मोड और छह मोशन कंट्रोल ऑप्शन और कोरेस्पोंडिंग इलस्ट्रेशन के साथ मोशन कंट्रोल शामिल है। इमर्सन को और बढ़ाते हुए, 4जी गेम वाइब्रेशन बीजीएमआई, कॉल ऑफ ड्यूटी और जेनशिन इम्पैक्ट जैसे सपोर्टेड टाइटल्स में गेमप्ले को बेहतर बनाता है।ब्रांड की राज्य में उल्लेखनीय वृद्धि हुयी है, पिछले एक वर्ष में 12प्रतिशत की वृद्धि और पहली तिमाही 2024 में लगातार आईकू की कुल बिक्री में 10प्रतिश का योगदान हुआ है, जो अलग अलग प्राइस रेंज में इनोवेशन के प्रति हमारी अथक प्रतिबद्धता को दर्शाता करता है। इसमे उसने हार्डवेयर से लेकर साफ्टवेयर पर रिसर्च के साथ इनोवेशन पर ध्यान दिया है। आईकू सीरीज़ ने लगातार उत्तर प्रदेश में प्यार और सराहना हासिल की है और पिछले 18 महीनों से यूपी में सबसे अधिक बिकने वाली सीरीज़ में से एक है, जो भारत के शीर्ष तीन राज्यों में शुमार है।

इम्पैक्ट प्लेयर नियम ने आल राउंडर से ज्यादा गेंदबाजों को प्रभावित किया है : शाहबाज अहमद

नई दिल्ली। सनराइजर्स हैदराबाद के बाएं हाथ के स्पिनर शाहबाज अहमद ने शुक्रवार को कहा कि इम्पैक्ट प्लेयर नियम आल राउंडर की तुलना मे गेंदबाजो के लिए सबसे बड़ा दुस्वप्न साबित हुआ है। शाहबाज ने इस इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) सत्र में 138 से ज्यादा के स्ट्राइक रेट से 186 रन बनाए है। लेकिन उनका मुख्य कौशल बाएं हाथ से स्पिन गेंदबाजी करना है जो उनके लिए फायदेमंद नही रहा है क्योंकि इससे उन्होने केवल तीन विकेट ही झटके है जिसमे भी उनका इकोनोमी रेट 10.60 का है और यह इतना अच्छा नही है। शाहबाज ने पीटीआई वीडियो से कहा, अब प्रत्एक टीम के पास कुल नौ बल्लेबाज (एक आल राउंडर और आठ बल्लेबाज) हो गए है।

मेरे रिकॉर्ड को अभी कोई खतरा नहीं : उसेन बोल्ट

नई दिल्ली। दुनिया के सबसे तेज फर्राटा धावक उसेन बोल्ट आठ साल के बाद फिर से ओलंपिक मे होंगे लेकिन प्रतिभागियों को चिंता करने की जरूरत नही है क्योंकि वह पेरिस मे सिर्फ उन्हे खेलते हुए देखने के लिए मौजूद होंगे। वह अपने शानदार रिकॉर्ड टूटने के प्रति जरा भी चिंतित नही है और उनका मानना है कि निकट भविष्य मे इन्हे कोई खतरा नही है। न्यूयॉर्क से पीटीआई को फोन पर दिए साक्षात्कार मे बोल्ट ने संन्यास के बाद जिंदगी, फिर से प्रतिस्पर्धा करने की इच्छा और निकट भविष्य मे भारत का दौरा करने की इच्छा के बारे मे बाते कीं। बर्लिन मे 2009 विश्व चैम्पियनशिप मे 100 मीटर मे उनका 9.58 सेकेंड और 200 मीटर मे 19.19 सेकेंड का रिकॉर्ड कायम है। बोल्ट ने कहा, मुझे नही लगता कि इस रिकॉर्ड को कोई खतरा है। इस समय नही है। मुझे लगता है कि यह लंबे समय तक रहेगा।

मेस्सी के शुरुआती करार के गवाह रहे नैपकिन के लिए आठ करोड़ रुपए से ज्यादा की बोली लगी

लंदन। दिग्गज फुटबॉल खिलाड़ी लियोनेल मेस्सी का स्पेन के क्लब बार्सीलोना के साथ पहले करार का गवाह रहे नैपकिन के लिए नीलामी मे 7,62,400 पाउंड (लगभग 8.05 करोड़ रुपए) की बोली लगी। ब्रिटेन मे नीलामी करने वाली कंपनी बोनहम्स ने यह जानकारी दी। लगभग 25 साल पहले बार्सीलोना टेनिस क्लब मे 13 साल के मेस्सी को अनुबंधित करने का सैद्धांतिक समझौता नैपकिन पर लिखा गया था। इसके तुरंत बाद क्लब के साथ औपचारिक और विस्तृत अनुबंध हुआ। बोनहम्स ने बताया कि यह नैपकिन मेस्सी के देश अर्जेंटीना के एजेंट होरासियो गैगियोली की ओर से मुहैया कराया गया था, जो इस करार का हिस्सा थे।

सात्विक-चिराग तथा तनीषा-अश्विनी थाईलैंड ओपन सेमीफाइनल में पहुंचे

बैंकॉक। सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी की अनुभवी भारतीय पुरुष युगल जोड़ी शुक्रवार को यहां थाईलैंड ओपन मे मलेशिया के जुनैदी आरिफ और रॉय किंग याप पर सीधे गेम मे जीत के साथ सेमीफाइनल मे अपनी जगह पक्की की। विश्व रैंकिंग मे तीसरे स्थान काबिज भारतीय जोड़ी ने इस सुपर 500 टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल मे आरिफ और याप पर 21-7, 21-14 से आसान जीत हासिल की।अंतिम चार चरण मे उनका सामना चीनी ताइपे के लू मिंग-चे और तांग काई-वेई की जोड़ी से होगा। तनीषा क्रास्टो और अश्विनी पोनप्पा की महिला युगल जोड़ी भी सेमीफाइनल मे पहुंचने मे सफल रही। इस जोड़ी को ली यू लिम और शेन सेउंग चान की छठी वरीयता प्राप्त दक्षिण कोरियाई जोड़ी पर 21-15 21-23 21-19 से जीत हासिल करने के लिए एक घंटे 16 मिनट तक कड़ी मेहनत करनी पड़ी। सेमीफाइनल मे भारतीयो का सामना शीर्ष वरीय थाईलैंड की जोंगकोलफान कितिथाराकुल और राविंडा प्राजोंगजई की जोड़ी की चुनौती होगी। युवा भारतीय शटलर मेईराबा लुवांग मैसनाम का शानदार सफर खत्म हो गया। उन्हे थाईलैंड के चौथे वरीय कुनलावुत वितिडसार्न से 12-21, 5-21 से हार का सामना करना पड़ा।

परवीन के निलंबन से भारत ने गंवाया ओलंपिक कोटा

57 किग्रा में फिर से होगी कोटा हासिल करने की कोशिश

भाषा। नई दिल्ली

पिछले 12 महीने में तीन बार अपना ठिकाना (वेयरअबाउट) नहीं बताने के कारण विश्व चैम्पियनशिप कांस्य पदक विजेता मुक्केबाज परवीन हुड्डा को विश्व डोपिंग निरोधक एजेंसी (वाडा) द्वारा निलंबित किए जाने के बाद भारत महिलाओं के 57 किग्रा वजन वर्ग में फिर क्वालीफाई करने की कोशिश करेगा। पिछले साल एशियाई खेलों में ओलंपिक कोटा हासिल करने वाली परवीन ने अप्रैल 2022 से मार्च 2023 के बीच अपने ठिकाने की जानकारी नहीं दी थी जो वाडा नियमों के तहत अनिवार्य है। इससे उन पर 22 महीने का निलंबन लगाया गया। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ ने एक मीडिया विज्ञप्ति में कहा, परवीन हुड्डा को ठिकाने की जानकारी नहीं देने के कारण अंतरराष्ट्रीय जांच एजेंसी (आईटीए) द्वारा 22 महीने के लिए निलंबित किया गया है। हालांकि संबंधित एजेंसियों के साथ चर्चा के बाद, परवीन की सजा की तारीख को कम करते हुए बदल दिया गया है जिससे उन्हें अब शुक्रवार से 14 महीने का निलंबन झेलना होगा। विज्ञप्ति के अनुसार, कई चर्चाओं के बाद आईटीए ने परवीन पर एक प्रतिबंध लगाने का प्रस्ताव दिया है जिसमें 22 महीने की अयोग्यता अवधि लागू करना शामिल है। इसे अब छह महीने पीछे की तारीख में कर दिया गया है। अब यह प्रतिबंध 17 मई 2024 से शुरू होकर 14 महीने का होगा। इसका मतलब है कि परवीन इस साल जुलाई-अगस्त में होने वाले पेरिस खेलों में भाग नहीं ले पाएंगी। मुक्केबाजी में, कोटा देश को नहीं बल्कि एथलीट को दिया जाता है। इस तरह भारत के ओलंपिक जाने वाले दल में तीन मुक्केबाज निकहत जरीन (50 किलो), प्रीति (54 किलो) और लवलीना बोरगोहेन (75 किलो) बची हैं। आखिरी ओलंपिक क्वालीफायर 24 मई से बैंकॉक में है। इससे भारत के पास महिलाओं के 57 किग्रा वर्ग में क्वालीफाई करने का एक और मौका होगा। लेकिन देश सिर्फ उन्हीं रिजर्व खिलाड़ियों को उतार सकता है जो 11 अप्रैल तक पंजीकृत हुई थीं।

भारत के चार मुक्केबाजों का एलोर्डा कप में कांसे से अभियान खत्म

भाषा। अस्ताना (कजाखस्तान)

भारतीय मुक्केबाजों के लिए एलोर्डा कप में शुक्रवार का दिन निराशाजनक रहा क्योंकि सभी चारों पुरुष मुक्केबाज अपने सेमीफाइनल हार गए जिससे उन्हें कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा। एफाबा सिंह सोईबाम (48 किग्रा) और अभिषेक यादव (67 किग्रा) क्रमश: कजाखस्तान के झुसुपोव असखत और मुरसाल नुरबेक से रिव्यू के बाद सेमीफाइनल में 3-4 से हार गए।

विशाल (86 किग्रा) को मौजूदा विश्व चैम्पियन कजाखस्तान के ओरलबे नुरबेक से 0-5 से पराजय मिली। गौरव चौहान भी एक अन्य कजाखस्तान के मुक्केबाज और तोक्यो ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता कमशिबेक कुनकाबाएव से 92 किग्रा से अधिक वर्ग के सेमीफाइनल में 0-5 के समान अंतर से हार गए। बृहस्पतिवार को शलाखा सिंह संसंवाल (70 किग्रा) और मोनिका (81 किग्रा से अधिक) ने अपना अभियान सेमीफाइनल में मिली हार के बाद कांस्य पदक से खत्म किया।

मनु का ओलंपिक चयन ट्रायल्स में दबदबा बरकरार

भाषा। भोपाल

ओलंपियन मनु भाकर ने शुक्रवार को यहां 10 मीटर एयर पिस्टल ओलंपिक चयन ट्रायल्स (ओएसटी) में शानदार स्कोर से एशियाई खेलों की पदक विजेता ईशा सिंह की चुनौती पस्त करते हुए पूरी तरह से दबदबा बनाए रखा। मनु ने तीसरे ओएसटी में 241.0 का शानदार स्कोर बनाकर ईशा (240.2) और रिदम सांगवान (220.3) को पछाड़ा। सुरभि राव (199.3) और पलक (179.1) क्रमश: चौथे और पांचवें स्थान पर रहीं। पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल ओएसटी टी3 फाइनल में नवीन ने 246.8 अंक का स्कोर बनाया जिससे वह मौजूदा विश्व रिकॉर्ड से 0.3 अंक से पीछे रहे। सरबजोत सिंह (242.4) ने दूसरा स्थान हासिल किया। उनके बाद अर्जुन सिंह चीमा (218.8), वरूण तोमर (197.3) और रविंदर सिंह (176.9) क्रमश: तीसरे, चौथे और पांचवें स्थान पर रहे। रमिता जिंदल महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल फाइनल्स (ट्रायल 3) ने 252.6 अंक का स्कोर बनाया जिससे वह दूसरे स्थान पर रहने वाली ओलंपियन इलावेनिल वलारिवान (252.1) से आगे रहीं। नैन्सी शूट ऑफ में इलावेनिल से पिछड़कर तीसरे स्थान पर रहीं जबकि मेहुली घोष और तिलोत्मा सेन क्रमश: चौथे और पांचवें स्थान पर रहीं। पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल फाइनल्स में श्री कार्तिक सबरी राज ने 24 शॉट के शूटआउट में बढ़त बनाई।

हमें ओलंपिक से पहले मानसिक शांति की जरूरत: महिला पहलवान

नई दिल्ली। पेरिस ओलंपिक की कोटा विजेता महिला पहलवानों ने शुक्रवार को राष्ट्रीय महासंघ से चयन ट्रायल आयोजित नहीं करने का अनुरोध करते हुए कहा कि अब से वे जो भी कदम उठाएंगें और जो कुछ भी करेंगे उसका असर ओलंपिक में भारत की पदक संभावनाओं पर पड़ेगा। सीनियर विश्व चैंपियनशिप 2021 के फाइनल में पहुंचने वाली भारत की पहली महिला पहलवान अंशु मलिक ने कहा कि खेलों की तैयारी के लिए अब उन्हें केवल मानसिक शांति की जरूरत है। अंशु को अगर पेरिस जाने का मौका मिलता है तो यह इन खेलों में इस 22 साल की खिलाड़ी के लिए यह दूसरा मौका होगा। उन्होंने पिछले ओलंपिक में 17 साल की उम्र में महिलाओं के 57 किग्रा वर्ग में कोटा हासिल करके आश्चर्यचकित किया था, लेकिन बड़े स्तर के अनुभव की कमी के कारण वह पहले दौर में ही बाहर हो गई थी। तोक्यो ओलंपिक के बाद हालांकि इस आक्रामक पहलवान ने अपने खेल में काफी सुधार किया। उन्होंने विश्व चैम्पियनशिप में ऐतिहासिक विश्व रजत जीतने के बाद एशियाई चैंपियनशिप में चार पदक जीते हैं। वह पिछले साल एशियाई चैंपियनशिप के दौरान लगी घुटने में चोट के कारण एशियाई खेलों में भाग नहीं ले पाई थीं। अंशु को डर है कि खेलों के इतने करीब उनके शरीर पर दबाव डालने से उनकी तैयारी प्रभावित हो सकती है। तोक्यो में अभ्यास कर रही अंशु ने कहा, हमें अपने हर छोटे से छोटे काम में बहुत, बहुत सावधान रहना होगा। हम यहां से अपने हर एक कदम में सतर्कता बरत रहे हैं। मैंने हाल ही में कई प्रतियोगिताओं में भाग लिया है, अंतरराष्ट्रीय स्पर्धाओं, राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं, ट्रायल्स और फिर क्वालीफायर, इसलिए मुझे ट्रायल के माध्यम से फिटनेस का आकलन करने की आवश्यकता नहीं है। ओलंपिक से पहले हमें मानसिक शांति की जरूरत है। पहले से ही दो महीने तैयारी के लिए बहुत कम समय है।

सीएमवाईके प्रिंटेक लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शोबोरी गाँगुली द्वारा 100के, मिलाप भवन, 8/ए, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष: 011-40110455 से प्रकाशित तथा बीएफएल इन्फोटेक लिमिटेड सी-9 सेक्टर-3, नोएडा-201301 (उ.प्र.) से मुद्रित। प्रधान संपादक : शोबोरी गाँगुली, स्थानीय सम्पादक: प्रदीप तिवारी।

पाठकों को सुझाव दिया जाता है कि इस अखबार के किसी भी विज्ञापन पर प्रतिक्रिया करने से पहले पूरी तरह उसके बारे में दिए गए दावों, शर्तों और तथ्यों की जांच कर लें। पायनियर ग्रुप के मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक या उसका कोई भी कर्मचारी विज्ञापनदाता द्वारा उनके किसी उत्पाद तथा सेवा हेतु किए गए किसी दावे की सच्चाई का आश्वासन या उत्तरदायित्व नहीं लेता है। ऐसे विज्ञापनों के बाद किसी आर्थिक क्षति के लिए वे जिम्मेदार भी नहीं हैं।

मुख्य व्यवसायिक कार्यालय- 201-205 द्वितीय मंज़िल, प्रताप भवन, 5,बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002, दूरभाष:011-69342500।